नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुरूप

व्याकरण सुमन

7

अशोक कुमार गुप्ता
एम० ए०

BRILLIANT

विषय-सूची

1. भाषा और व्याकरण (Language and Grammar) ... 05
2. वर्ण विचार (Phonology) ... 09
3. शब्द-विचार (Morphology) ... 14
4. विकारी शब्द : संज्ञा (Declinable Words : Noun) ... 25
5. संज्ञा : लिंग, वचन और कारक (Noun : Gender, Number and Case) ... 29
6. सर्वनाम (Pronoun) ... 38
7. विशेषण (Adjective) ... 41
8. क्रिया, काल और वाच्य (Verb, Tense and Voice) ... 46
9. अव्यय/अविकारी शब्द (Indeclinable Words) ... 55
10. सन्धि (Joining) ... 65
11. शब्द-रचना : उपसर्ग, प्रत्यय और समास (Prefix, Suffix and Compound Words) ... 70
12. वाक्य-विचार (Syntax) ... 81
13. विराम-चिह्न (Punctuation-Marks) ... 85
14. मुहावरे और लोकोक्तियाँ (Idioms and Proverbs) ... 88
15. अनुच्छेद-लेखन (Paragraph-Writing) ... 93
16. सार-लेखन (Summary-Writing) ... 95
17. संवाद-लेखन (Dialogue-Writing) ... 97
18. कहानी-लेखन (Story-Writing) ... 99
19. पत्र-लेखन (Letter-Writing) ... 103
20. निबन्ध-लेखन (Essay-Writing) ... 106
21. अपठित-बोध (Unseen Passages) ... 112

- Periodic Test : Term-1 ... 115
- Half-Yearly Test Paper ... 116
- Periodic Test : Term-2 ... 118
- Annual Test Paper ... 119

1

भाषा और व्याकरण
Language and Grammar

भाषा

मनुष्य एक चिन्तनशील प्राणी है। समाज में रहकर मनुष्य के मन में भाँति-भाँति के विचार आते हैं तथा अनेक प्रश्न उठते हैं। उन्हें दूसरों के सम्मुख रखकर वह उनका समाधान चाहता है। इस कार्य के लिए वह भाषा को माध्यम बनाता है। इस प्रकार, सामाजिक व्यवहार और सामाजिक विकास में विचारों के आदान-प्रदान का प्रमुख साधन भाषा है। अपने विचारों को प्रकट करने के अन्य साधन भी हैं। रेलवे में हरी बत्ती या हरी झंडी दिखाकर यह संकेत दिया जाता है कि गाड़ी चले। कंडक्टर बस को चलाने और रोकने के लिए अलग-अलग तरह की सीटी बजाता है। चौराहे पर खड़ा सिपाही संकेतों द्वारा वाहनों को आने-जाने के संकेत देता है और यातायात को नियन्त्रित करता है।

लेकिन संकेतों, इशारों और चिह्नों को सही अर्थ में भाषा नहीं कह सकते। इतना ही नहीं, भाषा तो भाव और विचार प्रकट करने वाले उन ध्वनि-संकेतों को कहते हैं, जो मानव-मुख से निकले हों। इस प्रकार, भाषा में वाणी और अर्थ दोनों आते हैं; इसलिए यह कहना उचित होगा कि भाषा सार्थक होती है।

संसार में संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेज़ी, उर्दू, चीनी आदि अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं।

भाषा के रूप

प्रयोग के आधार पर भाषा के दो रूप दिखाई देते हैं—

1. **मौखिक भाषा**—यह भाषा का मूल रूप है जिसमें मन के भाव बोलकर प्रकट किए जाते हैं तथा सुनकर समझे जाते हैं। भाषण और वार्तालाप भाषा के मौखिक रूप हैं।

2. **लिखित भाषा**—यह भाषा का वह रूप है जिसमें मन के भाव लिखकर प्रकट किए जाते हैं तथा पढ़कर समझे जाते हैं। भाषा के लिखित रूप की सहायता से ही आप प्रस्तुत पुस्तक को पढ़ रहे हैं।

भाषा का यह लिखित रूप बहुत महत्त्वपूर्ण है; क्योंकि—

- यह भाषा का निश्चित और स्थायी रूप है।
- यह भाषा को सुरक्षित रखता है और ज्ञान-विज्ञान को भावी पीढ़ी को हस्तान्तरित करता है।
- यह भाषा को मानकता भी प्रदान करता है।

मातृभाषा

बच्चा जिस परिवार में पलता और बड़ा होता है उस परिवार में जो भाषा बोली जाती है, वही भाषा बच्चा सबसे पहले सीखता है। यह भाषा मातृभाषा कहलाती है।

राजभाषा

14 सितम्बर, 1949 ई० को भारत की संविधान सभा ने हिन्दी को भारत की राजभाषा घोषित किया था; इसीलिए प्रतिवर्ष 14 सितम्बर को पूरे देश में हिन्दी-दिवस मनाया जाता है।

हिन्दी की उपयोगिता

हिन्दी आर्य भाषा-परिवार की सदस्या है। संस्कृत भाषा से लेकर पालि, प्राकृत, अपभ्रंश आदि सोपानों से गुज़रती हुई हिन्दी आज समूचे भारत की सम्पर्क भाषा बन गई है। हिन्दी का विकास अनेक रूपों में हो रहा है। यह सामान्य प्रयोग की भाषा, राष्ट्रभाषा, राजभाषा, साहित्यिक भाषा और अन्तर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में प्रयुक्त हो रही है। हिन्दी अपने देश में प्रथम भाषा और द्वितीय भाषा के रूप में पढ़ाई जा रही है। यह विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली तीसरी भाषा है।

हिन्दी भाषा का क्षेत्र उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, मध्य प्रदेश, बिहार, उत्तराखंड, झारखंड, छत्तीसगढ़ राज्यों तथा दिल्ली एवं अंडमान-निकोबार संघीय क्षेत्रों तक फैला हुआ है। पंजाब, महाराष्ट्र, गुजरात, पश्चिम बंगाल आदि अन्य राज्यों में यह सम्पर्क भाषा के रूप में प्रयुक्त की जाती है।

लिपि

लिखित भाषा में प्रत्येक ध्वनि को व्यक्त करने के लिए कोई-न-कोई चिह्न होता है, जिसे वर्ण कहा जाता है। भाषा में इन वर्णों की जो बनावट होती है अर्थात् इन्हें लिखने का जो ढंग है, उसे लिपि कहते हैं। हिन्दी भाषा की लिपि 'देवनागरी' है। संस्कृत, मराठी और नेपाली भाषाएँ भी देवनागरी लिपि में ही लिखी जाती हैं। इस लिपि का विकास 'ब्राह्मी लिपि' से हुआ है। यह बाईं से दाईं ओर लिखी जाती है। उर्दू भाषा की लिपि 'फ़ारसी' है। फ़ारसी लिपि दाईं से बाईं ओर लिखी जाती है। पंजाबी भाषा की लिपि 'गुरुमुखी' तथा अंग्रेज़ी भाषा की लिपि 'रोमन' है।

बोली

भाषा एक विस्तृत क्षेत्र में बोली जाती है। बोली विस्तृत भूक्षेत्र के किसी एक भाग में बोली जाती है। इसका लिखित रूप नहीं होता। बोली का रूप थोड़ी-थोड़ी दूरी पर बदल जाता है। खड़ी बोली, ब्रज, अवधी, बुन्देली, राजस्थानी, मैथिली, भोजपुरी, हरियाणवी हिन्दी भाषा की प्रमुख बोलियाँ हैं। इनमें लोक-साहित्य की रचना भी पाई जाती है।

साहित्य

ज्ञान के संचित (लिपिबद्ध) कोष को साहित्य कहते हैं। साहित्य का सामान्य अर्थ गद्य और पद्य की रचनाओं से लिया जाता है। गद्य में निबन्ध, उपन्यास, कहानी, लघुकथा, नाटक, एकांकी, पत्र आदि होते हैं। इन्हें विधा कहा जाता है। पद्य में गीत और कविताएँ होती हैं। हिन्दी-साहित्य उपर्युक्त प्रत्येक विधा में बहुत समृद्ध है।

व्याकरण

पहले भाषा प्रयोग में आती है। उसे शुद्ध रूप देने के लिए व्याकरण तैयार किया जाता है। व्याकरण के द्वारा भाषा के शुद्ध रूप का ज्ञान होता है। व्याकरण के नियमों से भाषा को शुद्ध रूप से बोलना और लिखना आ जाता है। व्याकरण के नियमों से अनुशासित भाषा ही मानक भाषा कहलाती है।

भाषा के शुद्ध रूप और उसके शुद्ध प्रयोग का ज्ञान कराने वाला शास्त्र व्याकरण कहलाता है। सामान्यतया व्याकरण में भाषा का अध्ययन तीन स्तरों पर किया जाता है—

1. वर्ण-विचार—इसमें वर्णों के रूपों का ज्ञान प्राप्त करके उनके उच्चारण और लिखने की विधि के विषय में विचार किया जाता है।

2. शब्द-विचार—इसमें शब्दों के भेद, उनकी उत्पत्ति, बनावट और परिवर्तन आदि के विषय में विचार किया जाता है। वाक्य में प्रयुक्त होने पर शब्द 'पद' का रूप ले लेता है।

3. वाक्य-विचार—इसमें वाक्यों की रचना, वाक्यों के भेद, वाक्यों का विग्रह और विराम-चिह्नों के प्रयोग पर विचार किया जाता है।

इस प्रकार, व्याकरण का ज्ञान भाषा का सुव्यवस्थित और प्रभावशाली प्रयोग करना सिखाता है। एक भाषा को जानने वाला व्यक्ति उस भाषा का व्याकरण जानकर उसे शीघ्रता और शुद्धता से पढ़ना-लिखना सीख लेता है।

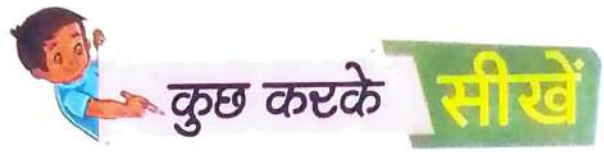

1. नीचे दिए गए उत्तरों के सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) भावों और विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम क्या कहलाता है?

(i) वाक्य ◯ (ii) स्वर ◯ (iii) भाषा ◯ (iv) व्यंजन ◯

(ख) हिन्दी भारत की है—

(i) क्षेत्रीयभाषा ◯ (ii) मातृभाषा ◯ (iii) राजभाषा ◯ (iv) देशभाषा ◯

(ग) बच्चा जो भाषा माता-पिता से सीखता है, उसे क्या कहते हैं?

(i) राजभाषा ◯ (ii) मातृभाषा ◯ (iii) प्रान्तीय भाषा ◯ (iv) राष्ट्रभाषा ◯

(घ) हिन्दी-दिवस कब मनाया जाता है?

(i) 26 जनवरी को ◯ (ii) 4 नवम्बर को ◯

(iii) 15 अगस्त को ◯ (iv) 14 सितम्बर को ◯

(ङ) भाषा का शुद्ध ज्ञान किसके द्वारा होता है?

(i) लिपि ◯ (ii) भाषा ◯ (iii) व्याकरण ◯ (iv) बोली ◯

(च) लिपि कहते हैं—

(i) लिखने के चिह्नों को ◯ (ii) भाषा के शुद्ध ज्ञान को ◯

(iii) भाषा की सबसे छोटी इकाई को ◯ (iv) बालक जो भाषा परिवार में सीखता है ◯

2. उचित शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) वार्तालाप भाषा का ..... रूप है। *(मौखिक, लिखित)*

(ख) भाषा के ..... रूप को पढ़कर दूसरों के विचार जाने जाते हैं। *(लिखित, मौखिक)*

(ग) भाषा को लिखने का ढंग ..... कहलाता है। *(साहित्य, लिपि)*

(घ) अंग्रेज़ी भाषा की लिपि ..... है। *(देवनागरी, रोमन)*

(ङ) एकत्र किया गया ज्ञान ही ..... है। *(साहित्य, व्याकरण)*

(च) भारतीय संविधान में ..... को राजभाषा घोषित किया गया है। *(अंग्रेज़ी, हिन्दी)*

3. सही कथन के सामने सही (✓) का तथा गलत कथन के सामने गलत (×) का चिह्न लगाइए—

(क) लिखित भाषा के ध्वनि-चिह्न वर्ण कहलाते हैं।

(ख) भाषा का क्षेत्रीय रूप लिपि कहलाता है।

(ग) व्याकरण के मुख्य रूप से तीन विभाग होते हैं।

(घ) हिन्दी देवनागरी लिपि में लिखी जाती है।

(ङ) भाषा का लिखित रूप उसे मानकता प्रदान करता है।

4. नीचे कुछ भाषा, लिपि और बोली के नाम दिए गए हैं। प्रत्येक के सामने उदाहरण की भाँति उपयुक्त शब्द लिखिए—

(क)	संस्कृत	भाषा	(ख)	भोजपुरी	.....
(ग)	गुरुमुखी	.....	(घ)	अंग्रेज़ी	.....
(ङ)	देवनागरी	.....	(च)	चीनी	.....
(छ)	उर्दू	.....	(ज)	जर्मन	.....
(झ)	बुन्देलखंडी	.....	(ञ)	फ़ारसी	.....

5. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

(क) भाषा किसे कहते हैं? इसके कितने रूप होते हैं?

(ख) 'मातृभाषा' से आप क्या समझते हैं?

(ग) भारत की राजभाषा का नाम बताइए। इसे राजभाषा कब घोषित किया गया?

(घ) उर्दू की लिपि 'फ़ारसी' देवनागरी लिपि से किस प्रकार भिन्न है?

(ङ) भाषा और बोली के अन्तर को स्पष्ट कीजिए।

(च) साहित्य किसे कहते हैं ? इसकी कुछ प्रमुख विधाओं के नाम लिखिए।

(छ) भाषा के अध्ययन में व्याकरण की क्या उपयोगिता है?

(ज) व्याकरण के कितने विभाग होते हैं ? इनमें किन-किन बातों पर विचार किया जाता है?

रचनात्मक गतिविधियाँ

● भारत की विभिन्न भाषाओं की लिपियाँ क्या-क्या हैं? ज्ञात कीजिए और इनकी एक तालिका बनाइए—

भाषा	लिपि
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....

भाषा	लिपि
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....

भाषा	लिपि
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....

2

वर्ण-विचार
Phonology

भाषा का उच्चारण ध्वनियों से होता है। प्रत्येक स्वीकृत ध्वनि को लिखने के लिए एक विशेष चिह्न निर्धारित किया गया है। यह विशेष चिह्न ही वर्ण कहलाता है। इस प्रकार, वर्ण भाषा की वह मूल ध्वनि है, जिसके खंड न हो सकें। वर्णों के क्रमिक और निश्चित समूह को वर्णमाला कहते हैं।

हिन्दी-वर्णमाला में निम्नलिखित वर्ण हैं—

स्वर—अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ = 11
व्यंजन—क से लेकर ह तक = 33
संयुक्त व्यंजन—क्ष, त्र, ज्ञ, श्र = 4
अयोगवाह—अँ, अं, अः = 3
अन्य—ड़, ढ़ = 2

उच्चारण की दृष्टि से भाषा के वर्णों को मुख्यत: दो भागों में बाँटा गया है—स्वर और व्यंजन।

स्वर

प्रत्येक वर्ण को बोलते समय हमारे मुख से कुछ वायु निकलती है। जिन वर्णों के उच्चारण में मुख से निकलने वाली वायु के मार्ग में कोई रुकावट पैदा नहीं होती, उन वर्णों को स्वर कहते हैं।

हिन्दी में 11 स्वर हैं—अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ।

स्वर के दो भेद किए जाते हैं—

(क) ह्रस्व स्वर—इन स्वरों के उच्चारण में सबसे कम समय लगता है। इन्हें मूल स्वर भी कहते हैं।

ये चार हैं—अ, इ, उ, ऋ।

(ख) दीर्घ स्वर—इन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वरों से दुगुना समय लगता है। ये सात हैं—आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।

स्वरों की मात्राएँ—शब्दों को लिखने में स्वर दो रूपों में प्रयुक्त होते हैं—

(क) अपने मूल रूप में; जैसे—आज, इत्र, ओस शब्दों में 'आ', 'इ', 'ओ' अपने मूल रूप में हैं।

(ख) मात्रा के रूप में; जैसे—'मीरा' शब्द में 'ई' और 'आ' स्वर मात्रा के रूप में प्रयुक्त हुए हैं (म् + ई + र् + आ)।

लिखने में व्यंजन के साथ मिलने पर स्वर के परिवर्तित रूप को मात्राएँ कहते हैं। ये मात्रा-चिह्न इस प्रकार हैं—

स्वर	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ए	ऐ	ओ	औ
मात्राएँ		ा	ि	ी	ु	ू	ृ	े	ै	ो	ौ

'अ' की मात्रा नहीं होती। सभी व्यंजन 'अ' को मिलाकर ही बोले और लिखे जाते हैं। 'अ' से रहित व्यंजन इस प्रकार लिखे जाते हैं—क्, च्, ट्, त् आदि। वर्णों के नीचे लगी इन तिरछी रेखाओं को हल् चिह्न कहते हैं।

अयोगवाह—स्वरों और व्यंजनों के अतिरिक्त हिन्दी वर्णमाला में तीन वर्ण और भी होते हैं—अं, अः, अँ।

अनुनासिक (ँ)—ऐसे स्वर जिनका उच्चारण नाक और मुँह दोनों से होता है, जैसे—अँ, आँ, इँ, ईं, उँ, ऊँ, ऋँ, एँ, ऐं, ओं, औं। इनसे निर्मित कुछ शब्द देखिए—माँ, आँख, दाँत, ऊँचा, मूँछ, कुआँ, हँसना आदि।

यदि स्वर का कोई भाग शिरोरेखा के ऊपर निकला हुआ हो या व्यंजन के ऊपर मात्रा लगी हो तो वहाँ चन्द्रबिन्दु न लगाकर केवल बिन्दु लगाते हैं, जैसे—मैंने, ईंट, मेंढ, चौंकना आदि।

अनुस्वार (ं)—यह स्वर के बाद आने वाला व्यंजन है, जिसकी ध्वनि नाक से निकलती है। यह नासिक्य व्यंजनों ङ, ञ, ण, न और म के स्थान पर प्रयोग होता है और इसका उच्चारण पूर्ववर्ती स्वर के बाद होता है, जैसे—कंकड़, अंगूर, अंगद, चंचल, कंठ आदि।

विसर्ग (ः)—अनुस्वार की तरह विसर्ग भी स्वर के बाद आता है। इसका उच्चारण 'ह' की तरह होता है। इसे व्यंजनों के आगे लगाया जाता है, जैसे—दुःख, प्रातः आदि।

इनका उल्लेख न तो स्वरों से है और न ही व्यंजनों से। ये स्वरों के साथ प्रयुक्त होने से व्यंजन भी नहीं हैं और स्वतन्त्र रूप से गति न होने के कारण ये स्वर भी नहीं कहे जाते हैं। ये योग न होने पर भी साथ रहने के कारण अयोगवाह कहलाते हैं।

व्यंजन

जिन वर्णों के उच्चारण के समय मुँह से निकलने वाली वायु के मार्ग में थोड़ी रुकावट पैदा होती है, उन्हें व्यंजन कहते हैं अर्थात् व्यंजनों का स्वर के बिना उच्चारण नहीं होता।

हिन्दी में निम्नलिखित तैंतीस व्यंजन हैं—

कवर्ग	क	ख	ग	घ	ङ	5	
चवर्ग	च	छ	ज	झ	ञ	5	
टवर्ग	ट	ठ	ड	ढ	ण	5	
तवर्ग	त	थ	द	ध	न	5	33
पवर्ग	प	फ	ब	भ	म	5	
अन्तःस्थ	य	र	ल	व		4	
ऊष्म	श	ष	स	ह		4	

व्यंजन के भेद

स्पर्श के आधार पर व्यंजन के निम्नलिखित चार भेद हैं—

(क) स्पर्श व्यंजन—इन व्यंजनों के उच्चारण में मुख से निकलने वाली वायु कंठ, तालु, मूर्धा, दन्त, ओष्ठ आदि अवयवों का स्पर्श करती हुई बाहर आती है और व्यंजनों के रूप में ध्वनि फूट पड़ती है। 'क' से लेकर 'म' तक के 25 वर्ण स्पर्श व्यंजन हैं।

(ख) अन्तःस्थ व्यंजन—इन व्यंजनों के उच्चारण में मुख से निकलने वाली वायु का मार्ग जीभ, तालु, दाँत और ओठों के परस्पर सटने से कुछ सँकरा हो जाता है, किन्तु कहीं भी पूर्ण स्पर्श नहीं होता। 'य, र, ल, व' ये चारों अन्तःस्थ व्यंजन हैं। इन्हें अर्ध स्वर भी कहते हैं।

(ग) ऊष्म व्यंजन—इनका उच्चारण एक प्रकार की रगड़ या घर्षण से उत्पन्न ऊष्म वायु से होता है।
ये चार हैं—श, ष, स, ह।

(घ) उत्क्षिप्त व्यंजन—'ड़, ढ़' ये दोनों उत्क्षिप्त व्यंजन कहलाते हैं; क्योंकि इनके उच्चारण में जीभ पीछे की ओर मुड़कर झटके के साथ सामने गिरती है।

हिन्दी में ड़ और ढ़—इन दो ध्वनियों का बड़ा महत्त्व है। ये दोनों ड तथा ढ से बिलकुल भिन्न हैं। अत: बोलते और लिखते समय इन ध्वनियों को स्पष्ट करने में सावधान रहना चाहिए। ध्यान रहे कि ड़ और ढ़ शब्दों के प्रारम्भ में कभी नहीं आते।

नीचे दिए गए शब्दों को बोलकर इन चारों ध्वनियों (ड, ड़, ढ, ढ़) के उच्चारण के अन्तर को समझिए—

ड	ड़	ढ	ढ़
डलिया	घोड़ा	ढोलक	पढ़ना
डाली	गाड़ी	ढेर	बुढ़ापा
मंडी	बड़ा	ढाल	बढ़ई
डोर	लड़ाई	ढेला	चढ़ाई

वर्णों का उच्चारण-स्थान

उच्चारण-स्थानों के आधार पर व्यंजनों को नौ वर्गों में विभाजित किया जाता है। इसको निम्नलिखित तालिका के द्वारा स्पष्ट किया गया है—

उच्चारण-स्थान	स्वर वर्ण	व्यंजन वर्ण	स्थान के अनुसार वर्णों के नाम
कंठ (गला)	अ, आ	क, ख, ग, घ, ङ, ह और विसर्ग	कंठ्य
तालु	इ, ई	च, छ, ज, झ, ञ, य, श	तालव्य
मूर्धा (मुख की छत)	ऋ	ट, ठ, ड, ढ, ण, र, ष, ड़, ढ़	मूर्धन्य
दाँत	—	त, थ, द, ध, न, ल, स	दन्त्य
ओष्ठ	उ, ऊ	प, फ, ब, भ, म	ओष्ठ्य
कंठ और तालु	ए, ऐ	—	कंठ-तालव्य
कंठ और ओष्ठ	ओ, औ	—	कंठोष्ठ्य
दाँत और ओष्ठ	—	व	दन्तोष्ठ्य
मुख और नासिका	—	ं (अनुस्वार)	नासिक्य

वर्ण संयोग

वर्णों के परस्पर संयोग को वर्ण संयोग कहते हैं। यह निम्नलिखित दो प्रकार से होता है—

1. व्यंजन और स्वर का संयोग—आप पढ़ चुके हैं कि स्वर के सहयोग के बिना किसी भी व्यंजन का उच्चारण सम्भव नहीं है, किन्तु इसे लिखना सम्भव है। स्वर के संयोग के बिना लिखे व्यंजन को हलन्त कहते हैं; जैसे—

क् (हलन्त) + अ = क, क् + ऊ = कू, क् + ए = के, क् + ओ = को आदि।

2. व्यंजन और व्यंजन का संयोग—यह निम्नलिखित दो प्रकार का होता है—

(क) संयुक्त व्यंजन—हिन्दी की वर्णमाला में चार संयुक्त व्यंजन हैं—क्ष, त्र, ज्ञ, श्र। ये संयुक्त व्यंजन इन व्यंजनों के मेल से बने हैं—

क्ष	=	क्	+	ष	=	कक्षा, क्षत्रिय	ज्ञ	=	ज्	+	ञ	=	ज्ञान, आज्ञा
त्र	=	त्	+	र	=	त्रिभुज, स्त्री	श्र	=	श्	+	र	=	श्रमिक, अश्रु

(ख) द्वित्व व्यंजन—जब एक जैसे दो व्यंजन आपस में मिलते हैं तो उन्हें द्वित्व व्यंजन कहा जाता है; जैसे—

क् + क = क्क, त् + त = त्त (त्त), च् + च = च्च; पक्का, सत्ता (सत्ता), बच्चा आदि।

संयोग—दो व्यंजनों के मिलने पर जहाँ द्वित्व नहीं होता, वहाँ संयोग होता है; जैसे—

ग्	+	घ	=	ग्घ	बग्घी
च्	+	छ	=	च्छ	मच्छर
त्	+	थ	=	त्थ	जत्था

संयुक्त 'र' के तीन रूप प्रचलित हैं— र्, ्र और ्र

- जब 'र' व्यंजन किसी पूर्ण व्यंजन से मिलता है तो उसका रूप र् होता है और वह अपने साथ जुड़ने वाले अगले वर्ण के ऊपर लगता है; जैसे—

  र् + क = र्क   कर्क (कर्‌क)   र् + य = र्य   आर्य (आर्‌य)
- जब किसी आधे व्यंजन में पूरा 'र' मिलता है तो उसके दो रूप होते हैं; जैसे—्र और ्र।

  ग् + र = ग्र   ग्राम (ग्‌राम)   ट् + र = ट्र   ट्राम (ट्‌राम)

वर्ण-विच्छेद

जब किसी शब्द में प्रयुक्त वर्णों को अलग-अलग किया जाता है तो उस क्रिया को वर्ण-विच्छेद कहते हैं; जैसे—

हिमालय = ह् + इ + म् + आ + ल् + अ + य् + अ

देहरादून = द् + ए + ह् + अ + र् + आ + द् + ऊ + न् + अ

आशीर्वाद = आ + श् + ई + र् + व् + आ + द् + अ

कादम्बिनी = क् + आ + द् + अ + म् + ब् + इ + न् + ई

कुछ करके सीखें

1. नीचे दिए गए उत्तरों के सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) भाषा की सबसे छोटी इकाई को कहते हैं—

(i) वर्ण ◯ (ii) स्वर ◯ (iii) व्यंजन ◯ (iv) शब्द ◯

(ख) उन ध्वनियों को क्या कहते हैं जिनके उच्चारण में वायु मुँह और नाक दोनों से निकलती है?

(i) विसर्ग (ii) अनुनासिक (iii) आगत (iv) व्यंजन

(ग) अन्त:स्थ व्यंजन हैं—

(i) च, छ, ज, झ (ii) क, ख, ग, घ (iii) श, ष, स, ह (iv) य, र, ल, व

(घ) संयुक्त वर्ण 'क्ष' में मिले हैं—

(i) क + ष् (ii) क + ष (iii) क् + ष (iv) क् + ष्

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) वर्णों के क्रमिक और निश्चित समूह को ..... कहते हैं।

(ख) स्पर्श व्यंजनों की संख्या ..... है।

(ग) ..... व्यंजनों के उच्चारण में स्वर-तन्त्रियों में कम्पन होता है।

(घ) स्वर के संयोग के बिना लिखे व्यंजन को ..... कहते हैं।

3. नीचे लिखे शब्दों को उनमें लगे चिह्नों के आधार पर अलग-अलग करके लिखिए—

विद्वान हंस प्रात: गंगा दु:ख उद्धार

विसर्ग — .....

अनुस्वार — .....

हलन्त — .....

4. नीचे लिखे शब्दों में से संयुक्त व्यंजनों और द्वित्व व्यंजनों को अलग-अलग करके लिखिए—

ज्ञान सच्चा क्षण पल्लवी मित्र मक्का उद्यम

संयुक्त व्यंजन — .....

द्वित्व व्यंजन — .....

5. वर्णों के योग से शब्द बनाइए—

(क) अ + ध् + य् + आ + प् + अ + क् + अ .....

(ख) भ् + आ + र् + अ + त् + ई + य् + अ .....

(ग) व् + य् + अं + ज् + अ + न् + अ .....

(घ) च् + इ + त् + र् + अ .....

6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

(क) वर्ण किसे कहते हैं? हिन्दी-वर्णमाला में कितने प्रकार के वर्ण होते हैं?

(ख) स्वर किसे कहते हैं? ह्रस्व स्वर और दीर्घ स्वर में क्या अन्तर है?

(ग) कौन-से वर्ण अयोगवाह हैं?

(घ) उच्चारण-स्थानों के आधार पर व्यंजनों को कितने वर्गों में विभाजित किया जाता है?

3

शब्द-विचार
Morphology

ध्वनियों के मेल से बने हुए सार्थक वर्ण-समूह को शब्द कहते हैं। जिसके पास जितने शब्द होंगे और जो इन शब्दों का जितनी प्रकार से प्रयोग करना सीख जाएगा, उसकी भाषा उतनी ही समृद्ध और प्रभावशाली हो जाएगी। ऐसा व्यक्ति चाहे बातचीत कर रहा हो, भाषण दे रहा हो अथवा पत्र या लेख आदि लिख रहा हो, शब्द-सम्पदा उसके लगातार काम आएगी।

प्रत्येक शब्द जब वाक्य में प्रयोग होता है तब वह स्वतन्त्र नहीं रहता, बल्कि व्याकरण के नियमों में बँध जाता है और उसका रूप भी बदल जाता है। तब वह शब्द न रहकर 'पद' बन जाता है। शब्दकोष में शब्द होते हैं, पद नहीं।

शब्द के भेद

शब्द के भेदों का वर्गीकरण निम्नलिखित पाँच आधारों पर किया जाता है—

1. वाक्य में प्रयोग के आधार पर शब्द के भेद

वाक्य में प्रयोग के आधार पर शब्द के दो भेद होते हैं—(क) सार्थक शब्द तथा (ख) निरर्थक शब्द।

(क) सार्थक शब्द—जिन शब्दों का कोई निश्चित अर्थ होता है, उन्हें सार्थक शब्द कहते हैं; जैसे—विद्यालय, घर, पुस्तक आदि।

(ख) निरर्थक शब्द—जिन शब्दों का कोई अर्थ नहीं होता है, उन्हें निरर्थक शब्द कहते हैं; जैसे—वंखा, वाम, चूं, वोटी, वानी आदि। कभी-कभी वाक्यों में इनका प्रयोग सार्थक शब्दों की तरह किया जाता है और तब वे कुछ अर्थ प्रकट करने लगते हैं; जैसे—पंखा-वंखा मत चलाओ अर्थात् पंखा मत चलाओ। अरे भई, उसे पानी-वानी पिला दो।

2. रचना या बनावट के आधार पर शब्द के भेद

रचना या बनावट के आधार पर शब्द के तीन भेद किए जाते हैं— (क) रूढ़, (ख) यौगिक तथा (ग) योगरूढ़।

(क) रूढ़ शब्द—रूढ़ का अर्थ है—'प्रसिद्ध'। जो शब्द परम्परा से ही किसी विशेष अर्थ के लिए प्रसिद्ध हो गए हैं और जिन्हें खंडित करने पर कोई अर्थ नहीं निकलता, वे रूढ़ शब्द कहलाते हैं; जैसे—घोड़ा, आदमी, हाथी, घर, हाथ, पैर, पानी आदि।

यदि इन शब्दों के टुकड़े या इनका सन्धि-विच्छेद किया जाए, तो इनके अलग-अलग खंडों का कोई अर्थ नहीं निकलता; जैसे—

घो + ड़ा (घोड़ा), आद + मी अथवा आ + दमी (आदमी), हा + थी (हाथी), घ + र (घर), हा + थ (हाथ) आदि का कोई अर्थ नहीं निकलता।

(ख) यौगिक शब्द—एक से अधिक शब्दों अथवा शब्दांशों से बने ऐसे शब्द जिनके खंडों के भी कुछ परम्परागत अर्थ होते हैं, यौगिक शब्द कहलाते हैं; जैसे—

हिमालय (हिम + आलय)—हिम का अर्थ है बर्फ़, आलय का अर्थ है घर अर्थात् बर्फ़ का घर।

यौगिक शब्दो की रचना निम्नलिखित विधियो से भी हो सकती है—

प्रत्यय जोड़कर, जैसे— समाज + इक = सामाजिक आदि।

उपसर्ग जोड़कर, जैसे— निर् + मल = निर्मल आदि।

सन्धि द्वारा, जैसे— रमा + ईश = रमेश आदि।

समास द्वारा, जैसे— देश + भक्ति = देश के लिए भक्ति आदि।

(ग) योगरूढ़ शब्द—एकाधिक शब्दो के मेल से बने ऐसे शब्द जिनके प्रयोग उनके खंडो के अर्थ से भिन्न विशिष्ट अर्थ मे प्रसिद्ध हो जाते है, योगरूढ़ शब्द कहलाते है; जैसे—पंकज (पंक + ज = कीचड़ से जन्मा अर्थात् कमल)

इसी प्रकार, पीताम्बर — श्रीकृष्ण (पीले वस्त्र धारण करने वाले)

नीलकंठ — शिवजी (नीले कंठ वाले)

दशानन — रावण (दस सिर वाला)

3. उत्पत्ति या स्रोत के आधार पर शब्द के भेद

कोई शब्द हमारी भाषा मे कहाँ से आया अर्थात् उसका स्रोत या उद्गम कहाँ है, इस आधार पर किया गया शब्दो का वर्गीकरण इसी वर्ग के अन्तर्गत आता है। इस आधार पर प्रयुक्त शब्दो को पाँच भागो मे बाँटा जाता है—(क) तत्सम, (ख) तद्भव, (ग) देशज, (घ) विदेशी तथा (ङ) संकर।

(क) तत्सम—तत्सम (तत् + सम) का अर्थ है—'उसके समान' अर्थात् किसी भाषा के मूल शब्दो का ज्यो-का-त्यो उपयोग। हिन्दी भाषा मे जो शब्द संस्कृत भाषा से बिना किसी परिवर्तन के ज्यो-के-त्यो प्रयुक्त होते है, उन्हे तत्सम शब्द कहा जाता है; जैसे—सूर्य, मित्र, नासिका, गृह, पत्र, हस्त, कर्ण, दन्त, दुग्ध, ओष्ठ, अश्रु आदि।

(ख) तद्भव—तद्भव (तत् + भव) का अर्थ है—'उसी से उत्पन्न' अर्थात् मूल भाषा के तत्सम शब्दो का परिवर्तित रूप जो दूसरी भाषा मे प्रयुक्त होता है, तद्भव कहलाता है। हिन्दी मे तद्भव शब्द संस्कृत के तत्सम शब्दो से बदलकर बने है, जैसे—सूरज, मीत, नाक, घर, पत्ता, हाथ, कान, दाँत, दूध, ओठ, आँसू आदि।

कुछ तत्सम शब्दो के तद्भव रूप इस प्रकार है—

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
घट	घड़ा	मिथ्या	झूठ
मुख	मुँह	पुत्र	बेटा
नव	नया	मयूर	मोर
पक्षी	पंछी	अन्धकार	अँधेरा
शत	सौ	उच्च	ऊँचा
दिवस	दिन	ज्येष्ठ	जेठ
भ्राता	भाई	मस्तक	माथा

(ग) देशज—देशज का अर्थ है—'देश मे उत्पन्न' अर्थात् क्षेत्रीय बोलियो के प्रभावस्वरूप उत्पन्न। देशज शब्द किसी क्षेत्र-विशेष से हिन्दी मे आ गए है। इनका जन्म और विकास 'सामान्य जन-समाज' के बीच होता है। इनकी मूल भाषा के सम्बन्ध मे कुछ भी नही कहा जा सकता। उदाहरण के लिए—पगड़ी, डिबिया, खड़ाऊँ, झुग्गी, फावड़ा आदि।

(घ) विदेशी—हिन्दी पर अनेक भाषाओं का प्रभाव है। यों तो प्राय: प्रत्येक भाषा विदेशी शब्दों को ग्रहण करके समृद्ध होती है, किन्तु किसी भाषा में विदेशी शब्द कम होते हैं और किसी में अधिक। हिन्दी में जिन विदेशी भाषाओं के शब्दों की बहुलता है, उनमें अरबी, फ़ारसी और अंग्रेज़ी मुख्य हैं; तुर्की, पुर्तगाली आदि कम। उदाहरण के लिए—

अंग्रेज़ी से—स्टेशन, स्कूल, रेडियो, रेल, कोट, पैंट, पेंट, बोर्ड, मोटर, कार, बस, रेल, ड्राइवर, पेंसिल, पेन आदि।

फ़ारसी से—कागज़, दुकान, फ़ौज, बादाम, खर्च, ज़मीन, अचार, आसमान, नमक, दरवाज़ा, शराब, शादी आदि।

अरबी से—अदालत, ज़ुर्माना, ताकत, वकील, हवा, सुबह, तारीख, आदमी, औरत, फ़कीर, मकान आदि।

तुर्की से—कैंची, चाकू, तोप, कुरता, लाश, चेचक, चम्मच, कालीन आदि।

पुर्तगाली से—कमरा, गमला, तौलिया, काजू, गोदाम आदि।

फ्रांसीसी से—अंग्रेज़, कारतूस, कूपन आदि।

चीनी से—चाय, लीची आदि।

(ङ) संकर शब्द—दो भाषाओं के शब्दों के मेल से बने शब्द संकर शब्द कहलाते हैं; जैसे—

रेलगाड़ी	रेल	(अंग्रेज़ी)	+	गाड़ी	(हिन्दी)
वर्षगाँठ	वर्ष	(संस्कृत)	+	गाँठ	(हिन्दी)
घड़ीसाज़	घड़ी	(हिन्दी)	+	साज़	(अरबी)
नुकसानदायक	नुकसान	(फ़ारसी)	+	दायक	(हिन्दी)

4. व्याकरणिक प्रकार्य के आधार पर शब्द के भेद

इस आधार पर शब्द दो प्रकार के होते हैं—(क) विकारी शब्द तथा (ख) अविकारी शब्द।

(क) विकारी शब्द—जिन शब्दों के रूप में लिंग, वचन, कारक, पुरुष तथा काल आदि के कारण विकार (परिवर्तन) आ जाता है, उन्हें विकारी शब्द कहते हैं; जैसे—काला, काली, काले आदि।

विकारी शब्दों के निम्नलिखित चार भेद होते हैं—

1. संज्ञा 2. सर्वनाम 3. विशेषण 4. क्रिया

(ख) अविकारी शब्द—जिन शब्दों के रूप में किसी भी कारण से विकार (परिवर्तन) नहीं आता, वे अविकारी शब्द कहलाते हैं; जैसे—1. वह धीरे-धीरे चल रहा है। 2. वे धीरे-धीरे चल रहे हैं। 3. मैं धीरे-धीरे चल रहा हूँ। इन तीनों वाक्यों में 'धीरे-धीरे' शब्द में कोई विकार नहीं आ पाया; इसलिए यह 'अविकारी' है।

अविकारी शब्द के निम्नलिखित चार भेद हैं—

1. क्रियाविशेषण 2. सम्बन्धबोधक 3. समुच्चयबोधक 4. विस्मयादिबोधक

ध्यान रखिए—विकारी तथा अविकारी शब्द तथा उनके भेदों के विषय में आप विस्तार से अगले अध्यायों में पढ़ेंगे।

5. अर्थ के आधार पर शब्द के भेद

अर्थ के आधार पर शब्द अनेक प्रकार के होते हैं—(क) पर्यायवाची शब्द, (ख) विलोम शब्द, (ग) अनेकार्थी शब्द, (घ) अनेक शब्दों/शब्द-समूह के लिए एक शब्द, (ङ) समरूप भिन्नार्थक शब्द।

(क) पर्यायवाची शब्द (Synonyms)

समान अर्थ वाले शब्द एक-दूसरे के पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं। सभी पर्यायवाची शब्दों के अर्थ मिलते-जुलते तो होते हैं, किन्तु हर स्थिति में एक शब्द के स्थान पर उसके प्रत्येक पर्यायवाची शब्द का प्रयोग नहीं किया जा सकता; जैसे—'हवा' और 'पवन' एक-दूसरे के पर्यायवाची हैं, किन्तु सामान्य गति से चलने वाली वायु को हवा और तेज़ गति से चलने वाली वायु को पवन कहते हैं।

नीचे कुछ शब्द और उनके पर्याय दिए गए हैं। उन्हें पढ़िए, समझिए तथा याद कीजिए—

1. अन्धकार — अँधेरा, तम, तिमिर, ध्वान्त।
2. अग्नि — अनल, पावक, आग, ज्वाला, हुताशन।
3. अतिथि — मेहमान, पाहुना, अभ्यागत, गृहागत।
4. अमृत — सोम, सुधा, पीयूष, अमिय, सुरभोग।
5. अश्व — घोड़ा, घोटक, हय, वाजि, तुरंग।
6. आँख — नयन, चक्षु, लोचन, नेत्र, दृग।
7. आकाश — नभ, व्योम, गगन, आसमान, शून्य।
8. ईश्वर — प्रभु, परमात्मा, भगवान, परमेश्वर, जगदीश।
9. उपवन — उद्यान, वाटिका, फुलवारी, बगीचा, बाग।
10. कमल — जलज, वारिज, सरसिज, पंकज, नीरज।
11. कृष्ण — केशव, माधव, गोपाल, मोहन, मुरारी।
12. गंगा — देवनदी, सुरसरि, जाह्नवी, भागीरथी, मन्दाकिनी।
13. घर — गृह, सदन, भवन, आलय, निकेतन।
14. चन्द्रमा — सुधांशु, हिमांशु, राकेश, शशि, इन्दु।
15. तालाब — ताल, सरोवर, जलाशय, सर, तड़ाग।
16. दिन — दिवस, वासर, अह्न, वार, दिवा।
17. धरती — भू, भूमि, धरा, पृथ्वी, वसुन्धरा।
18. नदी — सरिता, सलिला, सरित, तटिनी, कल्लोलिनी।
19. पक्षी — विहग, विहंग, नभचर, खग, अण्डज।
20. पहाड़ — नग, शैल, पर्वत, अचल, भूधर।
21. पवन — हवा, वात, अनिल, मारुत, समीर।
22. पुष्प — फूल, सुमन, प्रसून, कुसुम, गुल।
23. बादल — नीरद, वारिद, पयोद, मेघ, घन।
24. रात्रि — राका, निशा, रजनी, यामिनी, विभावरी।
25. समुद्र — जलधि, नीरधि, वारिधि, पयोधि, सागर।
26. सूर्य — भानु, रवि, दिनेश, भास्कर, दिनकर।

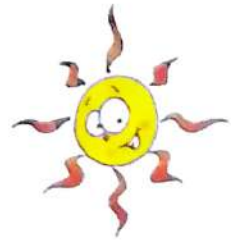

(ख) विलोम शब्द (Antonyms)

जो शब्द एक-दूसरे का विपरीत अर्थात् उलटा अर्थ प्रकट करते हैं, उन्हें विलोम शब्द कहते हैं। इन शब्दों के विपरीतार्थक अथवा विरुद्धार्थी शब्द भी कहा जाता है; जैसे—प्रातः काल—सांय काल।

यहाँ कुछ शब्द और उनके विलोम दिए गए हैं। इन्हें पढ़िए और याद कीजिए—

अमृत	विष	अर्थ	अनर्थ
अनुकूल	प्रतिकूल	अनुज	अग्रज
आदान	प्रदान	आयात	निर्यात
आकाश	पाताल	आहार	निराहार
उन्नति	अवनति	उदय	अस्त
उपकार	अपकार	कीर्ति	अपकीर्ति
उत्थान	पतन	कायर	वीर
कृतज्ञ	कृतघ्न	गुरु	शिष्य, लघु
छल	निश्छल	घृणा	प्रेम
दयालु	निर्दय	दुर्लभ	सुलभ
निर्मल	मलिन	निरक्षर	साक्षर
निरर्थक	सार्थक	नूतन	पुरातन
नवीन	प्राचीन	न्याय	अन्याय
पुरस्कार	दण्ड	प्रत्यक्ष	परोक्ष
मितव्यय	अपव्यय	मान	अपमान
मित्र	शत्रु	मूक	वाचाल
राग	द्वेष	रात्रि	दिवस
विजय	पराजय	वरदान	अभिशाप
सजीव	निर्जीव	सगुण	निर्गुण
स्थूल	सूक्ष्म	हर्ष	शोक
सक्रिय	निष्क्रिय	प्रेम	घृणा

(ग) अनेकार्थी शब्द (Polynyms)

'अनेकार्थी' शब्द दो शब्दों के मेल से बना है—अनेक + अर्थी। इसका अभिप्राय ऐसे शब्द से है जिसके एक से अधिक अर्थ होते हैं। इस प्रकार, एक से अधिक अर्थ रखने वाले शब्द अनेकार्थी शब्द कहलाते हैं; जैसे—'अम्बर' और 'कर'। इन शब्दों को अनेक अर्थों में प्रयोग किया जा सकता है। अम्बर का अर्थ है—आकाश, वस्त्र और बादल। कर का अर्थ है—हाथ, किरण और हाथी की सूँड़। अतः 'अम्बर' और 'कर' अनेकार्थी शब्द हैं।

अनेकार्थी शब्द के कुछ उदाहरण नीचे दिए गए हैं। इन्हें ध्यानपूर्वक पढ़िए, समझिए तथा प्रयोग में लाइए—

	शब्द		अर्थ
1.	अंक	—	निशान, गिनती की संख्या, नाटक का अध्याय, गोद।
2.	अंग	—	शरीर, शरीर का कोई हिस्सा, अंश, शाखा।
3.	अर्थ	—	धन, अभिप्राय, निमित्त, ऐश्वर्य।
4.	उत्तर	—	एक दिशा (उत्तर), हल, जवाब।
5.	कल	—	मधुर ध्वनि, सुन्दर, मशीन, चैन, बीता हुआ दिन, अगला दिन।
6.	कुल	—	संघ, परिवार, वंश, सम्पूर्ण।
7.	पद	—	ओहदा, छन्द का चरण, गीत, शब्द।
8.	पत्र	—	पंख, चिट्ठी, पत्ता, समाचार-पत्र।
9.	फल	—	परिणाम, लाभ, भाले की नोक, मेवा।
10.	मान	—	सम्मान, घमंड, माप।
11.	वर	—	दूल्हा, श्रेष्ठ, वरदान, वरण करने योग्य।
12.	वर्ण	—	रंग, अक्षर, चार वर्ण (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) रूप, जाति।
13.	विधि	—	विधाता, भाग्य, तरीका, कानून, व्यवस्था।
14.	सुधा	—	अमृत, दूध, जल, गंगा, मधु, पुष्प-रस।
15.	सूत	—	धागा, बढ़ई, सारथी।

(घ) अनेक शब्दों के लिए एक शब्द (One Word Substitution)

कुछ शब्दों का प्रयोग शब्द-समूहों या वाक्यांशों के स्थान पर किया जाता है। ऐसे शब्दों को अनेक शब्दों के लिए एक शब्द के नाम से जाना जाता है। ऐसा करने से वाक्य के अर्थ में तो कोई परिवर्तन नहीं होता लेकिन वह संक्षिप्त अवश्य हो जाता है; जैसे—

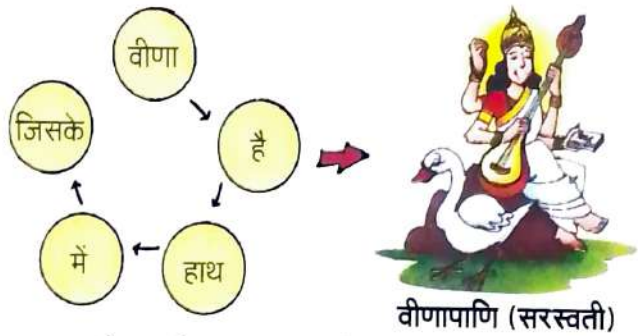

वीणापाणि (सरस्वती)

नीचे ऐसे ही कुछ शब्द-समूह और उनके स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्द दिए गए हैं। इन्हें पढ़िए, समझिए और याद कीजिए—

	अनेक शब्द	एक शब्द
1.	जिसे जाना न जा सके	अज्ञेय
2.	जिसका आदि न हो	अनादि

3.	जिसके समान कोई दूसरा न हो	अद्वितीय
4.	जो थोड़ा बोलता हो	मितभाषी/अल्पभाषी
5.	जिसका अन्त न हो	अनन्त
6.	जिसे छोड़ा न जा सके	अनिवार्य
7.	जो गिना न जा सके	अगणित/अनगिनत
8.	बिना विचारे किया गया विश्वास	अन्धविश्वास
9.	जिसका इलाज न हो सके	असाध्य/लाइलाज
10.	जिस पर विश्वास न किया जा सके	अविश्वसनीय
11.	जिसके पास कुछ न हो	अकिंचन
12.	जो कभी न मरे	अमर
13.	जो कभी बूढ़ा न हो	अजर
14.	जो जीता न जा सके	अजेय
15.	जिसकी तुलना न की जा सके	अतुलनीय
16.	जिसकी कोई उपमा न हो	अनुपम
17.	जो फ़िज़ूलखर्च करे	अपव्ययी
18.	दोपहर के बाद का समय	अपराह्न
19.	जैसा पहले घटित न हुआ हो	अभूतपूर्व
20.	जो विधि या कानून के विरुद्ध हो	अवैध
21.	मरते दम तक	आमरण
22.	जिसे ऊपर कहा गया हो	उपर्युक्त
23.	सूर्योदय से पहले का समय	उषाकाल
24.	जो अपनी इच्छा पर निर्भर हो	ऐच्छिक
25.	इतिहास से संबंधित	ऐतिहासिक
26.	जो आँखों के सामने न हो	अप्रत्यक्ष
27.	किए गए उपकार को न मानने वाला	कृतघ्न
28.	गगन चूमने वाला	गगनचुंबी
29.	जहाँ जाना सम्भव न हो	अगम
30.	उपकार को मानने वाला	कृतज्ञ
31.	जानने की इच्छा रखने वाला	जिज्ञासु
32.	जिसका कोई आकार न हो	निराकार
33.	सदा रहने वाला	शाश्वत, स्थायी
34.	गोद लिया हुआ पुत्र	दत्तक
35.	पच्चीस वर्ष पूरे होने पर होने वाला उत्सव	रजतजयन्ती
36.	युगों से चला आने वाला	सनातन
37.	शिव को मानने वाला (उपासक)	शैव
38.	जो बहुत बोलता हो	वाचाल
39.	क्षण में नष्ट होने वाला	क्षणभंगुर
40.	दूसरे के काम में दखल देना	हस्तक्षेप

(ङ) समरूप भिन्नार्थक शब्द (Similar Words with Different Meanings)

ऐसे शब्द जो सुनने में एक जैसे प्रतीत हों, परन्तु अर्थ की दृष्टि से सर्वथा भिन्न हों, समरूप भिन्नार्थक या समोच्चारित भिन्नार्थक शब्द कहे जाते हैं। ऐसे शब्दों में अक्षर या मात्रा का सूक्ष्म अन्तर होता है। अत: इनके प्रयोग में पर्याप्त सावधानी बरतनी चाहिए।

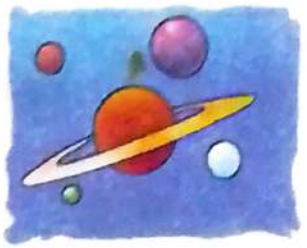

ग्रह = नक्षत्र

गृह = घर

सुत = बेटा

सूत = सारथी

नीचे इसी प्रकार के कुछ शब्द दिए गए हैं। इन्हें पढ़िए और याद कीजिए—

	शब्द	अर्थ		शब्द	अर्थ
1.	अंक	गोद	2.	तर्रण	सूर्य
	अंग	शरीर का भाग		तरणी	नौका
3.	अपेक्षा	इच्छा, तुलना में	4.	उपयुक्त	ठीक
	उपेक्षा	निरादर, अवहेलना		उपर्युक्त	ऊपर कहा गया
5.	अवधि	सीमा	6.	काट	काटना
	अवधी	एक भाषा का नाम		काठ	लकड़ी
7.	अवलम्ब	सहारा	8.	तरंग	लहर
	अविलम्ब	शीघ्र		तुरंग	घोड़ा
9.	चिर	पुराना	10.	दशा	हालत
	चीर	वस्त्र		दिशा	तरफ़

1. नीचे दिए गए उत्तरों के सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) जिन शब्दों के रूप में परिवर्तन होता है, वे शब्द कहलाते हैं—

(i) विकारी ◯ (ii) अविकारी ◯ (iii) यौगिक ◯ (iv) निरर्थक ◯

(ख) 'नीलकंठ' शब्द है—

(i) विदेशी ◯ (ii) संकर ◯ (iii) योगरूढ़ ◯ (iv) तत्सम ◯

(ग) 'रेलगाड़ी' शब्द है—

(i) तत्सम (ii) तद्भव (iii) देशज (iv) संकर

(घ) 'आँख' शब्द का पर्यायवाची शब्द है—

(i) चक्षु (ii) पलक (iii) अख (iv) भौंह

(ङ) 'सेवक' का विलोम शब्द है—

(i) राजा (ii) स्वामी (iii) ईश्वर (iv) प्रभु

(च) उपेक्षा शब्द का अर्थ है—

(i) तुलना (ii) निरादर (iii) आदर (iv) समान

(छ) 'कुल' शब्द के अनेकार्थी शब्द हैं—

(i) वंश, सम्पूर्ण (ii) समूह, संघ (iii) मूल, धन (iv) जोड़, माप

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति उपयुक्त शब्दों द्वारा कीजिए—

(क) जिन शब्दों के अर्थ में समानता हो, उन्हें ..... कहते हैं।

(ख) एकाधिक अर्थों वाले शब्द ..... कहलाते हैं।

(ग) एकाधिक शब्दों के मेल से बने ऐसे शब्द ..... कहलाते हैं, जिनके प्रयोग उनके खंडों के अर्थ से भिन्न विशिष्ट अर्थ में प्रसिद्ध हो जाते हैं।

(घ) जिन शब्दों के रूप में लिंग, वचन, कारक आदि के कारण परिवर्तन आ जाता है, उन्हें ..... शब्द कहते हैं।

3. निम्नलिखित तत्सम शब्दों के तद्भव रूप लिखिए—

(क)	अश्रु	आँसू	(ख)	गृह	घर
(ग)	सूर्य	.....	(घ)	मयूर	.....
(ङ)	दन्त	.....	(च)	ज्येष्ठ	.....
(छ)	कर्ण	.....	(ज)	पक्षी	.....
(झ)	मुख	.....	(ञ)	दुग्ध	.....

4. निम्नलिखित शब्दों में से तत्सम, तद्भव, देशज तथा विदेशी शब्दों को चुनकर अलग-अलग लिखिए—

अग्नि, अर्ध, स्कूल, गाँव, कोयल, अँगूठा, आम, हिसाब, जिह्वा, शुक, खिचड़ी, ईख, मरीज, मूरख, गृह, अखबार, ऊँट, ट्रेन, स्वप्न, दन्त, कान, कार्य, सिपाही, चन्द्र, उल्लू।

तत्सम	तद्भव	देशज	विदेशी
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....

5. कोष्ठकों में दिए गए शब्दों के उपयुक्त पर्यायवाची रूप द्वारा रिक्त स्थान भरिए—

(क) रंग-बिरंगे फूलों से ..... महक रहा है। *(उद्यान)*

(ख) दमकल गाड़ी ने दुकानों में लगी ..... पर काबू पा लिया। *(हुताशन)*

(ग) आज बाल ..... मनाया जा रहा है। *(वार)*

(घ) राणा प्रताप के ..... का नाम चेतक था। *(तुरंग)*

(ङ) ..... ग्रहण के अवसर पर लोगों ने पूजा-पाठ किया। *(दिनकर)*

6. जो शब्द अपने वर्ग का पर्यायवाची शब्द नहीं है, उसे अलग कीजिए—

(क) बेटी — पुत्री, सुता, तनय, आत्मजा। .....

(ख) मित्र — मती, दोस्त, सहचर, सखा। .....

(ग) जल — नीर, सलिल, अनिल, पानी। .....

(घ) सूर्य — दिनेश, रवि, मारुत, सूरज। .....

(ङ) अतिथि — मेहमान, आगंतुक, मनुष्य, पाहुना। .....

(च) फूल — प्रसून, चमन, कुसुम, पुष्प। .....

7. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए—

(क) नवीन .....

(ख) उन्नति .....

(ग) आयात .....

(घ) मूक .....

(ङ) राग .....

(च) अनुज .....

(छ) सगुण .....

(ज) प्रत्यक्ष .....

(झ) सक्रिय .....

(ञ) कृतज्ञ .....

8. निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त रेखांकित शब्द के उपयुक्त विलोम द्वारा रिक्त स्थान भरिए—

(क) भाषा के द्वारा ही विचारों का <u>आदान</u> और ..... सम्भव है।

(ख) आज विज्ञान के ..... भी <u>अभिशाप</u> सिद्ध हो रहे हैं।

(ग) यदि शब्दों का उचित प्रयोग न किया जाए तो ..... का <u>अनर्थ</u> हो जाता है।

(घ) <u>उधार</u> प्रेम की कैंची है, इसलिए जो कुछ खरीदना हो ..... खरीदो।

(ङ) भारत के धर्मों की ..... में भी <u>एकता</u> विद्यमान है।

9. निम्नलिखित अनेकार्थी शब्दों के विभिन्न अर्थ लिखिए—

(क) अंक ....

(ख) अपेक्षा ....

(ग) कुल ....

(घ) पद ....

10 निम्नलिखित रंगीन शब्दों के स्थान पर नीचे दिए गए शब्दों में से उपयुक्त शब्द का चुनाव करके वाक्यों को पुनः लिखिए

पट पत्ते गोद वस्त्र अंक

(क) पेड़ से पत्र गिर रहे हैं।
(ख) भगवान विष्णु पीत कपड़ा धारण करते हैं।
(ग) वैष्णो देवी मन्दिर के दरवाज़े बन्द थे।
(घ) राहुल अपनी माँ की अंक में सो गया।
(ङ) वार्षिक परीक्षा में कुल कितने नम्बर आए।

11. निम्नलिखित वाक्यांशों/अनेक शब्दों के लिए उपयुक्त शब्द के सामने सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) सूर्योदय से पहले का समय	प्रातःकाल	उषाकाल
(ख) जो कभी न मरे	अमर	अजर
(ग) दोपहर के बाद का समय	पूर्वाह्न	अपराह्न
(घ) सदा रहने वाला	सनातन	शाश्वत
(ङ) उपकार को मानने वाला	कृतज्ञ	कृतघ्न
(च) समान अवस्था का	सहपाठी	समवयस्क

12. निम्नलिखित शब्द-समूहों के लिए एक-एक शब्द लिखिए—
(क) जिसे छोड़ा न जा सके
(ख) जिसका इलाज न हो सके
(ग) जो फ़िज़ूलखर्च करे
(घ) दूसरे के काम में दखल देना
(ङ) गोद लिया हुआ पुत्र

13. कोष्ठक से उपयुक्त शब्दों को चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—
(क) समुद्र में .... तेजी से उठ रही थी। (तुरंग-तरंग)
(ख) तुमसे यह .... नहीं थी कि तुम मेरी इतनी .... करोगे। (अपेक्षा/उपेक्षा)
(ग) तुलसीदास ने 'श्रीरामचरितमानस' .... भाषा में लिखी है। (अवधी/अवधि)
(घ) दुःशासन ने द्रौपदी के .... हरण का प्रयास किया। (चिर/चीर)
(ङ) रोगी की .... ठीक नहीं है। (दिशा/दशा)

14. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—
(क) 'शब्द' से आप क्या समझते हैं? इनका वर्गीकरण किन आधारों पर किया जा सकता है?
(ख) रचना के आधार पर शब्द के कितने भेद हैं? उदाहरण के साथ लिखिए।
(ग) व्याकरणिक प्रकार्य के आधार पर शब्द कितने प्रकार के होते हैं?
(घ) अर्थ के आधार पर शब्द कितने प्रकार के होते हैं? उनके नाम लिखिए।
(ङ) विकारी और अविकारी शब्द में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

4

विकारी शब्द : संज्ञा
Declinable Words : Noun

प्रत्येक व्यक्ति, प्राणी (पशु-पक्षी), वस्तु, स्थान, समूह, भाव, गुण और अवस्था का अपना-अपना नाम होता है। व्याकरण में नाम को ही संज्ञा कहते हैं। उदाहरणार्थ—

- राहुल विजय से मिलने आया।
- मेज़ पर घड़ी रखी है।
- उन दोनों में गहरी मित्रता थी।
- कोयल गाती है।
- आज मैदान में बड़ी भीड़ होगी।
- बचपन लौटकर नहीं आता।

ऊपर के वाक्यों में रंगीन शब्दों पर ध्यान दीजिए। ये क्रमश: लड़कों (व्यक्तियों), पशु-पक्षियों, वस्तुओं, स्थान, लोगों के समूह, भाव और अवस्था के नाम हैं। इस प्रकार, ये सभी रंगीन शब्द संज्ञा हैं।

संज्ञा के भेद

संज्ञा के तीन प्रमुख भेद निम्नलिखित हैं—

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा, 2. जातिवाचक संज्ञा तथा 3. भाववाचक संज्ञा।

हिन्दी के कुछ विद्वान् अंग्रेज़ी-व्याकरण के अनुसार, संज्ञा के दो और भेद मानते हैं—द्रव्यवाचक संज्ञा और समूहवाचक संज्ञा। वस्तुत: ये दोनों जातिवाचक संज्ञा के उपभेद हैं। फिर भी यहाँ इनके बारे में अलग से चर्चा करना उचित है।

1. **व्यक्तिवाचक संज्ञा**—जिन संज्ञा शब्दों से किसी विशेष व्यक्ति, विशेष प्राणी, विशेष स्थान और विशेष वस्तु आदि के नाम का बोध होता है, उन्हें व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं। उदाहरणार्थ—

विशेष व्यक्तियों के नाम—जवाहरलाल नेहरू, राहुल, सचिन आदि।

विशेष स्थानों के नाम—लखनऊ, अक्षरधाम आदि।

विशेष वस्तुओं के नाम—श्रीमद्भगवद्गीता, बाइबिल आदि।

विशेष प्राणियों के नाम—चेतक (घोड़ा), ऐरावत (हाथी) आदि।

2. **जातिवाचक संज्ञा**—जिन संज्ञा शब्दों से एक ही प्रकार के प्राणियों, वस्तुओं, स्थानों आदि का बोध होता है, उन्हें जातिवाचक संज्ञा कहते हैं। उदाहरणार्थ—

प्राणी—मछली, गधा, चींटी, लड़का, औरत, घोड़ा, हाथी आदि।

वस्तु—सोना, तेल, चप्पल, आटा, कार, कमीज़, फल आदि।

स्थान—बाज़ार, शहर, गली, देश, पर्वत, नदी, विद्यालय आदि।

3. **भाववाचक संज्ञा**—जिन संज्ञा शब्दों से किसी प्राणी या वस्तु की स्थिति, भाव और दशा आदि का बोध होता है, उन्हें भाववाचक संज्ञा कहते हैं। उदाहरणार्थ—मानवता, हिंसा, चिकित्सा, भाईचारा, मित्रता, सत्य, मिथ्या, बचपन, बुढ़ापा, खुशी आदि।

4. द्रव्यवाचक संज्ञा—जिन संज्ञा शब्दों से किसी द्रव्य या पदार्थ का बोध हो, उन्हें द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं। उदाहरणार्थ— गेहूँ-चावल से विभिन्न प्रकार के पकवान बनाए जाते हैं। दूध से दही, पनीर, मिठाई आदि वस्तुएँ बनाई जाती हैं। सोना-चाँदी से आभूषण इत्यादि बनाए जाते हैं। लकड़ी, मिट्टी तेल, कोयला, पेट्रोल भी द्रव्य है। ये द्रव्य गण नहीं होते।

5. समूहवाचक संज्ञा—जिन संज्ञा शब्दों से किसी समूह या समुदाय का बोध हो, उन्हें समूहवाचक संज्ञा कहते हैं। उदाहरणार्थ—अंगूरों का गुच्छा, अनाज का ढेर, ताश की गड्डी, मधुमक्खियों का छत्ता, धनिये की गड्डी, कक्षा, भीड़, पुलिस, जत्था, टुकड़ी, दल आदि समूहवाचक संज्ञा के उदाहरण हैं।

व्यक्तिवाचक संज्ञा का जातिवाचक संज्ञा के रूप में प्रयोग

कई बार व्यक्तिवाचक संज्ञा का जातिवाचक संज्ञा के रूप में प्रयोग किया जाता है। उदाहरणार्थ—

- भारत देश में कभी दधीचियों की कमी नहीं रही।
- भारत को स्वतन्त्रता भगतसिंहों ने दिलवाई।

दधीचि और भगतसिंह व्यक्तिवाचक संज्ञा हैं, किन्तु यहाँ इनका प्रयोग जातिवाचक संज्ञा के रूप में हुआ है। ये व्यक्तियों के नाम से उनके विशेष गुणों का पता चलता है।

भाववाचक संज्ञा की रचना

कुछ भाववाचक संज्ञाएँ मूल भाववाचक संज्ञा शब्द होते हैं; जैसे—सत्य, घृणा, मिथ्या, बुद्धि, सुख, दुःख आदि किन्तु कुछ भाववाचक संज्ञाएँ अन्य शब्दों से भी बनाई जा सकती हैं; जैसे—मित्र से मित्रता, बच्चा से बचपन आदि।

1. जातिवाचक संज्ञा से भाववाचक संज्ञा

जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
बच्चा	बचपन	पशु	पशुत्व
मित्र	मित्रता	सज्जन	सज्जनता
लड़का	लड़कपन	दानव	दानवता
स्त्री	स्त्रीत्व	मानव	मानवता
युवा	यौवन	राष्ट्र	राष्ट्रीयता
बूढ़ा	बुढ़ापा	भक्त	भक्ति
जवान	जवानी	घर	घरेलू
हिन्दू	हिन्दुत्व	प्रभु	प्रभुता

2. सर्वनाम से भाववाचक संज्ञा

सर्वनाम	भाववाचक संज्ञा	सर्वनाम	भाववाचक संज्ञा
अहं	अहंकार	अपना	अपनापन
आप	आपा	पराया	परायापन
सर्व	सर्वस्व	निज	निजत्व/निजता
मम	ममत्व/ममता	स्व	स्वत्व

3. विशेषण से भाववाचक संज्ञा

विशेषण	भाववाचक संज्ञा	विशेषण	भाववाचक संज्ञा
अकेला	अकेलापन	उचित	औचित्य
अधिक	अधिकता/आधिक्य	एक	एकता/एकत्व
भला	भलाई	अनिवार्य	अनिवार्यता
मीठा	मिठास	आलसी	आलस्य
हरा	हरियाली	कठोर	कठोरता
सुन्दर	सुन्दरता/सौन्दर्य	अनुकूल	अनुकूलता
लाल	लालिमा	नम्र	नम्रता
कड़वा	कड़वाहट	गम्भीर	गम्भीरता
उदार	उदारता	योग्य	योग्यता
स्वतन्त्र	स्वतन्त्रता	खट्टा	खटास
परतन्त्र	परतन्त्रा	अतिशय	अतिशयता

4. क्रिया से भाववाचक संज्ञा

क्रिया	भाववाचक संज्ञा	क्रिया	भाववाचक संज्ञा
गिरना	गिरावट	पूजना	पूजा
सुनना	सुनवाई	लिखना	लिखाई
थकना	थकावट	बोलना	बोल
खोदना	खुदाई	मिलना	मेल
कहना	कथन	चढ़ना	चढ़ाई
पढ़ना	पढ़ाई	बुनना	बुनावट
हारना	हार	खेलना	खेल
जीतना	जीत	लड़ना	लड़ाई
चलना	चाल	हँसना	हँसी
उड़ना	उड़ान	खोजना	खोज
झुकना	झुकाव	घबराना	घबराहट
सिलना	सिलाई	बचाना	बचाव
चुनना	चुनाव	धोना	धुलाई
झगड़ना	झगड़ा	कमाना	कमाई
जागना	जागरण	देखना	दिखावा

5. अव्यय से भाववाचक संज्ञा

अव्यय	भाववाचक संज्ञा	अव्यय	भाववाचक संज्ञा
शीघ्र	शीघ्रता	मना	मनाही
निकट	निकटता	जल्दी	जल्दबाजी
समीप	समीपता/सामीप्य	नीचे	निचाई
धिक्	धिक्कार	तीव्र	तीव्रता
तेज	तेजी	बहुत	बहुतायता
दूर	दूरी	देर	देरी

कुछ करके सीखें

1. नीचे दिए गए उत्तरों के सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) जो संज्ञा शब्द भाव या अवस्था का बोध कराते हैं, क्या कहलाते हैं?

(i) जातिवाचक (ii) भाववाचक (iii) व्यक्तिवाचक

(ख) 'जयचन्दों की आज भी कोई कमी नहीं है।' इस वाक्य में 'जयचन्द' संज्ञा का कौन-सा भेद है?

(i) व्यक्तिवाचक (ii) जातिवाचक (iii) भाववाचक

(ग) जातिवाचक संज्ञा के तीन शब्द हैं—

(i) बचपन, जवानी, मिठास (ii) घोड़ा, शहर, किताब

(iii) श्रीरामचरितमानस, गांधी जी, गुजरात

(घ) भाववाचक संज्ञा के तीन शब्द हैं—

(i) कुरसी, कलम, मेज़ (ii) मानवता, भक्ति, पशुत्व (iii) विभीषण, रावण, मेघनाद

2. वाक्यों में आए संज्ञा शब्दों को रेखांकित करके उनके भेदों के नाम लिखिए—

(क) पंडित जी ने पूजा की। ....

(ख) खुशी नाचती है। ....

(ग) वहाँ पर भीड़ जमा थी। ....

(घ) मेरे पास सोने की अँगूठी है। ....

(ङ) वह बचपन में नटखट था। ....

(च) वह नैनीताल घूमने गया था। ....

3. कोष्ठक में दिए गए शब्दों से भाववाचक संज्ञाएँ बनाकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) जनवरी में बहुत .... पड़ती है। (

(ख) वर्तमान समय में नैतिक मूल्यों में .... आई है। (

(ग) रामू की .... पर सब हँस पड़े।

(घ) .... से काम लेने पर यह .... इतना न बढ़ता। (समझदार, झ

(ङ) किसी से .... मत करो। (

(च) वाणी की .... सबसे .... करा देती है। (मीठा

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

(क) संज्ञा किसे कहते हैं? ये कितने प्रकार की होती हैं? प्रत्येक का सोदाहरण परिचय दीजिए।

(ख) व्यक्तिवाचक संज्ञा कब जातिवाचक संज्ञा बन जाती है?

(ग) अंग्रेज़ी-व्याकरण के प्रभाव से संज्ञा के कौन-से दो और भेद माने गए हैं?

5

संज्ञा : लिंग, वचन और कारक
Noun : Gender, Number and Case

लिंग

लिंग शब्द का अर्थ होता है—'चिह्न'। चिह्न का अभिप्राय पहचान से है अर्थात् शब्द के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि यह पुरुष जाति का है या स्त्री जाति का, उसे व्याकरण में लिंग कहते हैं।

लिंग के भेद

हिन्दी में लिंग के दो भेद होते हैं—1. पुल्लिग तथा 2. स्त्रीलिंग।

1. **पुल्लिग**—जिन संज्ञा शब्दों से प्राणी, वस्तु अथवा भाव के पुरुष होने का बोध होता है, उन्हें पुल्लिग कहते हैं; जैसे—राजा, हाथी, लड़का, सूर्य, सोना, गायक, मोर आदि।

2. **स्त्रीलिंग**—जिन संज्ञा शब्दों से प्राणी, वस्तु अथवा भाव के स्त्री होने का बोध होता है, उन्हें स्त्रीलिंग कहते हैं; जैसे—रानी, हथिनी, लड़की, पृथ्वी, चाँदी, गायिका, मोरनी आदि।

पुल्लिंग की पहचान

नीचे लिखे शब्द सदा पुल्लिग होते हैं—

1. **देशों के नाम**—भारत, कनाडा, चीन, जापान, कोरिया, कम्बोडिया आदि। (अपवाद—श्रीलंका)
2. **पर्वतों के नाम**—कैलाश, हिमालय, आल्प्स, विन्ध्याचल आदि।
3. **ग्रहों के नाम**—मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि आदि। (अपवाद—पृथ्वी)
4. **वृक्षों के नाम**—आम, नीम, कीकर, अशोक, पीपल, बरगद आदि।
5. **अनाजों के नाम**—गेहूँ, चावल, चना, बाजरा आदि। (अपवाद—मक्का, ज्वार आदि।)
6. **फलों के नाम**—अमरूद, अनार, सेब, केला, आम, सन्तरा आदि। (अपवाद—लीची)
7. **समयसूचक का नाम**—सेकंड, मिनट, घंटा, दिन, सप्ताह, माह, वर्ष आदि। (अपवाद—रात, दोपहर, शाम, सन्ध्या, साँझ)
8. **दिनों के नाम**—सोमवार, बुधवार, शुक्रवार, रविवार आदि।
9. **महीनों के नाम**—सभी भारतीय महीनों के नाम—चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ आदि तथा अंग्रेज़ी महीनों के नाम—मार्च, अप्रैल, जून, अगस्त, सितम्बर, अक्टूबर, नवम्बर, दिसम्बर आदि।
10. **धातुओं के नाम**—सोना, लोहा, ताँबा आदि (अपवाद—चाँदी)
11. **द्रव्य पदार्थों के नाम**—घी, तेल, दूध, मक्खन, शर्बत आदि। (अपवाद—लस्सी, चाय आदि)
12. **शरीर के कुछ अंग**—सिर, मुँह, नाक, कान, ओंठ, दाँत, गला, हाथ, पैर आदि।

स्त्रीलिंग की पहचान

नीचे लिखे शब्द सदा स्त्रीलिंग होते हैं—

1. **नदियों के नाम**—सरस्वती, कृष्णा, गंगा, कावेरी, सतलुज, व्यास आदि।
2. **भाषाओं के नाम**—हिन्दी, मराठी, कोंकणी, तमिल, पंजाबी, चीनी, जापानी आदि।
3. **लिपियों के नाम**—देवनागरी, गुरुमुखी, रोमन आदि।
4. **बोलियों के नाम**—भोजपुरी, हरियाणवी, पहाड़ी आदि।
5. **नक्षत्रों के नाम**—रोहिणी, अश्विनी आदि।
6. **तिथियों के नाम**—पूर्णिमा, एकादशी, प्रथमा, सप्तमी आदि।
7. **शरीर के कुछ अंगों के नाम**—जीभ, मूँछ, गरदन, अंगुलियाँ, कमर, टाँग आदि।
8. **अन्त में आ, ई, उ आने वाले शब्द**—माला, कृपा, छात्रा, दया, गरीबी, अमीरी, मज़दूरी, रोटी, मिट्टी, के मृत्यु, वायु आदि।
9. **अन्त में आहट, आवट, आई, आरी, इया, त, री आदि प्रत्यय हों—**

आहट — घबराहट, चिकनाहट, मुस्कराहट आदि। आवट — थकावट, सजावट, मिलावट आदि।
आई — लड़ाई, कमाई, भलाई, मिठाई आदि। आरी — तैयारी, प्यारी, क्यारी, चिंगारी आदि।
इया — पुड़िया, गुड़िया, बुढ़िया, चिड़िया आदि। त — ताकत, चपत, खपत, चाहत आदि।
री — परी, कबूतरी, जरी आदि।

10. **अन्त में त, ह, आ आने वाले अरबी-फ़ारसी के शब्द—**

त — दौलत, रिश्वत, अदालत आदि। ह — फतह, पनाह, राह, चाह, सुबह आदि।
आ — दुआ, बुआ, सदा, मज़ा आदि।

लिंग-परिवर्तन : पुल्लिंग से स्त्रीलिंग बनाने के नियम

(1) 'अ' को 'आ' में बदलकर—

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
छात्र	छात्रा	शिष्य	शिष्या	भवदीय	भवदीया
बाल	बाला	महोदय	महोदया	वृद्ध	वृद्धा

(2) 'अ' को 'ई' में बदलकर—

ब्राह्मण	ब्राह्मणी	पुत्र	पुत्री	देव	देवी
गोप	गोपी	पहाड़	पहाड़ी	दास	दासी

(3) 'आ' को 'ई' में बदलकर—

दादा	दादी	लड़का	लड़की	बकरा	बकरी
रस्सा	रस्सी	मौसा	मौसी	चाचा	चाची

(4) 'आ' को 'इया' में बदलकर—

बूढ़ा	बुढ़िया	गुड्डा	गुड़िया	बन्दर	बन्दरिया
चूहा	चुहिया	डिब्बा	डिबिया	कुत्ता	कुतिया

(5) 'अक' को 'इका' में बदलकर—

बालक	बालिका	अध्यापक	अध्यापिका	सेवक	सेविका
लेखक	लेखिका	नायक	नायिका	गायक	गायिका

(6) अन्त में 'आनी' लगाकर—

जेठ	जेठानी	नौकर	नौकरानी	सेठ	सेठानी
देवर	देवरानी	चौधरी	चौधरानी	भव	भवानी

(7) अन्त में 'नी' लगाकर—

भील	भीलनी	शेर	शेरनी	यशस्वी	यशस्विनी
ऊँट	ऊँटनी	चोर	चोरनी	मोर	मोरनी

(8) अन्त में 'आइन' लगाकर—

चौधरी	चौधराइन	लाला	ललाइन	ठाकुर	ठकुराइन
पण्डित	पण्डिताइन	नाई	नाइन	बाबू	बबुआइन

(9) अन्त में 'इन' लगाकर—

बाघ	बाघिन	नाग	नागिन	तेली	तेलिन
पुजारी	पुजारिन	धोबी	धोबिन	कुम्हार	कुम्हारिन

(10) 'वान' को 'वती' में बदलकर—

गुणवान	गुणवती	भगवान	भगवती	पुत्रवान	पुत्रवती
बलवान	बलवती	धनवान	धनवती	सत्यवान	सत्यवती

(11) 'मान' को 'मती' में बदलकर—

श्रीमान	श्रीमती	आयुष्मान	आयुष्मती	बुद्धिमान	बुद्धिमती

(12) 'ता' को 'त्री' में बदलकर—

निर्माता	निर्मात्री	नेता	नेत्री	कर्ता	कर्त्री
धाता	धात्री	अभिनेता	अभिनेत्री	प्रबन्धकर्ता	प्रबन्धकर्त्री

(13) शब्द से पूर्व 'नर' या 'मादा' लगाकर—

नर खरगोश	मादा खरगोश	नर भालू	मादा भालू	नर मक्खी	मादा मक्खी

(14) भिन्न-भिन्न रूप वाले स्त्रीलिंग-पुल्लिंग शब्द—

भाई	बहन	पिता	माता	साधु	साध्वी
विद्वान्	विदुषी	राजा	रानी	कवि	कवयित्री

वचन

संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्दों के जिस रूप से उसके एक या अनेक होने का बोध हो, उसे वचन कहते हैं। उदाहरणार्थ—● घोड़ा दौड़ रहा है। ● पेड़ पर तोते बैठे हैं।

इन वाक्यों के घोड़ा, पेड़ और तोते शब्दों से एक या एक से अधिक होने का पता चलता है। इस प्रकार, शब्दों के अलग-अलग रूपों से उनके एक या अनेक होने का बोध होता है।

वचन के भेद

हिन्दी में वचन के निम्नलिखित दो भेद होते हैं—

1. **एकवचन**—जिस संज्ञा या सर्वनाम शब्द से उसके एक होने का बोध होता है, उसे एकवचन कहते हैं; जैसे—

● राहुल ने खिलौना खरीदा। ● निकिता ने सन्तरा खाया।

2. **बहुवचन**—जिस संज्ञा या सर्वनाम शब्द से एक से अधिक होने का बोध होता है, उसे बहुवचन कहते हैं; जैसे—

● मेज़ पर खिलौने रखे हैं। ● मैंने सन्तरे खरीदे।

सदा एकवचन रहने वाले शब्द—कुछ संज्ञा शब्दों का प्रयोग सदा एकवचन में ही होता है; जैसे—पानी, भीड़, सोना और चाय, पीतल, लोहा, चाँदी, जनता, घी, पेट्रोल, तेल, दल, झुंड, टोली, आकाश, वर्षा, सत्य या सच, झूठ या मिथ्या, बालू, सौन्दर्य आदि।

सदा बहुवचन रहने वाले शब्द—कुछ संज्ञा शब्दों का प्रयोग सदा बहुवचन में ही होता है; जैसे—बाल, आँसू, हस्ताक्षर और लोग, दर्शन, समाचार, प्राण आदि।

एकवचन शब्दों का बहुवचन में प्रयोग—कई बार एकवचन शब्दों का प्रयोग बहुवचन के रूप में किया जाता है; जैसे—

1. आदर और सम्मान के लिए—

● पिता जी बाज़ार से लौट आए। ● मन्त्री जी भाषण दे रहे हैं।

इन वाक्यों में रंगीन शब्द पिता जी, और मन्त्री जी शब्द एकवचन हैं। आदर और सम्मान प्रकट करने के लिए वाक्य में इन शब्दों का प्रयोग बहुवचन में किया गया है।

2. अभिमान प्रकट करने के लिए—

● "हम देश के लिए अपने प्राण दे देंगे।"—
नौजवान बोला।

● "हमने अपहरणकर्ता से व्यापारी को छुड़ा लिया।"—
पुलिस आयुक्त ने कहा।

इन वाक्यों में 'मैं', 'मैंने' के स्थान पर 'हम' और 'हमने' बहुवचन शब्द अभिमान प्रकट करने के लिए आए हैं।

ध्यान रखिए

1. मामा, नाना, चाचा, काका, दादा आदि सम्बन्धसूचक संज्ञाओं का प्रयोग दोनों वचनों में एकसमान होता है; जैसे—

● मेरे बड़े चाचा जी आए हैं। (एकवचन में, किन्तु सम्मानार्थक बहुवचन का प्रयोग)

● मेरे दोनों चाचा कानपुर में रहते हैं। (बहुवचन में)

2. जिन शब्दों के अन्त में जाति, सेना या दल प्रयुक्त होते हैं, उनका प्रयोग सदा एकवचन में किया जाता है; जैसे—

- शत्रु सेना ने भारतीय सैनिकों के सम्मुख आत्मसमर्पण कर दिया।
- पर्वतारोहियों का दल तेज़ी से आगे बढ़ा।

3. गाय-भैंस, भेड़-बकरी जैसे शब्द-युग्मों का बहुवचन बनाने के लिए केवल अन्तिम शब्द में ही परिवर्तन किया जाता है; जैसे—

- भेड़-बकरियाँ मैदान में घास चर रही हैं।
- गाय-भैंसें तालाब में नहा रही हैं।

वचन परिवर्तन के नियम

1. आकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के अन्त में 'एँ' लगाकर—

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
बालिका	बालिकाएँ	माता	माताएँ	माला	मालाएँ
कथा	कथाएँ	सभा	सभाएँ	भाषा	भाषाएँ

2. अकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के अन्त में 'अ' के स्थान पर 'एँ' लगाकर—

दीवार	दीवारें	मूँछ	मूँछें	सलवार	सलवारें
पतंग	पतंगें	कमीज़	कमीज़ें	छड़	छड़ें
आँख	आँखें	परात	परातें	राह	राहें

3. इकारान्त और ईकारान्त शब्दों के अन्त में 'याँ' जोड़कर तथा 'ई' को 'इ' कर दिया जाता है—

टोपी	टोपियाँ	देवी	देवियाँ	मछली	मछलियाँ
मुर्गी	मुर्गियाँ	परी	परियाँ	सन्धि	सन्धियाँ

4. 'इया' अन्त वाले स्त्रीलिंग शब्दों में अन्तिम 'या' को 'याँ' बनाकर—

गुड़िया	गुड़ियाँ	बुढ़िया	बुढ़ियाँ	डिबिया	डिबियाँ
चिड़िया	चिड़ियाँ	खटिया	खटियाँ	चुहिया	चुहियाँ

5. आकारान्त पुल्लिग शब्दों में अन्तिम 'आ' के स्थान पर 'ए' लगाकर—

झंडा	झंडे	पंखा	पंखे	लोटा	लोटे
तोता	तोते	अंडा	अंडे	कौआ	कौए

6. उकारान्त, ऊकारान्त और औकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के साथ 'एँ' जोड़कर तथा 'उ' का 'ऊ' को 'उ' कर देते हैं—

वस्तु	वस्तुएँ	ऋतु	ऋतुएँ	धेनु	धेनुएँ
वधू	वधुएँ	बहू	बहुएँ	गौ	गौएँ

7. कुछ शब्दों के साथ गण, जन, वृन्द और वर्ग लगाकर—

कवि	कविगण	शिक्षक	शिक्षकगण	गुरु	गुरुजन
प्रजा	प्रजाजन	मुनि	मुनिजन	साधु	साधुजन
पक्षी	पक्षीवृन्द	छात्र	छात्रवृन्द	कर्मचारी	कर्मचारीवर्ग

कारक

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका सम्बन्ध वाक्य के अन्य शब्दों के साथ जाना जाता है, उसे कारक कहते हैं। कारक की स्पष्टता के लिए संज्ञा या सर्वनाम के साथ जो शब्द प्रयुक्त होते हैं, वे कारक-चिह्न कहलाते हैं। ये कारक-चिह्न ही कारकों की विभक्तियाँ या परसर्ग कहलाते हैं। इनसे वाक्य पूर्ण एवं स्पष्ट हो जाते हैं।

कारक के भेद

संज्ञा या सर्वनाम शब्दों का क्रिया के साथ सम्बन्ध अनेक रूपों में होता है। इसके आधार पर कारक भी भिन्न-भिन्न होते हैं। कारक के आठ भेद हैं। कारक-भेद के अनुसार कारकों के चिह्न निश्चित हैं। इन चिह्नों को विभक्तियाँ कहते हैं।

क्र०सं०	कारक	विभक्ति	उदाहरण
1.	कर्ता	ने	निक्की ने गीत सुनाया।
2.	कर्म	को	महिमा नमिता को फ़ोन मिला रही है।
3.	करण	से, के द्वारा	पवन कैमरे से फ़ोटो खींच रहा है।
4.	सम्प्रदान	के लिए, को	शिवानी ईशान के लिए खिलौना लाई।
5.	अपादान	से (अलग होना)	शोभा बस से उतरी।
6.	सम्बन्ध	का, के, की, रा, रे, री	इस कूलर का पंखा खराब है।
7.	अधिकरण	पर, में	आज सड़क पर कोई रिक्शा नहीं चल रहा है।
			दूध में कुछ पड़ा है।
8.	सम्बोधन	हे, अरे आदि	हे प्रभु! हम पर दया कीजिए।

1. कर्ता कारक

शब्द के जिस रूप से क्रिया करने वाले का पता चलता है, उसे कर्ता कारक कहते हैं। इसकी विभक्ति 'ने' है; जैसे—ममता ने सब्ज़ी काटी। सब्ज़ी काटने की क्रिया को करने वाला कौन है ?—'ममता'; अतः यहाँ 'ममता' शब्द कर्ता कारक है।

वर्तमान और भविष्यत्काल में कर्ता के साथ 'ने' विभक्ति-चिह्न का लोप हो जाता है; जैसे—

- सलमा गाना गाती है।
- बच्चा दूध पियेगा।

प्रथम वाक्य की क्रिया वर्तमानकाल में तथा दूसरे वाक्य की क्रिया भविष्यत्काल में है; अतः सलमा और बच्चा कर्ता शब्दों के साथ 'ने' का प्रयोग नहीं किया गया है।

2. कर्म कारक

वाक्य में क्रिया का फल कर्ता के अतिरिक्त जिन संज्ञा व सर्वनाम शब्दों पर पड़ता है, उसे कर्म कारक कहते हैं। इसका 'विभक्ति-चिह्न 'को' है; जैसे—माँ ने बच्चे को दूध पिलाया।

यहाँ 'पिलाया' क्रिया का प्रभाव बच्चे पर पड़ रहा है; अतः 'बच्चे को' में कर्म कारक है।

हिन्दी में कर्म कारक का प्रयोग 'को' के बिना भी किया जाता है; जैसे—कविता निबन्ध लिखती है।

3. करण कारक

जिस साधन या माध्यम द्वारा कर्ता क्रिया करता है, उससे करण कारक होता है। इसका विभक्ति-चिह्न 'से' अथवा 'के द्वारा' है; जैसे—

● रेखा ने पेंसिल से चित्र बनाया। ● यह पत्र कर्मचारी के द्वारा भिजवा दो। ● उनके हाथ सन्देश भिजवाएँ।

उपर्युक्त वाक्यों में 'पेंसिल से', 'कर्मचारी के द्वारा' और 'हाथ' करण कारक है। पहले दो वाक्यों में 'से' और 'के द्वारा' विभक्तियों का प्रयोग हुआ है। तीसरे वाक्य में विभक्ति का लोप है।

4. सम्प्रदान कारक

कर्ता द्वारा जिसके लिए कुछ किया जाए या जिसे कुछ दिया जाए, उससे सम्प्रदान कारक होता है। इसका विभक्ति-चिह्न 'के लिए' या 'को' है; जैसे— ● विकास गुरु जी के लिए उपहार लाया। ● निक्की ने भूखे को खाना दिया।

विकास किसके लिए उपहार लाया ?—'गुरु जी के लिए'। इसमें सम्प्रदान कारक है। इसी प्रकार, दूसरे वाक्य में खाना किसको दिया ? 'भूखे को'। इसमें भी सम्प्रदान कारक है।

कर्म कारक और सम्प्रदान कारक में अन्तर— दोनों कारकों में 'को' परसर्ग का प्रयोग होता है। सम्प्रदान कारक में देने का भाव मुख्य होता है, जबकि कर्म कारक में क्रिया के प्रभाव का भाव होता है; जैसे—

● दादी जी ने प्यासे को पानी दिया। *(सम्प्रदान कारक)* ● अध्यापक जी ने रवि को बुलाया। *(कर्म कारक)*

5. अपादान कारक

जिस पद से किसी व्यक्ति या वस्तु के अलग होने का भाव प्रकट होता है, उसे अपादान कारक कहते हैं। इसका विभक्ति-चिह्न 'से' है; जैसे—वह घोड़े से गिर गया। वह कहाँ से गिरा ?—'घोड़े से'।

'घोड़े से' पद में अपादान कारक है।

करण कारक और अपादान कारक में अन्तर—इन दोनों कारकों में 'से' का प्रयोग किया जाता है; अत: इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि जहाँ साधन के अर्थ में 'से' का प्रयोग हो, वहाँ करण कारक होता है तथा जहाँ पृथकता का बोध हो, वहाँ अपादान कारक होता है; जैसे—

● मैं कलम से लिखता हूँ। *(करण कारक)* ● वह घर से आया है। *(अपादान कारक)*

6. सम्बन्ध कारक

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से एक वस्तु का दूसरी वस्तु के साथ सम्बन्ध ज्ञात हो, उसे सम्बन्ध कारक कहते हैं। इसके विभक्ति-चिह्न 'का, के, की; रा, रे, री; ना, ने, नी' हैं; जैसे—

● मैं मदन के घर नहीं जाऊँगा। ● मेरी बहन परीक्षा में प्रथम आई है। ● तुम्हारी पुस्तक कौन-सी है ?

उपर्युक्त वाक्यों में 'मदन' का सम्बन्ध घर से, 'मेरी' का बहन से तथा 'तुम्हारी' का पुस्तक से है; इसलिए मदन के, मेरी, तुम्हारी पदों में सम्बन्ध कारक है।

7. अधिकरण कारक

संज्ञा के जिस रूप से क्रिया के आधार पर समय और स्थान आदि का पता चलता है, उसे अधिकरण कारक कहते हैं। इसके विभक्ति-चिह्न 'में' तथा 'पर' हैं; जैसे— ● बन्दर छत पर बैठा है। ● अंजलि घर में है।

बन्दर कहाँ बैठा है ?—'छत पर'; अत: इस पद में अधिकरण कारक है। इसी प्रकार 'घर में' भी अधिकरण कारक है।

8. सम्बोधन कारक

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से किसी को सम्बोधित किया जाए, वहाँ सम्बोधन कारक होता है। इनका सम्
वाक्य में न तो क्रिया से और न ही दूसरे शब्दों से होता है, वरन् वे अपना स्वतन्त्र अस्तित्व रखते हैं। इसके विभक्ति-
'हे', 'रे' आदि हैं; जैसे— ● अरे ईशान! तुम कब आए? ● बच्चो! समय अमूल्य है।

किसे सम्बोधित किया गया है?—अरे ईशान!, बच्चो! को; अत: ये पद सम्बोधन कारक हैं।

कुछ करके सीखें

1. नीचे दिए गए उत्तरों के सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) जिन शब्दों से स्त्री व पुरुष जाति का बोध हो उसे कहते हैं—
(i) संज्ञा ◯ (ii) वचन ◯ (iii) लिंग ◯ (iv) कारक

(ख) इन शब्दों में पुल्लिग शब्द है—
(i) गंगा ◯ (ii) कृष्णा ◯ (iii) समुद्र ◯ (iv) यमुना

(ग) वचन की पहचान किसके द्वारा सरलता से की जाती है?
(i) संज्ञा के ◯ (ii) क्रिया के ◯ (iii) सर्वनाम के ◯ (iv) विशेषण के

(घ) 'अपादान' कारक की विभक्ति है—
(i) से ◯ (ii) में ◯ (iii) पर ◯ (iv) को

(ङ) 'माँ ने भूखे को खाना खिलाया' रेखांकित अंश में कारक है—
(i) कर्ता ◯ (ii) सम्प्रदान ◯ (iii) कर्म ◯ (iv) करण

2. रेखांकित शब्दों के लिंग बताइए—

(क) मन्त्री महोदय हमेशा नीति की बात करते हैं। .....
(ख) मेरे पास कोई सम्पत्ति नहीं है। .....
(ग) कौआ बहुत प्यासा था। .....
(घ) हम कनाडा जाएँगे। .....
(ङ) राहुल सबसे गुणवान है। .....

3. रेखांकित शब्द का लिंग बदलकर रिक्त स्थान भरिए—

(क) ब्राह्मण ने ..... से भोजन देने को कहा।
(ख) भारत की माटी ने अनेक वीरों और ..... को जन्म दिया है।
(ग) सेठ ने ..... को आवाज़ देकर बुलाया।
(घ) रेनू का ..... पढ़ा-लिखा है लेकिन देवरानी नहीं।
(ङ) ..... ने तेल निकाला और तेली ने बाज़ार में बेच दिया।

4. कोष्ठक में दिए हुए शब्द के बहुवचन रूप से वाक्य पूर्ण कीजिए—

(क) पुस्तक में सुन्दर ..... थे।
(ख) वह बड़े-बड़े ..... देखता है।
(ग) कभी-कभी ..... हो जाती हैं।

(घ) उसे बेटे से बड़ी ..... हैं। *(उम्मीद)*

(ङ) ..... तोड़ दी गयीं। *(झोंपड़ी)*

5. निम्नलिखित कारक के सामने उसकी विभक्ति/परसर्ग लिखिए—

(क) कर्ता	.....	(ख) कर्म	.....
(ग) करण	.....	(घ) सम्प्रदान	.....
(ङ) अपादान	.....	(च) सम्बन्ध	.....
(छ) अधिकरण	.....	(ज) सम्बोधन	.....

6. रिक्त स्थानों में कारक की सही विभक्ति लिखिए—

(क) लोगों ..... हमें पराया नहीं समझा।

(ख) गोबर ..... उपयोग गैस बनाने ..... करना चाहिए।

(ग) उन्होंने अस्पताल ..... जाने ..... इन्कार कर दिया।

(घ) अशफ़ाक ..... फैज़ाबाद जेल ..... फाँसी दी गई।

(ङ) अपने बचाव ..... वह पेड़ ..... सबसे ऊँची डाल ..... जा बैठा।

7. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

(क) लिंग से क्या तात्पर्य है? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

(ख) नित्य पुल्लिग और नित्य स्त्रीलिंग शब्द किसे कहते हैं? उदाहरण सहित लिखिए।

(ग) वचन किसे कहते हैं? इसके कितने भेद हैं?

(घ) एकवचन किसे कहते हैं? उदाहरण भी दीजिए।

(ङ) बहुवचन किसे कहते हैं ? सोदाहरण लिखिए।

(च) कारक की परिभाषा दीजिए। इसके कितने भेद हैं?

(छ) परसर्ग से क्या तात्पर्य है? कारक का इनसे क्या सम्बन्ध है?

(ज) निम्नलिखित में अन्तर स्पष्ट कीजिए—

(i) कर्म कारक और सम्प्रदान कारक। (ii) करण कारक और अपादान कारक।

रचनात्मक गतिविधियाँ

- रेखांकित पदों के कारक बताइए—

चन्दू के चाचा ने चन्दू की चाची को चाँदनी चौक में चाँदी के चम्मच से चटपटी चटनी चटाई।

(क) चन्दू के :	.....	(ख) चाचा ने :	.....
(ग) चाची को :	.....	(घ) चाँदनी चौक में :	.....
(ङ) चम्मच से :	.....	(च) चटनी :	.....

6

सर्वनाम

जो पद संज्ञा पदों के स्थान पर उनकी पुनरावृत्ति रोकने के लिए प्रयोग किए जाते हैं, उन्हें सर्वनाम कहते हैं। अर्थात् हम, तू, तुम, वह, वे इत्यादि सर्वनाम शब्द हैं।

सर्वनाम के प्रयोग को स्पष्ट रूप से समझने के लिए निम्नांकित तालिका को ध्यानपूर्वक पढ़िए—

कॉलम 'अ'	कॉलम 'ब'
(1) महिमा ने कहा, "महिमा अपनी घड़ी नहीं देगी।"	महिमा ने कहा, "मैं अपनी घड़ी नहीं दूँगी।"
(2) महिमा ने ईशान से पूछा, "ईशान कहाँ गए थे?"	महिमा ने ईशान से पूछा, "तुम कहाँ गए थे?"
(3) सुदामा गरीब है तो क्या हुआ? सुदामा मेरा मित्र तो है।	सुदामा गरीब है तो क्या हुआ? वह मेरा मित्र तो है।

ऊपर दिए गए वाक्यों के कॉलम 'अ' में 'महिमा', 'ईशान' और 'सुदामा' शब्द संज्ञाएँ हैं। इनमें प्रत्येक संज्ञा वाक्य में दो बार आई है। वाक्य में एक ही संज्ञा का दो बार आना पढ़ने में अटपटा लगता है। कॉलम 'ब' के वाक्यों में दूसरी व आने वाली संज्ञाओं के स्थान पर 'मैं', 'तुम', 'वह' ये शब्द लिखे गए हैं। इसलिए ये वाक्य पढ़ने में अच्छे लगते हैं। सं संज्ञाओं के स्थान पर लिखे गए ये शब्द 'सर्वनाम' हैं।

सर्वनाम के भेद

सर्वनाम के निम्नलिखित छः भेद होते हैं—

1. पुरुषवाचक सर्वनाम

जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग कहने वाले, सुनने वाले और जिसके बारे में बातें की जाएँ उसके लिए होता है, उन्हें पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे—

- उसने मुझसे कहा कि कल तुम मुझे बिग बाज़ार में मिलोगे।

इस वाक्य में 'उसने', 'मुझसे', 'तुम' तीन तरह के पुरुषवाचक सर्वनाम आए हैं। यहाँ पर 'मुझसे' का प्रयोग बात कहने वाले ने अपने लिए, 'तुम' का प्रयोग बात सुनने वाले के लिए तथा 'उसने' का प्रयोग किसी अन्य व्यक्ति के लि किया गया है। इस आधार पर पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन भेद होते हैं—

(अ) उत्तम पुरुष—जिस सर्वनाम का प्रयोग बोलने वाला अपने लिए करता है, उसे उत्तम पुरुष कहते हैं; जैसे—मैं, हम, मुझे, हमारा इत्यादि।

(ब) मध्यम पुरुष—जिस सर्वनाम का प्रयोग बोलने वाला सुनने वाले के लिए करे, उसे मध्यम पुरुष कहते हैं जैसे—तुम, तू, तुम्हें, तुम्हारा आदि।

(स) अन्य पुरुष—जिस सर्वनाम का प्रयोग बोलने वाला अपने तथा सुनने वाले के अतिरिक्त अन्य व्यक्ति के लिए करे, उसे अन्य पुरुष कहते हैं; जैसे—वह, वे, उसने, उन्होंने आदि।

2. निश्चयवाचक सर्वनाम

जो सर्वनाम किसी पास या दूर की वस्तु या व्यक्ति की ओर निश्चयपूर्वक संकेत करते हैं, उन्हें निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। ये संकेतवाचक सर्वनाम भी कहलाते हैं। उदाहरणार्थ—

- यह मेरा भाई है।
- ये क्या कर रहे हैं?
- वह कौआ है।
- वे हमारे साथी हैं।

इन वाक्यों में यह, ये, वह, वे, निश्चयवाचक सर्वनाम हैं। इसके दो भेद कर सकते हैं—(अ) निकटवर्ती निश्चयवाचक; जैसे—यह, ये। (ब) दूरवर्ती निश्चयवाचक; जैसे—वह, वे।

ध्यान रखिए—'वह' पुरुषवाचक सर्वनाम और निश्चयवाचक सर्वनाम दोनों ही हैं। इनमें अन्तर इस प्रकार होगा—

(क) निकिता मेरी बहन है, वह गाजियाबाद में रहती है। *(अन्य पुरुषवाचक)*

(ख) यह साइकिल मेरी है, वह तुम्हारी है। *(निश्चयवाचक)*

3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम

जिस सर्वनाम से किसी निश्चित वस्तु या व्यक्ति का बोध न हो, उसे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे—

- कोई इधर आ रहा है।
- उसको कुछ दे दो।

इन वाक्यों में 'कोई' और 'कुछ' शब्दों से किसी विशेष व्यक्ति या वस्तु का बोध नहीं हो रहा है; अत: ये अनिश्चयवाचक सर्वनाम हैं।

4. प्रश्नवाचक सर्वनाम

जिस सर्वनाम का प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए किया जाए, उसे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे—

- कौन जा रहा है ?
- तुम क्या पढ़ रहे हो ?

इन वाक्यों में 'कौन' और 'क्या' शब्द प्रश्न पूछने के काम आ रहे हैं; अत: ये शब्द प्रश्नवाचक सर्वनाम हैं।

5. निजवाचक सर्वनाम

जो सर्वनाम 'निज' या अपने आपके विषय में बतलाए, वह निजवाचक सर्वनाम कहलाता है; जैसे—

- अपना काम अपने आप करो।
- अपना सामान स्वयं सँभालकर रखो।

यहाँ पर 'अपना', 'अपने आप', तथा 'स्वयं' शब्द निजवाचक सर्वनाम हैं।

6. सम्बन्धवाचक सर्वनाम

जो सर्वनाम दूसरे उप-वाक्य में आए संज्ञा या सर्वनाम से सम्बन्ध प्रकट करते हैं, उन्हें सम्बन्धवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे—

- जो बोयेगा सो काटेगा।
- जैसा करेगा वैसा भरेगा।

यहाँ 'जो ..... सो, जैसा ..... वैसा' आपस में सम्बन्ध सूचित करते हैं।

कुछ करके सीखें

1. नीचे दिए गए उत्तरों के सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) सर्वनाम कहते हैं—

(i) संज्ञा की विशेषता बताने वाले शब्दों को (ii) संज्ञा के स्थान पर प्रयोग होने वाले शब्दों को

(iii) जातिवाचक संज्ञा शब्दों को (iv) समस्त वस्तुओं के नाम को

(ख) जो सर्वनाम स्वयं के लिए प्रयुक्त होते हैं, उन्हें क्या कहते हैं?

(i) निश्चयवाचक (ii) निजवाचक (iii) प्रश्नवाचक (iv) सम्बन्धवाचक

(ग) उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष और अन्य पुरुष किस सर्वनाम के भेद हैं?

(i) निश्चयवाचक (ii) अनिश्चयवाचक (iii) सम्बन्धवाचक (iv) पुरुषवाचक

(घ) 'मैं' सर्वनाम है—

(i) द्वितीय पुरुष (ii) मध्यम पुरुष (iii) उत्तम पुरुष (iv) अन्य पुरुष

2. रिक्त स्थानों में उचित सर्वनाम शब्द भरिए—

(क) ..... अपने स्कूल जा रहा है।

(ख) ..... तुमसे वादा करता हूँ।

(ग) ..... अपना काम स्वयं करो।

(घ) ..... माता जी कहाँ गयी हैं?

(ङ) ..... कुछ मत कहो।

(च) ईश्वर से बड़ा दयालु ..... है?

3. सही कथन के सामने सही (✓) का तथा गलत कथन के सामने गलत (✗) का चिह्न लगाइए—

(क) 'कुछ' शब्द निश्चयवाचक सर्वनाम है।

(ख) 'कौन' प्रश्नवाचक सर्वनाम है।

(ग) 'हम' मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम है।

(घ) जो पढ़ेगा वह पास होगा। 'जो' और 'वह' सम्बन्धवाचक सर्वनाम हैं।

(ङ) 'यह', 'ये' शब्द दूरवर्ती निश्चयवाचक सर्वनाम हैं।

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

(क) सर्वनाम किसे कहते हैं? उदाहरण देकर समझाइए।

(ख) पुरुषवाचक सर्वनाम किसे कहते हैं? उसके भेदों को उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

(ग) निश्चयवाचक सर्वनाम किसे कहते हैं?

(घ) 'जैसा वैसा' शब्द सर्वनाम के किस भेद को दर्शाते हैं?

(ङ) पुरुषवाचक 'वह' और निश्चयवाचक 'वह' सर्वनाम का अन्तर स्पष्ट कीजिए।

7

विशेषण
Adjective

जो पद संज्ञा और सर्वनाम पदों की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं। उदाहरणार्थ—

- काला घोड़ा तेज़ दौड़ता है।
- चालीस चोर मारे गये।
- दो किलो चीनी तोलो।
- यह कमरा साफ़-सुथरा है।

उपर्युक्त वाक्यों मे 'काला', 'चालीस', 'दो किलो', 'यह' शब्द विशेषण हैं; क्योंकि ये क्रमश: घोड़ा, चोर, चीनी व कमरे की विशेषता बताते हैं।

विशेष्य—विशेषण पद जिन संज्ञा अथवा सर्वनाम पदों की विशेषता बताते हैं, वे विशेष्य कहलाते हैं; जैसे—घोड़ा, चोर, चीनी, कमरा आदि।

विशेषण के भेद

विशेषण के निम्नलिखित चार प्रमुख भेद हैं—

1. गुणवाचक विशेषण
2. संख्यावाचक विशेषण
3. परिमाणवाचक विशेषण
4. संकेतवाचक (सार्वनामिक) विशेषण

1. गुणवाचक विशेषण

जिन विशेषण शब्दों से संज्ञा और सर्वनाम शब्दों के गुण-दोष का बोध होता है, उन्हें गुणवाचक विशेषण कहते हैं। उदाहरणार्थ—

- यह आम मीठा है।
- दुबला बालक तेज़ दौड़ता है।

उपर्युक्त वाक्यों में 'मीठा' तथा 'दुबला' शब्द गुणवाचक विशेषण हैं। गुणवाचक विशेषण से कई प्रकार की विशेषताओं का बोध होता है; जैसे—

गुणबोधक	—	अच्छा, भला, दयालु, सरल आदि।
दोषबोधक	—	बुरा, दुष्ट, दुर्जन, क्रूर आदि।
आकारबोधक	—	लम्बा, गोल, तिकोना, चौड़ा आदि।
स्थानबोधक	—	नीचा, ऊँचा, बंगाली, राजस्थानी आदि।
रंगबोधक	—	काला, नीला, लाल, पीला, सफ़ेद आदि।
कालबोधक	—	नया, पुराना, प्राचीन, आधुनिक आदि।
दशाबोधक	—	दुबला, मोटा, पतला, अस्वस्थ, रुग्ण आदि।

दिशाबोधक — पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण आदि।

स्पर्शबोधक — कठोर, कोमल, खुरदरा आदि।

स्वादबोधक — मीठा, खट्टा, चटपटा, नमकीन आदि।

ध्वनिबोधक — मधुर, कठोर, कर्कश आदि।

गन्धबोधक — सुगन्धित, दुर्गन्धपूर्ण आदि।

2. संख्यावाचक विशेषण

जो विशेषण शब्द संज्ञा और सर्वनाम शब्दों की संख्या बताते हैं, उन्हें संख्यावाचक विशेषण कहते हैं; जैसे—

- राजा दशरथ के चार पुत्र थे।
- निकिता ने कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया।
- पापा जी से मिलने रोज़ाना अनेक लोग आते हैं।

दिए गए इन वाक्यों में क्रमशः 'चार, प्रथम, अनेक' संख्यावाचक विशेषण हैं। संख्यावाचक विशेषण के दो भेद हैं-

(अ) निश्चित संख्यावाचक—ये विशेषण निश्चित संख्या का बोध कराते हैं; जैसे—

गणनावाचक — दो, चार, पाँच, दस, पन्द्रह आदि। — मैंने बाज़ार से दो पुस्तकें खरी

क्रमवाचक — पहला, दूसरा, तीसरा, चौथा आदि। — मेरा कक्षा में प्रथम स्थान है।

(ब) अनिश्चित संख्यावाचक—ये विशेषण निश्चित संख्या का बोध नहीं कराते; जैसे—

- कुछ चोर पकड़े गए।
- थोड़े चित्र मिल गए हैं।

'कुछ' व 'थोड़े' अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण हैं।

3. परिमाणवाचक विशेषण

जिन शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम की मात्रा, नाप, तौल का बोध होता है, वे शब्द परिमाणवाचक विशेषण कहलाते हैं। उदाहरणार्थ—

- दो लीटर दूध ले आओ।
- तीन मीटर खादी खरीद लो।

'दो लीटर' और 'तीन मीटर' से क्रमशः दूध और खादी के परिमाण का पता चल रहा है; इसलिए ये परिमाणवाचक विशेषण हैं।

इसके भी दो भेद हैं—

(अ) निश्चित परिमाणवाचक—निश्चित परिमाणवाचक में वस्तु की नाप, तौल, संख्या या गिनती निश्चित होती जैसे—चार सौ ग्राम शक्कर, पाँच लीटर घी।

(ब) अनिश्चित परिमाणवाचक—इससे निश्चित नाप, तौल का बोध नहीं होता; जैसे—थोड़ा दूध, कुछ न आदि।

4. संकेतवाचक सार्वनामिक विशेषण

जो सर्वनाम शब्द संज्ञा शब्द की ओर संकेत करते है, उन्हे संकेतवाचक या सार्वनामिक विशेषण कहते हैं। उदाहरणार्थ—

- यह छात्र बहुत होशियार है।
- मुझे वे पुस्तके चाहिए।
- वह घर महिमा का है।

उपर्युक्त वाक्यो मे 'यह', 'वे' 'वह' शब्द संकेतवाचक विशेषण है; क्योंकि ये शब्द क्रमश: छात्र, पुस्तकों और घर की ओर संकेत कर रहे है।

ध्यान रखिए—यदि यह, ये, वह, वे आदि शब्द किन्हीं संज्ञा शब्दों से पहले आते हैं तो संकेतवाचक विशेषण होते हैं और यदि संज्ञा आदि के पूर्व न आकर स्वतन्त्र रूप मे आते है तो सर्वनाम होते हैं; जैसे—वे जाते हैं। वह तैरता है।

सर्वनामो मे उत्तम पुरुष—मैं, हम; मध्यम पुरुष—तू, तुम; निजवाचक सर्वनाम 'अपना' विशेषण के रूप में प्रयुक्त नही होते। सर्वनामो मे 'ही' प्रत्यय लगाकर संकेतवाचक विशेषण बनाया जाता है।

प्रविशेषण

बच्चो, कुछ शब्द विशेषण शब्दो की विशेषता प्रकट करते हैं; जैसे—

- मेरी अध्यापिका सबसे अच्छी है।
- निखिल बहुत मोटा लड़का है।
- गंगा सबसे लंबी नदी है।
- सुमन अधिक आलसी है।

उपर्युक्त वाक्यों में रंगीन मुद्रित शब्द सबसे, बहुत, अधिक प्रविशेषण हैं। ये शब्द अच्छी, मोटा, लंबी तथा आलसी से पहले लगकर इनकी विशेषता प्रकट कर रहे हैं।

विशेषण शब्दों की रचना

विशेषण शब्दों की रचना चार प्रकार से होती है—

1. संज्ञा द्वारा
2. सर्वनाम द्वारा
3. क्रिया द्वारा
4. अव्यय द्वारा

1. संज्ञा द्वारा विशेषण बनाना

संज्ञा शब्दों के अन्त मे आ, इक, इत, इल, इम, इया, ई, ईम, ईय, ईला, आलु, एरा, ऐला, मान, वती, वान आदि प्रत्यय लगाकर विशेषण बनाए जाते हैं; जैसे—

संज्ञा	विशेषण	संज्ञा	विशेषण	संज्ञा	विशेषण
भटक	भटका	प्यार	प्यारा	इतिहास	ऐतिहासिक
साहित्य	साहित्यिक	पुष्प	पुष्पित	अपमान	अपमानित
जयपुर	जयपुरिया	अन्त	अन्तिम	स्वर्ण	स्वर्णिम
आत्मा	आत्मीय	भारत	भारतीय	धन	धनी
रंग	रंगीला	श्रद्धा	श्रद्धालु	झगड़ा	झगड़ालू

संज्ञा	विशेषण	संज्ञा	विशेषण	संज्ञा	विशेषण
चाचा	चचेरा	दया	दयालु	श्री	श्रीमान
पुत्र	पुत्रवती	फूफा	फुफेरा	मूल्य	मूल्यवान
धन	धनवान	बुद्धि	बुद्धिमान	ग्राम	ग्रामीण
मधु	मधुर	गुण	गुणवती	ऋण	ऋणी
विदेश	विदेशी	विष	विषैला	घर	घरेलू
पुस्तक	पुस्तकीय	पाप	पापी	ईमानदारी	ईमानदार

2. सर्वनाम द्वारा विशेषण बनाना

सर्वनाम	विशेषण	सर्वनाम	विशेषण	सर्वनाम	विशेषण
यह	ऐसा	मैं	मेरा, मुझसा	कौन	कैसा
तुम	तुम्हारा	जो	जैसा	वह	वैसा

3. क्रिया द्वारा विशेषण बनाना

क्रिया	विशेषण	क्रिया	विशेषण	क्रिया	विशेषण
भागना	भगोड़ा	लड़ना	लड़ाकू	पढ़ना	पढ़ाकू
बेचना	बिकाऊ	गाना	गायक	टिकना	टिकाऊ
हँसना	हँसोड़	घूमना	घुमक्कड़	देखना	दिखावटी

4. अव्यय द्वारा विशेषण बनाना

अव्यय	विशेषण	अव्यय	विशेषण	अव्यय	विशेषण
आगे	अगला	पीछे	पिछला	ऊपर	ऊपरी
बाहर	बाहरी	नीचे	निचला	भीतर	भीतरी

कुछ करके सीखें

1. नीचे दिए गए उत्तरों के सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) 'भूखे व्यक्ति को खाना खिलाओ।' वाक्य में विशेषण शब्द है—

(i) व्यक्ति को ◯ (ii) भूखे ◯ (iii) खाना ◯ (iv) खिलाओ ◯

(ख) विशेषण शब्द की विशेषता बताने वाले को क्या कहते हैं?

(i) सांकेतिक विशेषण ◯ (ii) सार्वनामिक विशेषण ◯

(iii) गुणवाचक विशेषण ◯ (iv) प्रविशेषण ◯

(ग) विशेषण शब्द चुनिए—

(i) लड़ना ◯ (ii) लड़ाई ◯ (iii) लड़ाकू ◯ (iv) युद्ध ◯

(घ) 'मुझे भी थोड़ा-सा दूध दे दो।'—इस वाक्य में प्रयुक्त विशेषण का प्रकार है—

(i) परिमाणवाचक (ii) गुणवाचक

(iii) संख्यावाचक (iv) संकेतवाचक

2. निम्नलिखित वाक्यों में से विशेषण छाँटिए और उनके भेद का नाम भी लिखिए—

		विशेषण	भेद
(क)	दीपावली हिन्दुओं का धार्मिक त्योहार है।	.....	.....
(ख)	अक्षरधाम में श्रद्धालु भक्तों की भीड़ लगी है।	.....	.....
(ग)	उत्तर प्रदेश का उच्च न्यायालय इलाहाबाद में है।	.....	.....
(घ)	वायु सेना के लड़ाकू विमानों ने उड़ान भरी।	.....	.....
(ङ)	अब आपका स्वास्थ्य कैसा है?	.....	.....

3. दिए गए संज्ञा-शब्दों से विशेषण शब्द बनाइए—

दया	.....	राष्ट्र	.....
अन्त	.....	वर्ष	.....
भूख	.....	चाचा	.....
परिवार	.....	गति	.....
सम्मान	.....	विष	.....

4. कोष्ठकों में दिए गए शब्दों से विशेषण-रचना करके रिक्त स्थानों को भरिए—

(क) भारत ने अच्छी ..... उन्नति की। *(विज्ञान)*

(ख) उसकी ..... क्षमता सराहनीय है। *(बुद्धि)*

(ग) दिल्ली में कई ..... स्थान हैं। *(दर्शन)*

(घ) सरकार मज़दूरों की ..... मज़दूरी निर्धारित करने की सोच रही है। *(न्यून)*

(ङ) मैं सर्दियों में एक ..... जर्सी लूँगा। *(ऊन)*

5. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) विशेषण किसे कहते हैं? इसके कितने भेद हैं? नाम बताइए।

(ख) गुणवाचक विशेषण का क्या महत्त्व है? इनसे किन विशेषताओं का बोध होता है?

(ग) विशेषणों की रचना किन शब्दों से की जाती है?

(घ) विशेषणों की तुलना से आप क्या समझते हैं? तुलना के लिए किन-किन शब्दों का प्रयोग किया जाता है?

6. अन्तर स्पष्ट कीजिए—

(क) संख्यावाचक विशेषण और परिमाणवाचक विशेषण।

(ख) संकेतवाचक विशेषण और निश्चयवाचक सर्वनाम।

8

क्रिया, काल और वा

Verb, Tense and Vo

क्रिया

जिस शब्द अथवा पद से किसी कार्य के करने अथवा होने का बोध होता है, उसे क्रिया कहते हैं; जैसे—

- श्रेया पत्र लिख रही है।
- बन्दर पेड़ पर सो रहा था।
- नेहा कल स्टेडियम जाएगी।

उपर्युक्त वाक्यों में 'लिख रही है, सो रहा था, जाएगी' क्रिया-पद हैं। क्रिया के बिना वाक्य की रचना नहीं हो सकती। क्रिया से ही वाक्य के काल का बोध होता है।

धातु—क्रिया का मूल रूप धातु कहलाता है; जैसे—लिख, पढ़, सो, जा आदि। लिंग, वचन और काल के अनुसार इनका रूप बदलता रहता है।

क्रिया का सामान्य रूप—धातु में 'ना' प्रत्यय जोड़ने से क्रिया का सामान्य रूप बनता है। जैसे—'लिख' में ना जोड़ने पर लिखना, 'हँस' में ना जोड़ने पर हँसना, 'पा' में ना जोड़ने पर पाना आदि रूप बनते हैं।

क्रिया के भेद

क्रिया का वर्गीकरण निम्नलिखित दो आधारों पर किया जाता है—

1. कर्म के आधार पर क्रिया के भेद

कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद होते हैं—

(क) सकर्मक क्रिया—जिन वाक्यों में कर्म होता है, उनकी क्रिया सकर्मक होती है; जैसे—

- मोहन घर जाता है। (कर्म—घर)
- नीता पानी पीती है। (कर्म—पानी)

सकर्मक क्रिया के भी दो भेद होते हैं—

(i) एककर्मक क्रिया—जिस सकर्मक क्रिया के साथ केवल एक कर्म ही हो, वह एककर्मक क्रिया होती है; जैसे—

- कुत्ता रोटी खाता है।
- रश्मि पुस्तक पढ़ती है।

इन दोनों वाक्यों में क्रमशः 'रोटी' और 'पुस्तक' एक-एक कर्म हैं। अतः इन वाक्यों की क्रियाएँ एककर्मक हैं।

(ii) द्विकर्मक क्रिया—जिस सकर्मक क्रिया के साथ दो कर्म हों, वह द्विकर्मक क्रिया होती है; जैसे—

- अध्यापक बालकों को गणित पढ़ाता है।
- साक्षी रोहित को पचास रुपये देती है।

इन दोनों वाक्यों में पहले वाक्य में 'बालक' और 'गणित' दो कर्म आए हैं। इसी प्रकार, दूसरे वाक्य में 'रोहित' 'रुपये' दो कर्म आए हैं। अतः इन वाक्यों की क्रियाएँ द्विकर्मक हैं।

(ख) अकर्मक क्रिया—जिन वाक्यों में कर्म नहीं होता उनकी क्रिया अकर्मक होती है;

जैसे— ● नेताजी जा रहे हैं। ● राखी हँस रही है।

इन दोनों वाक्यों में 'कर्म' नहीं हैं; अत: 'जा रहे हैं' और 'हँस रही है' क्रियाएँ अकर्मक क्रियाएँ हैं। अकर्मक क्रिया का फल कर्ता पर पड़ता है।

2. रचना अथवा प्रयोग के आधार पर क्रिया के भेद

रचना अथवा प्रयोग के आधार पर क्रिया के निम्नलिखित पाँच भेद होते हैं—

(क) सामान्य क्रिया—जहाँ केवल एक साधारण क्रिया का प्रयोग होता है, वह सामान्य क्रिया कहलाती है; जैसे— ● वह आया। ● मैं भूखा हूँ।

यहाँ पर 'आया', 'हूँ' सामान्य क्रिया हैं।

(ख) संयुक्त क्रिया—जहाँ दो या अधिक क्रियाओं का साथ-साथ प्रयोग होता है, उसे संयुक्त क्रिया कहते हैं; जैसे— ● माता जी ने रामायण पढ़ ली है। ● वह पुलिस से डरकर भाग गया।

उपर्युक्त वाक्यों में 'पढ़ ली है' और 'भाग गया' में दो-दो क्रियाओं का साथ में प्रयोग हुआ है; ये संयुक्त क्रियाएँ हैं।

(ग) नामधातु क्रिया—संज्ञा, सर्वनाम, विशेषणों से बने क्रिया-पद नामधातु क्रिया कहलाते हैं; जैसे—

● वह अच्छी आदतें अपनाना चाहता है।

● अपनाना, झुठलाना, हथियाना, लजाना आदि नामधातु क्रियाएँ हैं।

(घ) प्रेरणार्थक क्रिया—जिस क्रिया से यह पता चले कि कर्ता स्वयं काम न करके दूसरों को कार्य करने की प्रेरणा देता है, उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं; जैसे— ● रमन ने शालिनी से खाना बनवाया।

● पिता बच्चों को अध्यापक से अंग्रेज़ी पढ़वाते हैं।

पहले वाक्य में रमन (कर्ता) ने खुद खाना न बनाकर शालिनी से बनवाया। इसी प्रकार, पिता (कर्ता) खुद अंग्रेज़ी न पढ़ाकर बच्चों को अध्यापक से पढ़वाता है।

प्रेरणार्थक क्रिया के दो कर्ता होते हैं—

(अ) प्रेरक कर्ता (ब) प्रेरित कर्ता

उपर्युक्त वाक्यों में 'रमन' और 'पिता' प्रेरक कर्ता तथा 'शालिनी' और 'अध्यापक' प्रेरित कर्ता हैं।

प्रेरणार्थक क्रियाओं की रचना दो रूपों में होती है—

मूल क्रिया	प्रथम रूप	द्वितीय रूप
चढ़ना	चढ़ाना	चढ़वाना
पढ़ना	पढ़ाना	पढ़वाना
खाना	खिलाना	खिलवाना आदि।

(ङ) पूर्वकालिक क्रिया—किसी वाक्य में मुख्य क्रिया से पहले समाप्त होने वाली क्रिया को पूर्वकालिक क्रिया कहते हैं; जैसे— ● वह चाय पीकर स्कूल गया। ● वह नहा-धोकर पूजा में सम्मिलित हुआ।

उपर्युक्त वाक्यों में 'गया' और 'हुआ' क्रिया के पूर्व 'पीकर' तथा 'धोकर' क्रिया का प्रयोग हुआ है। ये क्रियाएँ क्योंकि पूर्व (पहले) काल (भूतकाल) में सम्पन्न हो चुकी हैं; अत: ये क्रियाएँ पूर्वकालिक क्रियाएँ हैं।

काल

क्रिया के करने या होने का समय उसका काल कहलाता है; जैसे—

- गुरमीत कल स्वर्ण-मन्दिर देखने गया था।
- बढ़ई मेज़ बना रहा है।
- शोभित कल श्रीनगर जाएगा।

इन वाक्यों में 'गया था', 'बना रहा है' और 'जाएगा' आदि क्रियाएँ हैं। इन क्रियाओं के होने का समय (क अलग-अलग है— 'गया था'—क्रिया हो चुकी है। 'बना रहा है'—क्रिया अभी हो रही है। 'जाएगा'— क्रिया आने समय (भविष्य) में होगी।

काल के भेद

काल के तीन भेद होते हैं—1. भूतकाल, 2. वर्तमानकाल तथा 3. भविष्यत्काल।

1. भूतकाल

क्रिया के जिस रूप से कार्य के बीते हुए समय में हो जाने का बोध हो, उसे भूतकाल कहते हैं; जैसे—

- अमरेंद्र ने खाना खा लिया था।
- श्रीकृष्ण ने कंस को मारा था।

भूतकाल के भेद

भूतकाल के निम्नलिखित छः भेद होते हैं—

(क) सामान्य भूतकाल—क्रिया के जिस रूप से कार्य के सामान्य स्थिति में भूतकाल में होने का पता चलता उसे सामान्य भूतकाल कहते हैं। किन्तु इनसे यह पता नहीं चलता कि क्रिया कब पूर्ण हुई; जैसे—

- राष्ट्रपति ने खिलाड़ियों को पुरस्कृत किया।
- कुली ने सामान उठाया।

(ख) आसन्न भूतकाल—क्रिया के जिस रूप से उसके कुछ ही समय पहले पूरा होने का पता चलता है, आसन्न भूतकाल कहते हैं। 'आसन्न' का अर्थ निकट होता है; जैसे—

- हम बस से लखनऊ पहुँचे हैं।
- शोभित, कहाँ से आए हो?

(ग) पूर्ण भूतकाल—क्रिया के जिस रूप से उसके बहुत पहले पूर्ण हो जाने का बोध होता है, उसे पूर्ण भूतक कहते हैं; जैसे—

- श्रीराम ने रावण को मारा था।
- गांधी जी ने सत्याग्रह आन्दोलन चलाया था।

(घ) अपूर्ण भूतकाल—क्रिया के जिस रूप से उसके बीत चुके समय में आरम्भ होकर अभी पूरा न होने का प चलता है, उसे अपूर्ण भूतकाल कहते हैं; जैसे—

- जंगल में मोर नाच रहा था।
- सूरज डूब रहा था।

(ङ) सन्दिग्ध भूतकाल—क्रिया के जिस रूप से उसके भूतकाल में पूरा होने में सन्देह या अनिश्चय होता है, उ सन्दिग्ध भूतकाल कहते हैं; जैसे—

- नेहा खाना पका चुकी होगी।
- छात्रावास में बच्चे सो गए होंगे।

(च) हेतुहेतुमद् भूतकाल—क्रिया के जिस रूप से उसके भूतकाल में किसी कारणवश पूरा न हो सकने का पता चलता है, उसे हेतुहेतुमद् भूतकाल कहते हैं; जैसे—

- यदि रुपये होते तो मैं स्कूटर खरीद लेता।
- यदि तैयारी की होती तो मैं अच्छे अंक पा लेती।

2. वर्तमानकाल

क्रिया के जिस रूप से कार्य के जारी रहने का पता चलता है, उसे वर्तमानकाल कहते हैं; जैसे—

- पंडित अयोध्याप्रसाद पूजा करा रहे हैं।
- जानकीदास जनकपुरी में रहते हैं।

वर्तमानकाल के भेद

वर्तमानकाल के निम्नलिखित तीन भेद होते हैं—

(क) सामान्य वर्तमानकाल—जो क्रिया वर्तमान में सामान्य रूप से होती है, उसे सामान्य वर्तमानकाल कहते हैं; जैसे—

- माली घास काटता है।
- गाय दूध देती है।

(ख) अपूर्ण वर्तमानकाल—जो क्रिया वर्तमान में हो रही होती है, यानी क्रिया पूर्ण नहीं हुई है, उसे अपूर्ण वर्तमानकाल कहते हैं; जैसे—

- तोता हरी मिर्च खा रहा है।
- बच्चा सो रहा है।

(ग) सन्दिग्ध वर्तमानकाल—जिस क्रिया के वर्तमान समय में होने में सन्देह या अनिश्चय होता है, उसे सन्दिग्ध वर्तमानकाल कहते हैं; जैसे—

- मनीषा कार्यालय में बैठी होगी।
- बच्चे पतंग उड़ा रहे होंगे।

इस काल के वाक्यों की मुख्य क्रिया भूतकाल में और सहायक क्रिया भविष्यत्काल में होती है।

3. भविष्यत्काल

क्रिया के जिस रूप से कार्य के आने वाले समय में होने का पता चलता है, उसे भविष्यत्काल कहते हैं; जैसे—

- हम सब एक साथ चिड़ियाघर चलेंगे।
- लड़के मैदान में क्रिकेट खेलेंगे।

'चलेंगे' और 'खेलेंगे' क्रियाएँ आने वाले समय में होंगी। अत: ये भविष्यत्काल की क्रियाएँ हैं।

भविष्यत्काल के भेद

भविष्यत्काल के निम्नलिखित तीन भेद होते हैं—

(क) सामान्य भविष्यत्काल—क्रिया के जिस रूप से उसके आने वाले समय में सामान्य ढंग से होने का पता चलता है, उसे सामान्य भविष्यत्काल कहते हैं; जैसे—

- निकिता दादी जी के साथ बाज़ार जाएगी।
- महिलाएँ नहर से पानी भरेंगी।

(ख) सम्भाव्य भविष्यत्काल—क्रिया के जिस रूप से उसके आने वाले समय में होने की सम्भावना का पता चलता है, उसे सम्भाव्य भविष्यत्काल कहते हैं; जैसे—

- दादी जी शायद कहानी सुनाएँ।
- सम्भवत: चाँद निकल आए।

(ग) हेतुहेतुमद् भविष्यत्काल—जब आने वाले समय में किसी क्रिया का पूर्ण होना किसी दूसरी क्रिया पर निर्भर होता है, वहाँ हेतुहेतुमद् भविष्यत्काल होता है; जैसे—

- अगर पिता जी जाएँगे तो मैं दिल्ली जाऊँगा।
- यदि मैं उत्तीर्ण न हुआ तो क्या होगा?

वाच्य

क्रिया का वह रूप जिससे यह पता चलता है कि क्रिया का सम्बन्ध कर्ता से है, कर्म से है या भाव से, वाच्य कहते है; जैसे—

- पूनम निबन्ध लिखती है।
- देश में गणतन्त्र-दिवस मनाया गया।
- अब मुझसे नहीं सहा जाता।

- पहले वाक्य में क्रिया 'लिखती है' का सम्बन्ध कर्ता 'पूनम' से है।
- दूसरे वाक्य में क्रिया 'मनाया गया' का सम्बन्ध कर्म 'गणतन्त्र-दिवस' से है।
- तीसरे वाक्य में क्रिया 'जाना' का सम्बन्ध भाव 'सहना' से है।

इस प्रकार, इन तीनों वाक्यों के वाच्य अलग-अलग हैं।

वाच्य के भेद

वाच्य के तीन भेद हैं—1. कर्तृवाच्य, 2. कर्मवाच्य तथा 3. भाववाच्य।

1. कर्तृवाच्य

जब वाक्य में क्रिया के लिंग, पुरुष और वचन कर्ता के अनुसार होते हैं तो उस क्रिया को कर्तृवाच्य कहते हैं; जैसे—

- सुषमा पुस्तक पढ़ती है।
- ईशान सो गया।
- महिलाएँ कल गीत गाएँगी।

इन वाक्यों में कर्ता की प्रधानता होती है। कर्ता के वचन और लिंग के अनुसार ही क्रिया का प्रयोग हुआ है।

2. कर्मवाच्य

जब वाक्य में क्रिया कर्म के लिंग, पुरुष और वचन के अनुसार होती है तो वह वाक्य कर्मवाच्य में होता है; जैसे—

- नितिन के द्वारा पुस्तक पढ़ी जाती है।
- खिलाड़ियों के द्वारा क्रिकेट खेला जाता है।
- यह उपन्यास शरत्चन्द्र द्वारा लिखा गया है।

इन वाक्यों में 'पुस्तक', 'क्रिकेट' और 'उपन्यास' में कर्म की प्रधानता है। अत: क्रिया भी इन्हीं के अनुसार प्रयुक्त है। कर्मवाच्य में सकर्मक क्रिया का प्रयोग किया जाता है।

3. भाववाच्य

जब वाक्य में क्रिया का प्रयोग कर्ता और कर्म के अनुसार न होकर भाव के अनुसार होता है तो उसे भाववाच्य कहते हैं; जैसे—

- प्रांजल से बोला नहीं जाता।
- काजोल से दौड़ा जाता है।

भाववाच्य में केवल अकर्मक क्रिया का प्रयोग होता है।

ध्यान रखिए

कर्मवाच्य में सामान्यतया क्रिया करने वाले व्यक्ति का संकेत आवश्यक नहीं होता; जैसे—

- बंगाल में चावल खाया जाता है।
- मुम्बई में मराठी बोली जाती है।

भाववाच्य में क्रिया हमेशा एकवचन, अन्य पुरुष, पुल्लिंग रूप में रहती है; जैसे—

- बोला नहीं जाता।
- दौड़ा जाता है।

कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य बनाने की विधि

1. कर्मवाच्य में कर्ता को गौण स्थान मिलता है। अत:
   (क) कर्ता को करण या माध्यम के रूप में से, के द्वारा, द्वारा आदि लगाकर व्यक्त किया जाता है; जैसे—
   उज्ज्वल के द्वारा पत्र पढ़ा गया।
   (ख) कर्ता का लोप ही कर दिया जाए; जैसे—
   वायुयान उड़ रहा है। (उड़ाने वाले कर्ता का उल्लेख नहीं है।)
2. कर्मवाच्य बनाते समय संयोजी क्रिया 'जाना' (पुरुष, लिंग, वचन के अनुसार) का प्रयोग किया जाता है; जैसे—चाय पी जा रही है।
3. कर्तृवाच्य की मुख्य क्रिया को सामान्य भूतकाल में परिवर्तित कर दिया जाता है।
4. यदि कर्म के साथ कोई विभक्ति-चिह्न लगा हो तो उसे हटा दिया जाता है।

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
(क) लोग समाचार-पत्र पढ़ते हैं।	लोगों के द्वारा समाचार-पत्र पढ़े जाते हैं।
(ख) गली के लड़के फुटबॉल खेलेंगे।	गली के लड़कों द्वारा फुटबॉल खेला जाएगा।
(ग) नेहा दूध नहीं पी रही है।	नेहा से दूध नहीं पिया जा रहा है।
(घ) लड़कियाँ बास्केटबॉल खेलेंगी।	लड़कियों द्वारा बास्केटबॉल खेला जाएगा।
(ङ) पुष्पा खाना बनाती है।	पुष्पा द्वारा खाना बनाया जाता है।

कर्तृवाच्य से भाववाच्य बनाने की विधि

1. कर्ता के साथ 'से' जोड़ा जाता है।
2. भाववाच्य की क्रिया का प्रयोग एकवचन और अन्य पुरुष में किया जाता है।
3. भाववाच्य का प्रयोग अधिकतर निषेधात्मक रूप में होता है।

कर्तृवाच्य	भाववाच्य
(क) हिमांशु पढ़ नहीं रहा है।	हिमांशु से पढ़ा नहीं जा रहा है।
(ख) राजन छत पर कूदता है।	राजन से छत पर कूदा जाता है।
(ग) सभी छात्राएँ दौड़ेंगी।	सभी छात्राओं से दौड़ा जाएगा।
(घ) सुलभा नहीं सोयी।	सुलभा से सोया नहीं गया।

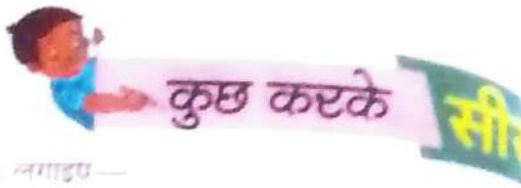

1. नीचे दिए गए उनके सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) क्रिया के मूल रूप को क्या कहते हैं?
(i) धातु (ii) कर्म (iii) उपसर्ग (iv) प्रत्यय

(ख) जहाँ एक ही क्रिया का प्रयोग किया जाता है, उसे क्रिया कहते हैं।
(i) संयुक्त (ii) सामान्य (iii) प्रेरणार्थक (iv) नामधातु

(ग) 'लुटेरों ने ज़मीन हथिया ली।'—इस वाक्य में प्रयुक्त क्रिया का प्रकार है—
(i) पूर्वकालिक (ii) नामधातु (iii) सामान्य (iv) संयुक्त

(घ) क्रिया के जिस रूप से क्रिया के आने वाले समय में होने का पता चले, वह कौन सा काल होता है?
(i) वर्तमानकाल (ii) भूतकाल (iii) भविष्यतकाल (iv) आगामीकाल

(ङ) 'आप आ जाते तो मैं भी चल पड़ता।'—इस वाक्य में प्रयुक्त क्रिया है—
(i) हेतुहेतुमद भूतकाल (ii) पूर्ण भूतकाल
(iii) सन्दिग्ध भूतकाल (iv) अपूर्ण भूतकाल

(च) कर्मवाच्य में क्रिया किसके लिंग, पुरुष और वचन के अनुसार होती है?
(i) कर्ता (ii) कर्म (iii) भाव (iv) करण

(छ) 'सीता काम नहीं करती।' यह वाक्य किस वाच्य का है?
(i) भाववाच्य (ii) कर्तृवाच्य (iii) कर्मवाच्य (iv) इनमें से कोई नहीं

(ज) 'मोहन के द्वारा पुस्तक पढ़ी जाएगी।' यह वाक्य किस वाच्य का है?
(i) कर्तृवाच्य (ii) कर्मवाच्य (iii) भाववाच्य (iv) इनमें से कोई नहीं

2. निम्नलिखित वाक्यों में से क्रिया-पद छाँटिए और उनकी धातुएँ भी लिखिए—

वाक्य	क्रिया-पद	धातु
(क) मैं स्कूल जाऊँगा।		
(ख) वह सुबह से पढ़ रहा है।		
(ग) उसने सेब खा लिया।		
(घ) वह चित्र देखता है।		
(ङ) लता गीत गाती है।		

3. निम्नलिखित वाक्यों की क्रियाएँ सकर्मक हैं अथवा अकर्मक, उनके सम्मुख लिखिए—

(क) विमल कपड़े धोता है। .....

(ख) कंचन दिल्ली जाती है। .....

(ग) उसने कपड़े नहीं पहने। .....

(घ) घोड़ा तेज़ दौड़ रहा है। .....

(ङ) बच्चा रो रहा है। .....

4. दिए गए वाक्यों में क्रिया-पदों के काल तथा उनके भेद बताइए—

		काल	भेद
(क)	उसने बाज़ार से कमीज़ खरीदी।	.....	.....
(ख)	वह आता तो अनिल उसके साथ चला जाता।	.....	.....
(ग)	उन्होंने मेरी घड़ी छीन ली है।	.....	.....
(घ)	उसका भाई निबन्ध लिख रहा है।	.....	.....
(ङ)	कपिल मेहनत करता तो पास हो जाता।	.....	.....

5. संकेतों के अनुसार क्रिया का काल बदलकर पुन: लिखिए—

(क) वह रविवार को मन्दिर जाता है। *(सन्दिग्ध वर्तमानकाल)*

(ख) लड़के मैदान में खेल रहे थे। *(सम्भाव्य भविष्यत्काल)*

(ग) हम तुम्हारे घर चलेंगे। *(सामान्य वर्तमानकाल)*

(घ) अगर वह परिश्रम करता तो अवश्य सफल हो जाता। *(हेतुहेतुमद् भविष्यत्काल)*

(ङ) वह दरवाज़े पर खड़ा हुआ है। *(अपूर्ण भूतकाल)*

6. सही कथन के सामने सही (✓) का तथा गलत कथन के सामने गलत (✗) का चिह्न लगाइए—

(क) जहाँ क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष के रूप कर्म के अनुसार हों, उसे कर्मवाच्य कहते हैं। [ ]

(ख) कार्यालयों की सूचनाओं और आदेशों में कर्मवाच्य का प्रयोग होता है। [ ]

(ग) कर्तृवाच्य में क्रिया का सम्बन्ध कर्ता से होता है। [ ]

(घ) हिन्दी में सामान्यत: कर्तृवाच्य का ही प्रयोग होता है। [ ]

(ङ) कर्मवाच्य में अकर्मक क्रिया का प्रयोग किया जाता है। [ ]

7. निम्नलिखित वाक्यों में उचित शब्द द्वारा रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

कर्मवाच्य *वाच्य* *भाववाच्य* *कर्तृवाच्य*

(क) क्रिया का वह रूप जिससे यह जाना जाता है कि क्रिया का मुख्य विषय कर्ता है, कर्म है या भाव है ..... कहलाता है।

(ख) जहाँ क्रिया का सम्बन्ध सीधा कर्म से हो, उसे ..... कहते हैं।

(ग) जहाँ क्रिया के रूप में न कर्ता की प्रधानता होती हो, न कर्म की बल्कि क्रिया के भाव की प्रधानता होती है, वहाँ ..... होता है।

(घ) जहाँ क्रिया के लिंग और वचन कर्ता के अनुसार हों, वहाँ ..... होता है।

8. संकेतों के अनुसार वाच्य परिवर्तन कीजिए—

(क) मैं अंग्रेज़ी पढ़ नहीं सकता। (*भाववाच्य*)

(ख) मुझसे यह भाषा बोली नहीं जाएगी। (*कर्तृवाच्य*)

(ग) आज गुरु जी ने हमें कहानी सुनाई। (*कर्मवाच्य*)

(घ) माँ द्वारा पुत्र को सुला दिया गया। (*कर्तृवाच्य*)

(ङ) पक्षी आकाश में उड़ते हैं। (*भाववाच्य*)

(च) धोबी कपड़े धो रहा था। (*कर्मवाच्य*)

9. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

(क) क्रिया की परिभाषा लिखिए। उसका वर्गीकरण किन आधारों पर किया जाता है?

(ख) धातु से आप क्या समझते हैं?

(ग) सकर्मक क्रिया किसे कहते हैं? उदाहरण भी दीजिए।

(घ) व्याकरण में काल किसे कहते हैं? इसके कितने भेद हैं? सोदाहरण लिखिए।

(ङ) भविष्यत्काल के कितने भेद किए गए हैं? प्रत्येक के दो-दो उदाहरण लिखिए।

(च) वाच्य से आप क्या समझते हैं? इसके कितने भेद होते हैं?

(छ) भाववाच्य से क्या तात्पर्य है? इसमें क्या विशेषता होती है?

रचनात्मक गतिविधियाँ

1. खाने की छुट्टी में आपके विद्यालय में क्या-क्या क्रियाएँ होती हैं, उनकी सूची बनाइए; जैसे—खाना, टहलना ....।
2. अपने मित्रों के साथ विभिन्न काल के भेदों के अनुसार पाँच-पाँच वाक्य सुनाइए।
3. किसी भी अवकाश के दिन अपने अनुज/अनुजा की दिनचर्या का निरीक्षण कीजिए और उससे अपनी दिनचर्या की क्रमबद्ध रूप से कीजिए।
4. आप अपने मम्मी-पापा के साथ मेला देखने गए किन्तु काफ़ी दूर तक पैदल नहीं चल पाते। आप अपने मम्मी-पापा से कहकर अपनी असमर्थता जताएँगे? आप अपनी बात भाववाच्य में कहें। केवल पाँच वाक्य लिखिए—

(क) .....

(ख) .....

(ग) .....

(घ) .....

(ङ) .....

9

अव्यय / अविकारी शब्द
Indeclinable Words

अव्यय/अविकारी शब्द लिंग, वचन, पुरुष काल आदि के कारण परिवर्तित नहीं होते, अपितु ज्यों-के-ज्यों त्यों रहते हैं। इनके निम्नलिखित भेद हैं—

(क) क्रियाविशेषण (Adverb)

वाक्य में जो शब्द क्रिया की विशेषता बताते हैं, उन्हें क्रियाविशेषण कहते हैं।

उदाहरणार्थ—

- मोहन धीरे-धीरे लिखता है।
- श्याम यहाँ रहेगा।
- वह अभी-अभी सोकर उठा है।

उपर्युक्त वाक्यों में धीरे-धीरे, यहाँ, अभी-अभी क्रिया-पदों की विशेषता बता रहे हैं; अत: ये क्रियाविशेषण के उदाहरण हैं।

क्रियाविशेषण के भेद

क्रियाविशेषण के चार भेद माने गए हैं—1. स्थानवाचक, 2. कालवाचक, 3. रीतिवाचक तथा 4. परिमाणवाचक।

1. स्थानवाचक क्रियाविशेषण

जो शब्द क्रिया के होने के स्थान या दिशा का बोध कराते हैं, उन्हें स्थानवाचक क्रियाविशेषण कहा जाता है। ये तीन प्रकार के होते हैं—

स्थितिवाचक—यहाँ, वहाँ, ऊपर, नीचे, जहाँ, कहाँ, बाहर, भीतर आदि।

दिशावाचक—इधर, उधर, किधर, दाहिने, बाएँ, इस ओर आदि।

विस्तारवाचक—यहाँ से वहाँ तक आदि।

2. कालवाचक क्रियाविशेषण

जो शब्द क्रिया के होने के समय को बताते हैं, उन्हें कालवाचक क्रियाविशेषण कहा जाता है। ये तीन प्रकार के होते हैं—

समय सम्बन्धी—आज, कल, परसों, सवेरे, प्रात:काल, पहले, पीछे, जब, तब, कब आदि।

अवधि सम्बन्धी—दिन भर, सुबह से शाम तक।

वातावरण सम्बन्धी—कई बार, हर बार, प्रतिदिन, लगातार आदि।

3. रीतिवाचक क्रियाविशेषण

जो शब्द क्रिया के होने की रीति, प्रकार, निश्चय, अनिश्चय, निषेध, आकस्मिकता आदि का बोध कराते हैं, उन्हें रीतिवाचक क्रियाविशेषण कहा जाता है। ये अनेक प्रकार के होते हैं—

प्रकारवाचक—ऐसे, वैसे, कैसे, धीरे-धीरे, अचानक, शीघ्रता आदि।

निश्चयवाचक—ज़रूर, अवश्य, नि:सन्देह, वास्तव में आदि।
अनिश्चयवाचक—शायद, कदाचित्, सम्भवत: आदि।
कारणवाचक—क्यों, के कारण आदि।
निषेधवाचक—न, नहीं, मत आदि।
प्रश्नवाचक—क्यों, कहाँ, कैसे, कब आदि।

4. परिमाणवाचक क्रियाविशेषण

जिन शब्दों से क्रिया की मात्रा अथवा परिमाण का बोध होता है, उन्हें परिमाणवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं। भी कई भेद हैं—

अधिकतावाचक—अधिक, अत्यन्त, अति, ज़्यादा, खूब आदि।
न्यूनतावाचक—थोड़ा, कम, न्यून आदि।
पर्याप्तवाचक—पर्याप्त, काफ़ी, बस आदि।
तुलनावाचक—जितना, उतना, कितना, इतना आदि।
श्रेणीवाचक—थोड़ा-थोड़ा, क्रमश:, बारी-बारी से आदि।

क्रियाविशेषण के बारे में जानने योग्य बातें

- क्रियाविशेषण के साथ भी कई बार प्रविशेषण का प्रयोग होता है; जैसे—प्रियंका बहुत तेज़ दौड़ ('तेज़' क्रियाविशेषण, 'बहुत' प्रविशेषण)
- यद्यपि क्रियाविशेषण अविकारी शब्द है, पर कभी-कभी कुछ क्रियाविशेषण शब्दों में परिवर्तन भी आ ज जैसे—
  - वह कमीज़ अच्छी धुली है।
  - खुशी अच्छा गाती है।
- अनेक शब्द ऐसे हैं जो विशेषण और क्रियाविशेषण दोनों ही रूपों में प्रयुक्त होते हैं; जैसे—

शब्द	विशेषण	क्रियाविशेषण
मीठा	मुझे मीठा तरबूज़ दो।	वह मीठा गाती है।
कुछ	मुझे कुछ रुपये दो।	कुछ खाओ।
थोड़ा	थोड़ा दूध पी लो।	थोड़ा सो लो।

(ख) सम्बन्धबोधक (Preposition)

जो शब्द संज्ञा और सर्वनाम के साथ आकर उनका सम्बन्ध वाक्य के अन्य शब्दों के साथ प्रकट करते हैं, उन्हें सम्बन्धबोधक अव्यय कहते हैं। उदाहरणार्थ—

- गुरुद्वारे के पास हमारा विद्यालय है।
- सचिन के साथ हरभजन खड़ा है।

इन वाक्यों में 'के पास' और 'के साथ' शब्द संज्ञा शब्दों 'गुरुद्वारे' और 'सचिन' के साथ आए हैं। ये शब्द संज्ञा शब्द का सम्बन्ध वाक्य के अन्य शब्दों के साथ स्पष्ट करते हैं।

इन अव्ययों को स्पष्ट रूप से समझने के लिए निम्नलिखित उदाहरणों को ध्यानपूर्वक पढ़िए—

1. मेरे सामने कंचन का घर है।
2. महिमा के बिना शिवानी नहीं चलेगी।
3. लता के बाद आशा गीत गाएगी।
4. मन्दिर के बाहर जूते उतारिए।
5. जेबकतरे के पास मेरा पर्स है।
6. दुकान के अन्दर ग्राहक खड़े हैं।
7. श्रीनिवासन के समान रमन भी वैज्ञानिक है।
8. निशा के पीछे निकिता खड़ी है।
9. ईशु की खातिर ऋचा गीत गाएगी।
10. माँ की ओर ईशान चल पड़ा।

इन वाक्यों में सामने, के बिना, के बाद, के बाहर, के पास, के अन्दर, के समान, के पीछे, की खातिर तथा की ओर सम्बन्धबोधक शब्द हैं।

सम्बन्धबोधक और क्रियाविशेषण में अन्तर

वस्तुत: सम्बन्धबोधक क्रियाविशेषण ही होते हैं, परन्तु अन्तर इतना होता है कि ये क्रिया की विशेषता बतलाने के अतिरिक्त किसी अन्य शब्द के साथ भी सम्बन्धित होते हैं। सम्बन्धबोधक शब्दों के साथ कारकों की विभक्तियाँ या परसर्ग प्राय: जुड़े रहते हैं। दोनों के अन्तर को समझने के लिए आइए उदाहरण देखें—

शब्द	क्रियाविशेषण के रूप में प्रयुक्त	सम्बन्धबोधक के रूप में प्रयुक्त
मधुर	वह मधुर गाती है।	वह दीपा से मधुर गाती है।
सामने	मैं सामने रहता हूँ।	उसने अध्यापक के सामने झूठ बोल दिया।
पीछे	तुम पीछे चलो।	तुम रहमान के पीछे चलो।
यहाँ	वह यहाँ बैठा है।	वह चाचा जी के यहाँ बैठा है।
बाहर	पिता जी बाहर गए हैं।	पिता जी शहर से बाहर गए हैं।

सम्बन्धबोधक के भेद

सम्बन्धबोधक अव्यय के निम्नलिखित दो भेद हैं—

1. रूप-रचना के आधार पर—इस आधार पर सम्बन्धबोधक के दो प्रकार होते हैं—

(क) रूढ़—का, की, के, में, पर, से, ने आदि।

(ख) यौगिक—के लिए, की ओर, के बिना, के पश्चात्, के साथ आदि।

2. अर्थ के आधार पर—अर्थ के आधार पर सम्बन्धबोधक शब्दों का प्रयोग प्राय: काल, स्थान, दिशा, साधन, विरोध, समता, हेतु, संग, पृथकता, तुलना आदि के लिए किया जाता है—

(i) कालवाचक	पश्चात्, उपरान्त, पहले, पीछे	राशि के पश्चात् हिना का नृत्य होगा।
(ii) स्थानवाचक	यहाँ, वहाँ, निकट, दूर, अन्दर, बाहर	सास के निकट बहू बैठी हुई है।
(iii) दिशावाचक	आसपास, सामने, ओर, तरफ़	रेलवे स्टेशन के सामने गुरुद्वारा है।
(iv) साधनवाचक	द्वारा, मार्फ़त, सहारे, ज़रिये, माध्यम	डाकिये के द्वारा पत्र मिल गया।
(v) विरोधवाचक	विपरीत, प्रतिकूल, खिलाफ़, उलटे	अमित के खिलाफ़ सत्यप्रकाश चुनाव लड़ेगा।

(vi) **समतावाचक**	समान, बराबर, तरह, भाँति	राहुल के बराबर निकिता के अंक आ
(vii) **हेतुवाचक**	कारण, खातिर, लिए, हित	भाई के लिए बहन ने रक्तदान किया।
(viii) **संगवाचक**	साथ, सहित, समेत	कुन्ती के साथ पाँचों पांडव भी आए है
(ix) पृथकतावाचक	दूर, अलग, परे, हटकर	चिकित्सालय से दूर बाज़ार बन रहा है
(x) तुलनावाचक	तरह, अपेक्षा, समान, तुलना	सुरेश की अपेक्षा मानव अच्छा खेलता

(ग) समुच्चयबोधक (Conjunction)

दो शब्दों, वाक्यांशों या दो वाक्यों को जोड़ने का काम करने वाले अव्यय शब्द, समुच्चयबोधक कह उदाहरणार्थ—

- श्रीकृष्ण तथा सुदामा में गहरी मित्रता थी।
- उसने बहुत परिश्रम किया परन्तु परीक्षा में उत्तीर्ण न हो सका।
- दिन निकला और पक्षी चहचहाने लगे।

उपर्युक्त वाक्यों में प्रयुक्त 'तथा', 'परन्तु', 'और' ऐसे अव्यय शब्द हैं जो दो शब्दों (श्रीकृष्ण, सुदामा), (उसने बहुत परिश्रम किया, परीक्षा में उत्तीर्ण न हो सका) तथा दो वाक्यों (दिन निकला, पक्षी चहचहाने लगे) क का काम करते हैं। ये अव्यय शब्द समुच्चयबोधक हैं।

समुच्चयबोधक के भेद

समुच्चयबोधक के निम्नलिखित दो भेद होते हैं—

1. समानाधिकरण समुच्चयबोधक तथा 2. व्यधिकरण समुच्चयबोधक।

1. समानाधिकरण समुच्चयबोधक

जो अव्यय समान घटकों (शब्दों, वाक्यांशों या वाक्यों) को परस्पर मिलाते हैं, उन्हें समानाधिकरण समुच्चय कहा जाता है। समानाधिकरण समुच्चयबोधक चार प्रकार के होते हैं—

(क) संयोजक (ख) विभाजक

(ग) विरोधदर्शक (घ) परिणामदर्शक

(क) संयोजक—दो समान वर्ग के शब्दों, वाक्यांशों या वाक्यों को जोड़ने का काम करने वाले समुच्चय संयोजक कहे जाते हैं; जैसे—

- रोहित और मोहित घर चले गए।
- बादल गरजने लगे तथा वर्षा प्रारम्भ हो गई।

उपर्युक्त वाक्यों में प्रयुक्त 'और', 'तथा' ऐसे समुच्चयबोधक हैं जो दो समान शब्दों (रोहित, मोहित) तथा दो व (बादल गरजने लगे, वर्षा होने लगी) को परस्पर जोड़ने का काम कर रहे हैं। ये दोनों 'संयोजक' हैं।

'और, तथा एवं' संयोजक हैं।

(ख) विभाजक—जो समुच्चयबोधक शब्दों, वाक्यांशों या वाक्यों में विकल्प प्रकट करते हुए, उन्हें जोड़ने का काम करते हैं, वे विभाजक कहलाते हैं। विभाजक समुच्चयबोधकों को 'विकल्पक' भी कहा जाता है; जैसे—

- तुम्हें अपने जन्मदिन पर कैमरा चाहिए या मोबाइल फ़ोन?
- पार्टी में तुम स्वयं जाओगे अथवा वह तुम्हें लेने आएगा?

उपर्युक्त वाक्यों में प्रयुक्त 'या', 'अथवा' ऐसे समुच्चयबोधक हैं जो दो वाक्यांशों या वाक्यों में विकल्प प्रकट करते हुए उन्हें जोड़ने का काम कर रहे हैं। ये दोनों 'विभाजक' या विकल्पक हैं।

(ग) विरोधदर्शक—जो समुच्चयबोधक दो कथनों में से प्रथम का विरोध करें या निषेध करें, वे विरोधदर्शक कहलाते हैं; जैसे—

- उसने बहुत प्रयास किया मगर प्रतियोगिता जीत न सका।
- वह मेहनती ही नहीं बल्कि ईमानदार भी है।

उपर्युक्त वाक्यों में प्रयुक्त 'मगर' तथा 'बल्कि' ऐसे समुच्चयबोधक हैं जो दो कथनों में से एक का विरोध या निषेध कर रहे हैं। ये विरोधदर्शक हैं।

किन्तु, परन्तु, लेकिन, बल्कि, वरन् विरोधदर्शक हैं।

(घ) परिणामदर्शक—जो अव्यय (समुच्चयबोधक) पहले उपवाक्य और उसके परिणाम का संकेत करने वाले दूसरे उपवाक्य को जोड़ते हैं, वे परिणामदर्शक कहलाते हैं; जैसे—

- शान्त होकर बैठो वरना बाहर निकाल दिए जाओगे।
- मेहनत नहीं की इसलिए फ़ेल हो गए।
- उसने मेहनत की थी अत: टीम में चुन लिया गया।

उपर्युक्त वाक्यों में प्रयुक्त 'वरना' 'इसलिए', 'अत:' ऐसे समुच्चयबोधक हैं जो पहले उपवाक्य तथा उसके परिणाम का संकेत करने वाले उपवाक्य को जोड़ने का काम कर रहे हैं। ये 'परिणामदर्शक' हैं।

अन्यथा, वरना, नहीं तो, अत:, इसलिए परिणामदर्शक हैं।

2. व्यधिकरण समुच्चयबोधक

जो समुच्चयबोधक एक या एक से अधिक आश्रित उपवाक्यों को प्रधान उपवाक्य से जोड़ते हैं, उन्हें व्यधिकरण समुच्चयबोधक कहा जाता है; जैसे—यद्यपि··· तथापि, क्योंकि, मानो, चूँकि, इसलिए, कि, ताकि आदि।

व्यधिकरण समुच्चयबोधक भी चार प्रकार के होते हैं—

(क) हेतुबोधक (ख) संकेतबोधक (ग) स्वरूपबोधक (घ) उद्देश्यबोधक

(क) हेतुबोधक (कारणबोधक)—'हेतु' का अर्थ है 'कारण'। जो समुच्चयबोधक वाक्य में कार्य-कारण का बोध कराएँ या केवल कारण का बोध कराएँ, उन्हें हेतुबोधक कहा जाता है; जैसे—

- मेरे दादा जी यहाँ नहीं आ सके क्योंकि वे बीमार थे।
- वह निर्धन है इसलिए कोई उपहार न ला सका।

उपर्युक्त वाक्यों में प्रयुक्त—'क्योंकि', 'इसलिए' ऐसे समुच्चयबोधक हैं जो कार्यकारण का बोध करा रहे हैं। ये दोनों हेतुबोधक या कारणबोधक हैं।

क्योंकि, ताकि, इसलिए, चूँकि हेतुबोधक या कारणबोधक हैं।

(ख) संकेतबोधक—जो समुच्चयबोधक दो उपवाक्यों को संकेत से जोड़ते हैं, उन्हें संकेतबोधक कहते हैं;

- यदि तुम परिश्रम करोगे तो सफलता अवश्य मिलेगी।
- यद्यपि वर्षा हुई तथापि गर्मी कम न हुई।

उपर्युक्त वाक्यों में—'यदि''तो', 'यद्यपि''तथापि' ऐसे शब्द हैं जो दो-दो उपवाक्यों को संकेत से जोड़ते 'संकेतबोधक' हैं।

यद्यपि''तथापि, यदि''तो, चाहे''फिर भी संकेतबोधक हैं।

(ग) स्वरूपबोधक—जो समुच्चयबोधक पहले उपवाक्य या वाक्यांश के अर्थ को अधिक स्पष्ट करने करते हैं, उन्हें स्वरूपबोधक कहा जाता है; जैसे—

- वह गांधीवादी है यानी सत्य-अहिंसा का पुजारी है।
- वह गुरुघंटाल है अर्थात् बहुत चालाक है।

उपर्युक्त वाक्यों में प्रयुक्त 'यानी' तथा 'अर्थात्' ऐसे समुच्चयबोधक हैं जो पहले उपवाक्य के अर्थ उपवाक्य में अधिक स्पष्ट कर रहे हैं। ये स्वरूपबोधक हैं।

अर्थात्, यानी, मानो आदि स्वरूपबोधक हैं।

(घ) उद्देश्यबोधक—जो समुच्चयबोधक आश्रित उपवाक्यों से पूर्व आकर मुख्य या प्रधान उपवाक्य का स्पष्ट करते हैं, उन्हें उद्देश्यबोधक कहते हैं; जैसे—

- मनीषा मन लगाकर पढ़ रही है ताकि प्रथम स्थान प्राप्त कर सके।
- यात्री तेज़ दौड़ा जिससे कि गाड़ी पकड़ सके।

उपर्युक्त वाक्यों में प्रयुक्त 'ताकि' और 'जिससे कि' ऐसे समुच्चयबोधक हैं जो आश्रित उपवाक्यों (प्रथम स्थ कर सके, गाड़ी पकड़ सके) से पूर्व आकर प्रधान उपवाक्यों (मनीषा मन लगाकर पढ़ती है, यात्री तेज़ दौड़ा) के को स्पष्ट करने का काम कर रहे हैं अर्थात् 'मनीषा' के मन लगाकर पढ़ने और 'यात्री के तेज़ दौड़ने' के उद्देश्यों क करते हैं।

ताकि, जिससे, जिससे कि, इसलिए, कि उद्देश्यबोधक हैं।

(घ) विस्मयादिबोधक (Interjection)

जो शब्द आश्चर्य (विस्मय), शोक, घृणा, प्रशंसा, प्रसन्नता, भय आदि मनोभावों का बोध कराते विस्मयादिबोधक अव्यय कहते हैं। उदाहरणार्थ—

- ओहो! तो तुम ही सब झगड़े की जड़ हो।
- अरे! तुम कब आए?
- वाह! क्या मौसम है।

इन वाक्यों में 'ओहो!, अरे!, वाह!' शब्दों के द्वारा मन के भिन्न-भिन्न भाव प्रकट हुए हैं। ऐसे श विस्मयादिबोधक अव्यय शब्द कहते हैं। विस्मयादिबोधक अव्यय शब्दों के आगे विस्मयादिबोधक चिह्न (!) लगाया जाता है।

कभी-कभी संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि शब्दों का प्रयोग भी विस्मयादिबोधक अव्यय शब्दों के रूप में किया ज जैसे—

- राम-राम! उसने बहुत बुरा किया। *(संज्ञा)*
- सुन्दर! तुमने बहुत अच्छा कैच लिया। *(वि*
- कौन! बाहर क्यों खड़े हो, भीतर आओ। *(सर्वनाम)*
- चुप! बक-बक मत करो। *(क्रि*

प्रमुख विस्मयादिबोधक अव्यय तथा उनके द्वारा प्रकट किए जाने वाले भाव या उद्‌गार—

भाव या उद्‌गार	विस्मयादिबोधक अव्यय
विस्मय (आश्चर्य)	अरे! क्या! एँ! हैं! ओहो!
हर्ष (उल्लास)	शाबाश! बहुत अच्छा! वाह! वाह-वाह!
घृणा (तिरस्कार)	छिः! धत्! धिक्! धिक्कार! हट! थू!
क्रोध	चुप! हट! परे हट!
शोक	हाय! ओफ़! हे राम! हा! आह!
प्रशंसा (प्रोत्साहन)	खूब! धन्य! शाबाश!
अनुमोदन	अच्छा! बहुत अच्छा! ठीक! बहुत ठीक! हाँ-हाँ!
चेतावनी	बचो! सावधान! होशियार!
भय	हाय! बाप रे! बाप रे बाप!
आशीर्वाद	जीते रहो! दीर्घायु हो!
सम्बोधन	अरे! हे! ओ!

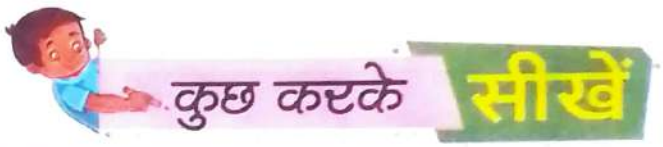

1. नीचे दिए गए उत्तरों के सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) जिन शब्दों का रूप लिंग, वचन, कारक और काल के अनुसार नहीं बदलता, वे क्या कहलाते हैं?

(i) क्रिया ( ) (ii) विशेषण ( ) (iii) सर्वनाम ( ) (iv) अव्यय ( )

(ख) 'वह अचानक चिल्ला पड़ा।' —इस वाक्य में रंगीन क्रियाविशेषण शब्द का प्रकार है—

(i) परिमाणवाचक ( ) (ii) रीतिवाचक ( ) (iii) स्थानवाचक ( ) (iv) कालवाचक ( )

(ग) सम्बन्धबोधक अव्यय क्या काम करते हैं?

(i) क्रिया की विशेषता बताते हैं ( ) (ii) वाक्य के पदों में परस्पर सम्बन्ध बताते हैं ( )

(iii) आश्चर्य का भाव प्रकट करते हैं ( ) (iv) दो पदबन्धों को जोड़ते हैं ( )

(घ) सड़क पर ..... देखकर चलो।

(i) बाहर ( ) (ii) भीतर ( ) (iii) सामने ( ) (iv) पीछे ( )

(ङ) दो वाक्यों के जोड़ने वाले शब्दों को ..... कहते हैं।

(i) क्रियाविशेषण ( ) (ii) सम्बन्धबोधक ( ) (iii) समुच्चयबोधक ( ) (iv) विस्मयादिबोधक ( )

(च) खूब मेहनत करो ..... परीक्षा में प्रथम आओ।

(i) अन्यथा ( ) (ii) ताकि ( ) (iii) इसलिए ( ) (iv) परन्तु ( )

(छ) आश्चर्य/विस्मय व्यक्त करने वाला अव्यय शब्द है—

(i) सावधान! (ii) अरे! (iii) जीते रहो! (iv) ठीक है!

(ज) हाय!, उफ़!, आह! किस भाव को व्यक्त करते हैं?

(i) आशीर्वाद (ii) शोक/पीड़ा (iii) चेतावनी (iv) आश्चर्य

2. नीचे लिखे वाक्यों में से क्रियाविशेषण शब्द छाँटकर लिखिए—

(क) तुम मेरे साथ कब चलोगी? ....

(ख) सुधीर परसों अक्षरधाम जाएगा। ....

(ग) मीना ने कॉफी धीरे-धीरे पी। ....

(घ) राहुल दिल्ली अभी जाएगा। ....

(ङ) कल्पना उधर गई है। ....

3. क्रियाविशेषण शब्दों से रिक्त स्थान भरिए—

(क) .... मुड़ते ही हमारा स्कूल आएगा।

(ख) नेहा बेटी .... सो जाओ।

(ग) अक्षरा ने खाना .... बना लिया।

(घ) दया रानी सत्यनारायण की पूजा .... कराएगी।

(ङ) सब्ज़ी .... खरीदना।

4. निम्नलिखित वाक्यों में से सम्बन्धबोधक शब्द छाँटकर लिखिए—

(क) मेरे घर के निकट प्रगति मैदान है। ....

(ख) कल की अपेक्षा आज अधिक सर्दी है। ....

(ग) पिता की तरह युवराज भी क्रिकेट खेलेगा। ....

(घ) कम्प्यूटर के सामने महिमा बैठी हुई है। ....

(ङ) लाठी के सहारे बूढ़ा चल रहा है। ....

5. निम्नलिखित वाक्यों में से समुच्चयबोधक शब्द छाँटकर सामने लिखिए—

(क) नेहवाल, गौतम या सानिया को पुरस्कार मिलेगा। ....

(ख) आशा और लिलि मिलकर गाएँगे। ....

(ग) विकास को बुला लो क्योंकि सामान खरीदना है। ....

(घ) अक्षय ईमानदारी से काम करेगा तो दिव्या खुश होगी। ....

(ङ) अम्बिका चुप रही अन्यथा राहुल डाँट देता। ....

6. उपयुक्त समुच्चयबोधकों द्वारा रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) तेज़ चलो ..... बस पकड़ सको।

(ख) तुमने मेहनत नहीं की ..... अनुत्तीर्ण हो गए।

(ग) तुम अनुत्तीर्ण हो गए ..... तुमने मेहनत नहीं की।

(घ) ..... वह निर्धन है ..... ईमानदार है।

(ङ) मैंने तुम पर विश्वास किया ..... तुम तो आस्तीन के साँप निकले।

7. उचित समुच्चयबोधक से वाक्यों को जोड़कर एक वाक्य बनाइए—

(क) मॉनीटर ने चॉक उठाया। मॉनीटर ने चॉक से आवश्यक सूचना लिखी।

(ख) इरशाद लँगड़ाकर चल रहा है। इरशाद को चोट लग गई है।

(ग) रेशमा परिश्रम कर रही है। रेशमा प्रथम आना चाहती है।

(घ) मयंक गृह-कार्य करता है। मयंक को डाँट न पड़े।

(ङ) मेरी बहन आई है। मुझे उसके साथ घूमने जाना है।

8. रिक्त स्थानों में उपयुक्त विस्मयादिबोधक शब्द भरिए—

(क) ..... कितना सुहावना दृश्य है।

(ख) ..... तुझे अभी मज़ा चखाता हूँ।

(ग) ..... उसने परिवार का नाम रोशन कर दिया।

(घ) ..... धिक्कार है ऐसे पापियों को।

(ङ) ..... मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगा।

(च) ..... बेचारे का सब कुछ लुट गया।

9. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

(क) क्रियाविशेषण किसे कहते हैं ?

(ख) विशेषण और क्रियाविशेषण में सोदाहरण अन्तर बताइए।

(ग) सम्बन्धबोधक अव्यय की परिभाषा दीजिए।

(घ) क्रियाविशेषण व सम्बन्धबोधक में क्या अन्तर है? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

(ङ) समुच्चयबोधक वाक्य में क्या काम करता है ?

(च) व्यधिकरण समुच्चयबोधक के चार उदाहरण लिखिए।

(छ) विस्मयादिबोधक अव्यय किसे कहते हैं ?

(ज) संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया-शब्दों का प्रयोग विस्मयादिबोधक अव्यय के रूप में कीजिए।

रचनात्मक गतिविधियाँ

1. प्रस्तुत गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा उसमे प्रयुक्त समुच्चयबोधक अव्ययों को रेखांकित कीजिए—

उसने देखा कि कुएँ के पास कुछ लोग नहाकर और कपड़े धोकर पानी बरबाद कर रहे थे और दूसरी ओर कई लोग लिए गिड़गिड़ा रहे थे। उसका दिल करुणा से भर आया। उसने एक के हाथ से बालटी ले ली। फिर वह उन प्यासे पास पहुँचा और उन्हें पानी पिलाने लगा। कुछ लोगो ने विरोध किया लेकिन उसने किसी की बात पर ध्यान नहीं दिया।

2. विभिन्न मनोभावो को व्यक्त करते हुए चेहरे बनाइए। प्रत्येक के नीचे इन मनोभावों से जुड़े दो-दो वाक्य लिखिए विस्मयादिबोधक अव्यय शब्द प्रयुक्त हुए हों।

3. दी गई वर्ग-पहेली से क्रियाविशेषण शब्द चुनकर सही स्थान पर लिखिए—

आ	अ	भी	ते	ज़
ज	उ	त	ना	क
इ	ध	र	ग	सुं
क	म	थो	ड़ा	द
प	ह	ले	ख	र

कालवाचक क्रियाविशेषण	स्थानवाचक क्रियाविशेषण	रीतिवाचक क्रियाविशेषण	परिमाणवाचक क्रियाविशेषण
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....

10

सन्धि
Joining

दो शब्द या पद जब एक-दूसरे के निकट होते हैं तब उच्चारण की सुविधा और संक्षेपीकरण के लिए पहले शब्द की अन्तिम और दूसरे शब्द की प्रारम्भिक ध्वनियाँ एक-दूसरे से मिला दी जाती हैं। जब दो ध्वनियाँ मिलती हैं तब उनके मेल से विकार उत्पन्न होता है। यह विकार ही सन्धि कहलाता है। इसके विपरीत सन्धियुक्त पदों को अलग-अलग कर देना सन्धि-विच्छेद कहलाता है। उदाहरणार्थ—

रमा	+	ईश	= रमेश	दिक्	+	अम्बर	= दिगम्बर
भानु	+	उदय	= भानूदय	मन:	+	हर	= मनोहर
जगत्	+	नाथ	= जगन्नाथ	हरि:	+	चन्द्र	= हरिश्चन्द्र

सन्धि के भेद

सन्धि के तीन भेद होते हैं—

1. स्वर सन्धि, 2. व्यंजन सन्धि तथा 3. विसर्ग सन्धि।

सन्धि के भेद को जानने के लिए सन्धि-चिह्न (+) से पूर्व स्वर होने पर स्वर सन्धि, हलन्त लगने पर व्यंजन सन्धि तथा विसर्ग होने पर विसर्ग सन्धि होती है; जैसे—

विद्या	+	आलय	= विद्यालय	*(स्वर सन्धि)*
वाक्	+	ईश	= वागीश	*(व्यंजन सन्धि)*
नि:	+	बल	= निर्बल	*(विसर्ग सन्धि)*

1. स्वर सन्धि

दो स्वरों के मेल से जो परिवर्तन अथवा विकार उत्पन्न होता है, उसे स्वर सन्धि कहते हैं। स्वर सन्धि के पाँच भेद होते हैं—

(क) दीर्घ सन्धि—जब ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ के आगे वही ह्रस्व या दीर्घ स्वर आ जाए तो दोनों के स्थान पर दीर्घ स्वर हो जाता है; जैसे—

परम	+	आत्मा	= परमात्मा	(अ	+	आ	=	आ)
विद्या	+	आलय	= विद्यालय	(आ	+	आ	=	आ)
कपि	+	ईश	= कपीश	(इ	+	ई	=	ई)
भानु	+	उदय	= भानूदय	(उ	+	उ	=	ऊ)
वधू	+	उत्सव	= वधूत्सव	(ऊ	+	उ	=	ऊ)

(ख) यण् सन्धि—यदि ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, ऋ के आगे कोई असमान स्वर आता है तो इ, ई का य्; उ, ऊ का व् और ऋ का र् हो जाता है; जैसे—

यदि	+	अपि	=	यद्यपि	(इ	+	अ	य)
अति	+	आवश्यक	=	अत्यावश्यक	(इ	+	आ	या)
सु	+	आगत	=	स्वागत	(उ	+	आ	वा)
पितृ	+	आज्ञा	=	पित्राज्ञा	(ऋ	+	आ	रा)

(ग) गुण सन्धि—यदि अ या आ के आगे इ या ई आए तो दोनों के स्थान पर ए; उ या ऊ आए तो दोनों के ओ; ऋ आए तो दोनों के स्थान पर अर् हो जाता है; जैसे—

स्व	+	इच्छा	=	स्वेच्छा	(अ	+	इ	ए)
सुर	+	ईश	=	सुरेश	(अ	+	ई	ए)
पर	+	उपकार	=	परोपकार	(अ	+	उ	ओ)
महा	+	उत्सव	=	महोत्सव	(आ	+	उ	ओ)
देव	+	ऋषि	=	देवर्षि	(अ	+	ऋ	अर्)

(घ) वृद्धि सन्धि—यदि अ या आ के आगे ए या ऐ आए तो दोनों के स्थान पर ऐ; ओ या औ आए तो दोनों पर औ हो जाता है; जैसे—

एक	+	एक	=	एकैक	(अ	+	ए	ऐ)
सदा	+	एव	=	सदैव	(आ	+	ए	ऐ)
महा	+	ऐश्वर्य	=	महैश्वर्य	(आ	+	ऐ	ऐ)
वन	+	औषध	=	वनौषध	(अ	+	औ	औ)

(ङ) अयादि सन्धि—यदि ए, ऐ, ओ, औ के आगे कोई असमान स्वर आए तो ये क्रमशः अय्, आय्, अव्, आव् बदल जाते हैं; जैसे—

ने	+	अन	=	नयन	(ए	+	अ	अय्)
गै	+	अक	=	गायक	(ऐ	+	अ	आय्)
पो	+	अन	=	पवन	(ओ	+	अ	अव्)
पौ	+	अक	=	पावक	(औ	+	अ	आव्)

2. व्यंजन सन्धि

जब पहले शब्द के अन्त में कोई व्यंजन तथा दूसरे शब्द के आरम्भ में कोई स्वर या व्यंजन हो तो उनके बीच वाले मेल को व्यंजन सन्धि कहते हैं। व्यंजन सन्धि के प्रमुख नियम इस प्रकार हैं—

(क) यदि विभिन्न वर्गों के पहले व्यंजन के आगे कोई स्वर आए तो पहला व्यंजन अपने वर्ग के तीसरे वर्ण में बदल जाता है; जैसे—

जगत्	+	ईश्वर	=	जगदीश्वर	(त्	+	ई	दी)
वाक्	+	ईश	=	वागीश	(क्	+	ई	गी)
सत्	+	आचार	=	सदाचार	(त्	+	आ	दा)
दिक्	+	अन्त	=	दिगन्त	(क्	+	अ	ग)

(ख) यदि विभिन्न वर्गों के पहले व्यंजन के बाद किसी वर्ग का तीसरा, चौथा या अन्तःस्थ व्यंजन आया हो तो वह अपने वर्ग के तीसरे व्यंजन में बदल जाता है; जैसे—

दिक्	+	गज	= दिग्गज	(क्	+	ग	ग्ग)
उत्	+	घाटन	= उद्घाटन	(त्	+	घा	द्घा)
वाक्	+	बल	= वाग्बल	(क्	+	ब	ग्ब)

(ग) यदि किसी शब्द के अन्त में त् आया हो और उसके बाद च या छ हो तो त् बदलकर च् हो जाता है; जैसे—

सत्	+	चरित्र	= सच्चरित्र	उत्	+	चारण	= उच्चारण
उत्	+	छवास	= उच्छ्वास	शरत्	+	चन्द्र	= शरच्चन्द्र

(घ) यदि पहले शब्द के अन्त में त् और दूसरे शब्द के आरम्भ में स हो तो त् ज्यों का त्यों रहता है; जैसे—

सत्	+	साहस	= सत्साहस	सत्	+	संग	= सत्संग
सत्	+	संकल्प	= सत्संकल्प	उत्	+	सर्ग	= उत्सर्ग

(ङ) यदि पहले शब्द के अन्त में क्, ट् या त् आए हों और दूसरे शब्द के आरम्भ मे म, न हो तो क्, ट् और त् को उच्चम वर्ण में बदल देते हैं; जैसे—

जगत्	+	नाथ	= जगन्नाथ	सत्	+	मार्ग	= सन्मार्ग
तत्	+	मय	= तन्मय	उत्	+	नति	= उन्नति

(च) यदि त् के बाद ज और ल आए हों तो त् बदलकर क्रमशः ज् और ल् हो जाता है; जैसे—

उत्	+	ज्वल	= उज्ज्वल	उत्	+	लास	= उल्लास
तत्	+	लीन	= तल्लीन	सत्	+	जन	= सज्जन

3. विसर्ग सन्धि

जब पहले शब्द के अन्त में विसर्ग और दूसरे शब्द के आरम्भ में स्वर या व्यंजन हो तो उन दोनों के बीच होने वाले मेल को विसर्ग सन्धि कहते हैं। विसर्ग सन्धि के प्रमुख नियम इस प्रकार हैं—

(क) यदि विसर्ग के बाद च, छ, श व्यंजन आए हों तो विसर्ग श् में बदल जाता है; जैसे—

निः	+	चल	= निश्चल	निः	+	छल	= निश्छल
दुः	+	चरित्र	= दुश्चरित्र	हरिः	+	चन्द	= हरिश्चन्द्र

(ख) यदि पहले शब्द के अन्त में विसर्ग और दूसरे शब्द के आरम्भ में त् या स् हो तो विसर्ग स् में बदल जाता है; जैसे—

निः	+	तेज	= निस्तेज	मनः	+	ताप	= मनस्ताप
नमः	+	ते	= नमस्ते	दुः	+	तर	= दुस्तर

(ग) यदि पहले शब्द के अन्त में विसर्ग और दूसरे शब्द के आरम्भ में क, ट, प या फ हो तो विसर्ग ष जाता है; जैसे—

निः	+ कपट	= निष्कपट		धनुः	+ टंकार	= धनुष्टंकार
निः	+ काम	= निष्काम		दुः	+ कर्म	= दुष्कर्म

(घ) यदि पहले शब्द के अन्त में विसर्ग और दूसरे शब्द के आरम्भ में र आया हो तो विसर्ग हट जाता है और पूर्व का ह्रस्व स्वर दीर्घ हो जाता है; जैसे—

निः	+ रस	= नीरस		निः	+ रव	= नीरव
निः	+ रोग	= नीरोग		निः	+ रज	= नीरज

(ङ) यदि इः, उः के बाद स्वर या सघोष व्यंजन आया हो तो विसर्ग र् में बदल जाता है; जैसे—

निः	+ आशा	= निराशा		निः	+ अपराध	= निरपराध
निः	+ आहार	= निराहार		दुः	+ उपयोग	= दुरुपयोग

सघोष/अघोष व्यंजन—प्रत्येक वर्ग का पहला, दूसरा और श, ष, स अघोष व्यंजन होते हैं। शेष सब सघोष होते हैं।

(च) यदि अः के बाद सघोष व्यंजन आया हो तो अः का ओ हो जाता है; जैसे—

मनः	+ रोग	= मनोरोग		मनः	+ योग	= मनोयोग
मनः	+ बल	= मनोबल		तमः	+ गुण	= तमोगुण

(छ) यदि अः के बाद क, ख या प, फ आए हों तो विसर्ग सुरक्षित रहता है; जैसे—

अधः	+ पतन	= अधःपतन		अन्तः	+ करण	= अन्तःकरण
प्रातः	+ काल	= प्रातःकाल		पुनः	+ फलित	= पुनःफलित

कुछ करके सी

1. नीचे दिए गए उत्तरों के सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) इनके मेल को सन्धि कहते हैं—

(i) दो वर्णों ◯ (ii) दो ध्वनियों ◯ (iii) दो पदों

(ख) 'विद्यालय' शब्द का सही सन्धि-विच्छेद है—

(i) विद्य + आलय ◯ (ii) विद्या + अलय ◯ (iii) विद्या + आलय

(ग) 'रामेश्वर' शब्द का सही सन्धि-विच्छेद है—

(i) रामा + ईश्वर ◯ (ii) राम + ईश्वर ◯ (iii) रमा + ईश्वर

(घ) 'नमस्ते' शब्द का सही सन्धि-विच्छेद है—

(i) नम् + ते ◯ (ii) नमः + स्ते ◯ (iii) नमः + ते

निम्नलिखित शब्दों का सन्धि-विच्छेद कीजिए और सन्धि का नाम भी लिखिए—

शब्द	सन्धि-विच्छेद	सन्धि का नाम
वेदान्त	....	....
प्रतीक्षा	....	....
भारतेन्दु	....	....
सदैव	....	....
स्वागत	....	....
गायक	....	....

5. निम्नलिखित सन्धि विच्छेदों में सन्धि कीजिए। सन्धि का नाम भी लिखिए—

सन्धि-विच्छेद	सन्धि	सन्धि का नाम
परम + ईश्वर	....	....
महा + औषध	....	....
प्रति + एक	....	....
सम् + सार	....	....
भो + अन	....	....

4. सही कथन के सामने सही (✓) का तथा गलत कथन के सामने गलत (✗) का चिह्न लगाइए—

(क) दीपावली शब्द में व्यंजन सन्धि है। ☐

(ख) यशोदा शब्द में स्वर सन्धि है। ☐

(ग) महोदय शब्द का सन्धि-विच्छेद है—महा + उदय। ☐

(घ) स्वागत शब्द का सन्धि-विच्छेद है—स्वा + आगत। ☐

(ङ) स्वर सन्धि में स्वर और व्यंजन का मेल होता है। ☐

5. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

(क) सन्धि किसे कहते हैं?

(ख) सन्धि कितने प्रकार की होती है? प्रत्येक के दो-दो उदाहरण दीजिए।

(ग) स्वर सन्धि क्या है? इसके भेद बताइए।

(घ) गुण सन्धि और वृद्धि सन्धि में क्या अन्तर है?

(ङ) विसर्ग सन्धि के दो नियम लिखिए और उदाहरण दीजिए।

रचनात्मक गतिविधियाँ

- सन्धि के तीनों भेद (स्वर सन्धि, व्यंजन सन्धि और विसर्ग सन्धि) के नाम अलग-अलग पर्चियों पर लिख लें। एक-एक पर्ची अपनी कक्षा के छात्रों को दें। जिस छात्र को जो पर्ची मिलती है, वह उस सन्धि के तीन-तीन शब्द बताए। अगर कोई छात्र तीन शब्द नहीं बतलाता है तो दूसरा उसकी मदद करे।

11 शब्द-रचना : उपसर्ग, प्रत्यय और
(Prefix, Suffix and Compound

हिन्दी भाषा में शब्द-रचना में जो विधियाँ प्रयोग में लाई जाती हैं उनमें उपसर्ग, प्रत्यय तथा समास का प्रमु
है।

उपसर्ग

कुछ शब्दांश ऐसे होते हैं जो किसी शब्द से पूर्व लगकर उसके अर्थ में कुछ विशेषता या परिवर्तन ला देते
शब्दांश उपसर्ग कहलाते हैं। इनके योग से नवीन शब्द की रचना हो जाती है; जैसे—पराक्रम, उपहार।

यहाँ 'परा' और 'उप' उपसर्ग के कारण 'क्रम' तथा 'हार' शब्दों के अर्थ में विशेषता आ गयी है। अत: परा
अर्थ हो गया है—बल, शौर्य; और उपहार का अर्थ हो गया है—भेंट, सौगात।

उपसर्ग के प्रकार

हिन्दी में मुख्यत: तीन प्रकार के उपसर्गों से नवीन शब्दों की रचना की जाती है—1. संस्कृत उपसर्ग, 2. हिन्दी उ
तथा 3. उर्दू और अरबी-फ़ारसी के उपसर्ग।

1. संस्कृत उपसर्ग

उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
अन्त:/अन्तर्	भीतर	अन्त:करण, अन्तर्मन, अन्तर्यामी, अन्तर्देशीय
अति	अधिक, सीमा से परे	अत्याचार, अतिशय, अतिरिक्त, अत्यधिक
अधि	श्रेष्ठ, ऊपर, अधिक	अधिकृत, अधिपत्र, अधिनायक, अधिभार
अनु	पीछे, छोटा, समानता	अनुशासन, अनुताप, अनुबन्ध, अनुचर, अनुरूप
अप	बुरा, विरुद्ध	अपयश, अपवाद, अपभ्रंश, अपमान, अपव्यय
अभि	सामने, अधिकता	अभिव्यक्त, अभिलेख, अभिनेता, अभिनव
अव	बुरा, हीन	अवमान, अवसान, अवशेष, अवतार
आ	तक, सहित	आजन्म, आमरण, आजीवन, आगमन
उद्	ऊपर, उत्कर्ष	उद्भव, उद्देश्य, उद्दण्ड, उद्घाटन, उद्घोष
उप	छोटा, अच्छा, निकट	उपमन्त्री, उपकार, उपदेश, उपवन, उपनिवेश, उपस्थित
निर्	निषेध	निर्विघ्न, निर्भय, निरपराध, निर्बल
नि	नीचे, भीतर, अच्छी तरह	निरंजन, निमग्न, नियोजन, नियोग, निवास, निरूपण
परा	अधिक, उलटा	पराक्रम, परागमन, पराशक्ति, परामर्श, पराजय, पराभव

उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
परि	चारों ओर, अधिक	परिमल, परिभाषा, परिपूर्ण, परिश्रम, परिणाम, परिजन
पर	अन्य	पराश्रय, परलोक, परवर्ती, परोपकार
प्र	अधिक, आगे	प्रशासन, प्रवचन, प्रयास, प्रदर्शन, प्रबल, प्रचार, प्रसार, प्रगति
प्रति	प्रत्येक, विरोध	प्रतिमास, प्रतिदिन, प्रतिपल, प्रतिशत, प्रतिकूल, प्रतिवाद
स	सहित	सजल, सफल, सपरिवार, सचित्र, सबल
सह	साथ	सहपाठी, सहशिक्षा, सहभोज, सहोदर
सु	शुभ, अच्छा, सुन्दर	सुपुत्री, सुशान्त, सुमति, सुपथ, सुकर्म, सुवास
स्व	अपना	स्वदेश, स्वभाव, स्वाभिमान

हिन्दी उपसर्ग

अ	अभाव	अपलक, अस्पष्ट, अचल, अटल, अछूता
अध	आधा	अधकचरा, अधखिली, अधजल, अधपका
अन	निषेध, अभाव	अनबूझ, अनबोल, अनपढ़, अनमोल, अनसुनी, अनजान
उन	एक कम	उनसठ, उनचास, उनतीस, उनहत्तर
औ, अव	हीन	औढर, औगुण, औचट, अवलेह, अवगुण
क, कु	बुरा	कपटी, कपूत, कुलच्छन, कुचाल, कुमति, कुकर्म
चौ	चार	चौपाया, चौमुखा, चौपहिया, चौदह, चौराहा
नि	नहीं, रहित	निपट, निपूती, निठल्ली, निहत्था, निकम्मा, निडर
पर	दूसरा, दूसरी पीढ़ी	परदादा, परदादी, परनाना, परनानी, परोपकार
बिन	रहित	बिनबुलाया, बिनबोया, बिनपानी, बिनपूत, बिनब्याही
भर	भरा हुआ	भरसक, भरपेट, भरपूर, भरमार
सु, स	सहित, सुन्दर, अच्छा	सकुशल, सज़िल्द, सुनाम, सपूत, सुवास, सुगन्ध

3. उर्दू और अरबी-फ़ारसी के उपसर्ग

उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
कम	हीन, थोड़ा	कमबख्त, कमज़ोर
खुश	प्रसन्न, अच्छा	खुशनसीब, खुशबू, खुशमिज़ाज, खुशहाल
दर	में	दरअसल, दरमियान, दरकिनार, दरकार
ना	नहीं	नाउम्मीद, नामुमकिन, नादान, नाराज़, नासमझ, नापसन्द
ब	साथ	बदस्तूर, बमुश्किल, बदौलत, बखूबी, बनाम
बद	बुरा	बदशक्ल, बदअक्ल, बदमिज़ाज, बदचलन, बदनाम

उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
ला	बिना	लापरवाह, लाइलाज, लापता, लावारिस, लाजवाब
सर	प्रमुख	सरपंच, सरदार, सरताज़, सरनामा, सरहद
हम	साथ	हमसफ़र, हमशक्ल, हमनाम, हमसाया, हमउम्र

प्रत्यय

जो शब्दांश किसी शब्द के अन्त में जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं, प्रत्यय कहलाते हैं। प्रत्यय संज्ञा अथवा क्रिया (धातु) के अन्त में जोड़े जाते हैं। उदाहरणार्थ—

धनवान, मित्रता और लिखावट—ये शब्द धन, मित्र और लिख शब्दों के पीछे वान, ता और आवट शब्दांश जुड़कर बने हैं। धन, मित्र और लिख मूल शब्द हैं। वान, ता और आवट प्रत्यय हैं।

प्रत्यय के प्रकार

प्रत्यय मुख्यत: दो प्रकार के होते हैं—1. कृत प्रत्यय तथा 2. तद्धित प्रत्यय।

1. कृत प्रत्यय

जो शब्दांश क्रिया के धातु-रूप के अन्त में जुड़ते हैं, वे कृत प्रत्यय कहलाते हैं। कृत प्रत्यय जुड़कर संज्ञा, विशेषण शब्दों की रचना होती है, जो कृदन्त कहलाते हैं। ये निम्नलिखित पाँच प्रकार के होते हैं—

(क) कर्तृवाचक कृदन्त—इस प्रत्यय से बने शब्दों से कार्य करने वाले अर्थात् कर्ता का बोध होता है—

प्रत्यय	शब्द	कृदन्त
अक्कड़	घूम, भूल	घुमक्कड़, भुलक्कड़
आऊ	कमा, चल, बिक	कमाऊ, चलाऊ, बिकाऊ
आलू	झगड़ा, लजा	झगड़ालू, लजालू
वाला	खा, पी, लिख, रख	खानेवाला, पीनेवाला, लिखनेवाला, रखवाला
इयल	मर, अड़	मरियल, अड़ियल
आड़ी	खेल	खिलाड़ी
एरा	लूट, कमा	लुटेरा, कमेरा

(ख) कर्मवाचक कृदन्त—इस प्रत्यय से बने शब्दों से कर्म का बोध होता है—

औना	बिछ, खेल	बिछौना, खिलौना
नी	ओढ़, धौंक	ओढ़नी, धौंकनी
ना	गा, ओढ़	गाना, ओढ़ना
हुई	लिख, देख, सुन	लिखी हुई, देखी हुई, सुनी हुई

(ग) करणवाचक कृदन्त—इस प्रत्यय से बने शब्दों से क्रिया के करण-रूप साधनों का बोध होता है—

अन	बेल, ढक, झाड़	बेलन, ढक्कन, झाड़न
आ	घेर, झूल	घेरा, झूला
नी	कतर, सूँघ, ओढ़, फूँक	कतरनी, सूँघनी, ओढ़नी, फूँकनी
ई	फाँस, बुहार, रेत	फाँसी, बुहारी, रेती

(घ) भाववाचक कृदन्त—इस प्रत्यय से बने शब्दों से भाव के व्यापार का बोध होता है—

आई	उतर, कमा, बुन, काट	उतराई, कमाई, बुनाई, कटाई
	धो, पढ़, सी, लड़	धुलाई, पढ़ाई, सिलाई, लड़ाई
आवट	लिख, दिख, मिल	लिखावट, दिखावट, मिलावट
आहट	मुसकरा, घबरा, गुर्रा	मुसकराहट, घबराहट, गुर्राहट
आव	बह, बच, खींच	बहाव, बचाव, खिंचाव
आन	उड़, थक, मिल	उड़ान, थकान, मिलान

(ङ) क्रियावाचक कृदन्त—इस प्रत्यय के योग से क्रियाविशेषण/विशेष क्रिया-शब्दों का निर्माण होता है—

ता	चल, डूब, खा, पी, लिख, देख	चलता, डूबता, खाता, पीता, लिखता, देखता
ता हुआ	पढ़, खेल, रो	पढ़ता हुआ, खेलता हुआ, रोता हुआ
या	खा, आ, रो, पी, दिखा, सजा	खाया, आया, रोया, पिया, दिखाया, सजाया
कर	सुन, पढ़, लिख, आ	सुनकर, पढ़कर, लिखकर, आकर
ते ही	खा, पी, सुन, देख, पढ़	खाते ही, पीते ही, सुनते ही, देखते ही, पढ़ते ही
ते-ते	चल, रो, जा, आ	चलते-चलते, रोते-रोते, जाते-जाते, आते-आते

2. तद्धित प्रत्यय

जो शब्दांश क्रिया की धातुओं को छोड़कर संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और अव्यय शब्दों के अन्त में जुड़कर नए शब्दों का निर्माण करते हैं, वे तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं। तद्धित प्रत्ययों के योग से बने शब्द तद्धितान्त कहलाते हैं। तद्धित प्रत्ययों को निम्नलिखित वर्गों में बाँटा जा सकता है—

(क) कर्तृवाचक तद्धित—इनसे किसी कार्य को करने वाले का बोध होता है; जैसे—

प्रत्यय	शब्द	तद्धितान्त
गर	जादू, बाज़ी	जादूगर, बाज़ीगर
वाला	गाड़ी, दुकान, दूध	गाड़ीवाला, दुकानवाला, दूधवाला
आर	सोना, लोहा	सुनार, लोहार
आरी	भीख	भिखारी
कार	कला, चित्र, साहित्य, पत्र	कलाकार, चित्रकार, साहित्यकार, पत्रकार
हारा	लकड़ी	लकड़हारा
ई	तेल, रोग	तेली, रोगी

(ख) बहुवचनवाचक तद्धित—इन प्रत्ययों के योग से शब्द बहुवचनवाची बन जाते हैं; जैसे—

एँ	कन्या, लता, सेना, मेज़, सड़क, बहू, वधू, ऋतु, छात्रा	कन्याएँ, लताएँ, सेनाएँ, मेज़ें, सड़कें, बहुएँ, वधुएँ, ऋतुएँ, छात्राएँ
याँ	चिड़िया, चुहिया, गुड़िया, बुढ़िया	चिड़ियाँ, चुहियाँ, गुड़ियाँ, बुढ़ियाँ
इयाँ	नदी, साड़ी, दवाई, मक्खी	नदियाँ, साड़ियाँ, दवाइयाँ, मक्खियाँ

(ग) स्त्रीलिंगवाचक तद्धित—इन प्रत्ययों के प्रयोग से शब्द स्त्रीलिंगवाची बन जाते हैं; जैसे—

ई	चाचा, नाना, बेटा, ब्राह्मण,	चाची, नानी, बेटी, ब्राह्मणी,
इन	माली, ग्वाला, धोबी, पुजारी	मालिन, ग्वालिन, धोबिन, पुजारिन
आ	शिष्य, प्रिय, सुत, आत्मज, वृद्ध	शिष्या, प्रिया, सुता, आत्मजा, वृद्धा
आनी	जेठ, देवर, नौकर, इन्द्र, मेहतर	जेठानी, देवरानी, नौकरानी, इन्द्राणी, मेहतरा
नी	शेर, जाट, मोर, भील, सिंह	शेरनी, जाटनी, मोरनी, भीलनी, सिंहनी
आइन	बाबू, चौबे, दूबे, लाला, पण्डा	बबुआइन, चौबाइन, दुबाइन, ललाइन, पण्डाइ
इया	बूढ़ा, चूहा, कुत्ता, बन्दर, बेटा	बुढ़िया, चुहिया, कुतिया, बन्दरिया, बिटिया
इनी	तपस्वी, हाथी, स्वामी	तपस्विनी, हथिनी, स्वामिनी

(घ) स्थानवाचक तद्धित—इन प्रत्ययों के प्रयोग से स्थान का बोध होता है; जैसे—

इया	जयपुर, मुम्बई, कोलकाता	जयपुरिया, मुम्बइया, कोलकतिया
वाला	दिल्ली, मथुरा, कानपुर	दिल्लीवाला, मथुरावाला, कानपुरवाला
ई	बंगाल, बिहार, गुजरात	बंगाली, बिहारी, गुजराती
वी	लुधियाना, लखनऊ	लुधियानवी, लखनवी

(ङ) गुणवाचक तद्धित—इन प्रत्ययों से किसी वस्तु या प्राणी की विशेषता/गुण का बोध होता है; जैसे—

आ	मैल, प्यास, ठण्ड, भूल	मैला, प्यासा, ठण्डा, भूला
ई	भार, क्रोध, लोभ, कीमत, धन	भारी, क्रोधी, लोभी, कीमती, धनी
ईय	अनुकरण, दर्शन, प्रार्थना	अनुकरणीय, दर्शनीय, प्रार्थनीय
ईला	चमक, रंग, शर्म, बर्फ़	चमकीला, रंगीला, शर्मीला, बर्फ़ीला
इक	धर्म, अर्थ, उद्योग, दिन, समय	धार्मिक, आर्थिक, औद्योगिक, दैनिक, सामयिक
लु	दया, श्रद्धा	दयालु, श्रद्धालु
वान	धन, गुण	धनवान, गुणवान
ईन	नमक, रंग, शौक, नव	नमकीन, रंगीन, शौकीन, नवीन

(च) भाववाचक तद्धित—इन प्रत्ययों के योग से भाववाचक संज्ञाओं की रचना होती है; जैसे—

ता	मनुष्य, पशु, शत्रु, मित्र, सुन्दर	मनुष्यता, पशुता, शत्रुता, मित्रता, सुन्दरता
त्व	पशु, देव, स्त्री, नारी, व्यक्ति	पशुत्व, देवत्व, स्त्रीत्व, नारीत्व, व्यक्तित्व
आपा	बूढ़ा, पूजा	बुढ़ापा, पुजापा

पन	लड़का, बच्चा, पीला	लड़कपन, बचपन, पीलापन
ई	गरम, गरीब, बीमार, चालाक	गरमी, गरीबी, बीमारी, चालाकी
आई	अच्छा, चौड़ा, लम्बा, ऊँचा	अच्छाई, चौड़ाई, लम्बाई, ऊँचाई
इमा	काला, लाल, नीला	कालिमा, लालिमा, नीलिमा
आहट	चिकना, कड़वा	चिकनाहट, कड़वाहट

(छ) सम्बन्धवाचक तद्धित—इन प्रत्ययों के योग से सम्बन्धवाची शब्दों का निर्माण होता है; जैसे—

एरा	मामा, फूफा, मौसा	ममेरा, फुफेरा, मौसेरा
आल	ससुर, नाना	ससुराल, ननिहाल
एय	राधा, कुंती, भगिनी	राधेय, कौंतेय, भागिनेय

(ज) गणनावाचक तद्धित—इन प्रत्ययों के योग से संख्यावाची (क्रमवाची) शब्दों का बोध होता है; जैसे—

वाँ	नौ, दस, सात	नौवाँ, दसवाँ, सातवाँ
सरा	तीन, दो	तीसरा, दूसरा
हरा	एक, दो, तीन	इकहरा, दोहरा, तिहरा
गुना	दो, तीन, चार	दोगुना (दुगुना), तिगुना, चौगुना

(झ) लघुतावाचक तद्धित—इन प्रत्ययों से लघुतावाची शब्दों की रचना होती है; जैसे—

इया	खाट, डिब्बा	खटिया, डिबिया
ई	रस्सा, टोकरा, खुरपा, नाला	रस्सी, टोकरी, खुरपी, नाली
री	कोठा, छाता	कोठरी, छतरी
ड़ी	सन्दूक, पंख	सन्दूकड़ी, पंखुड़ी
टी	लंग	लँगोटी

(ञ) सादृश्यतावाचक तद्धित—इन प्रत्ययों के योग से बने शब्द सादृश्यता (समरूपता) का बोध कराते हैं; जैसे—

सा	नीला, गोरा	नीला-सा, गोरा-सा
हरा	सोना	सुनहरा
हला	रूपा (चाँदी)	रुपहला

समास

जब दो या दो से अधिक शब्द मिलकर एक सार्थक शब्द बनाते हैं, तो इस प्रक्रिया को समास कहते हैं। इस प्रकार, 'समास' का अर्थ है—'संक्षेप' या 'संयोग' अर्थात् दो या दो से अधिक शब्दों को मिलाकर एक कर देना। उदाहरणार्थ—

विष + धर = विषधर — विष को धारण करने वाला
रसोई + घर = रसोईघर — रसोई के लिए घर
सत्य + आग्रह = सत्याग्रह — सत्य के लिए आग्रह

इन उदाहरणों में 'विषधर', 'रसोईघर' और 'सत्याग्रह' समास के उदाहरण हैं। ये सभी 'सामासिक शब्द' या 'पद' हैं। सामासिक पद में सदैव दो पद होते हैं—पहले शब्द को 'पूर्व पद' और दूसरे शब्द को 'उत्तर पद' कहते हैं।

समास-विग्रह

समस्त पदों को तोड़ना अर्थात् अलग-अलग करने को समास विग्रह कहा जाता है; जैसे—
'राष्ट्रप्रेम'—समस्त पद का समास विग्रह हुआ—राष्ट्र के लिए प्रेम।

समास के भेद

समास के कुल छः भेद किए गए हैं—

1. अव्ययीभाव समास

जिस समास का प्रथम पद (पूर्व पद) प्रधान हो और वह अव्यय हो, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं; जैसे—

		सामासिक पद
('यथा'—अव्यय)	जैसा सम्भव हो	यथासम्भव
('प्रति'—अव्यय)	दिन दिन	प्रतिदिन
('आ'—अव्यय)	सारा जीवन	आजीवन
('भर'—अव्यय)	पेट भरकर	भरपेट
('बे'—अव्यय)	ईमान के बिना	बेईमान
('निः'—अव्यय)	बिना सन्देह के	निःसन्देह

अव्ययीभाव समास में इस प्रकार के उदाहरण भी आते हैं—
हाथ-ही-हाथ में — हाथोंहाथ प्रत्येक गली — गली-गली आराम से — धीरे-धीरे

2. तत्पुरुष समास

इस समास में पूर्व पद विशेषण तथा उत्तर-पद प्रधान होता है। समास करने पर दोनों शब्दों के बीच कर सम्बोधन कारकों की विभक्तियों को छोड़कर शेष कारकों की विभक्तियों का लोप हो जाता है। इसे तत्पुरुष समास है; जैसे— 'बैलगाड़ी' और 'अकालपीड़ित'—ये दोनों समस्त पद हैं। इनके क्रमशः विग्रह हैं—बैल की गाड़ी और से पीड़ित।

कारकों के नामों के अनुसार तत्पुरुष समास के छः भेद होते हैं—

(क)	कर्म तत्पुरुष	— चिड़ियों को मारने वाला	—	चिड़ीमार
		— ग्राम को गया हुआ	—	ग्रामगत
(ख)	करण तत्पुरुष	— मन से चाही	—	मनचाही
		— मुँह से माँगा हुआ	—	मुँहमाँगा
(ग)	सम्प्रदान तत्पुरुष	— माल के लिए गाड़ी	—	मालगाड़ी
		— राष्ट्र के लिए प्रेम	—	राष्ट्रप्रेम
(घ)	अपादान तत्पुरुष	— पथ से भ्रष्ट	—	पथभ्रष्ट
		— बुद्धि से हीन	—	बुद्धिहीन

(ङ)	सम्बन्ध तत्पुरुष	—	शिव का भक्त	—	शिवभक्त
		—	राजा का महल	—	राजमहल
(च)	अधिकरण तत्पुरुष	—	घोड़े पर सवार	—	घुड़सवार
		—	पेट में दर्द	—	पेटदर्द

3. कर्मधारय समास

जिस समास में उत्तर-पद प्रधान हो और पूर्व-पद तथा उत्तर-पद में विशेषण-विशेष्य, उपमान-उपमेय का सम्बन्ध हो, वह कर्मधारय समास कहलाता है; जैसे—

विशेषण-विशेष्य

लाल किला = लालकिला
अन्धा विश्वास = अन्धविश्वास
महान राजा = महाराजा
प्रधान आचार्य = प्रधानाचार्य

उपमान-उपमेय

घन (बादल) के समान श्याम = घनश्याम
कमल के जैसे चरण = चरणकमल
मृग के समान लोचन = मृगलोचन

4. द्विगु समास

जिस समास में पूर्व-पद संख्यावाचक विशेषण हो तथा समूह का बोध हो, उसे द्विगु समास कहते हैं; जैसे—

तीन भुजाएँ = त्रिभुज
चार राहों का समूह = चौराहा
तीन लोकों का समाहार = त्रिलोक

नौ ग्रह = नवग्रह
पाँच तत्त्वों का समाहार = पंचतत्त्व
सात सौ दोहों का समूह = सतसई

5. द्वन्द्व समास

जिस समास में पूर्व तथा उत्तर दोनों पद प्रधान हों एवं समास करने पर उनके बीच के 'और/या' अव्यय का लोप हो जाता हो, उसे द्वन्द्व समास कहते हैं; जैसे—

माता और पिता = माता-पिता
हार और जीत = हार-जीत
गंगा और यमुना = गंगा-यमुना
सीता और राम = सीता-राम
थोड़ा या बहुत = थोड़ा-बहुत
गुरु और शिष्य = गुरु-शिष्य

6. बहुव्रीहि समास

जिस समास के समस्त पद (पूर्व-पद और उत्तर-पद) में कोई भी पद प्रधान न हो, अपितु समस्त पद दोनों पदों के अर्थों का वाचक न होकर किसी तीसरे अर्थ का वाचक हो, उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं; जैसे—

चार भुजाएँ हैं जिसकी (विष्णु) = चतुर्भुज
महान वीर है जो (हनुमान) = महावीर
तीन हैं नेत्र जिसके (शिव) = त्रिलोचन
गिरि (पर्वत) को धारण करने वाले (श्रीकृष्ण) = गिरिधर

कर्मधारय और बहुव्रीहि समास में अन्तर :

[illegible]

द्विगु और बहुव्रीहि समास में अन्तर :

[illegible]

कुछ करके सीखें

1. [illegible]

(क) [illegible]

[illegible] [illegible] (iii) हिन्दी का

(ख) [illegible]

[illegible] [illegible] (iii) वा

(ग) [illegible]

[illegible] [illegible] (iii) अमा

(घ) [illegible] समास कहते हैं।

[illegible] द्विगु (iii) तत्पुरुष

(ङ) [illegible]

[illegible] तत्पुरुष समास (iii) कर्मधारय समास

(च) [illegible] समास विग्रह है—

[illegible] महान है जो देव (iii) देव में महान

2. [illegible]

उपसर्ग	अर्थ	शब्द	शब्द
[illegible]			
[illegible]			
[illegible]			
[illegible]			
[illegible]			

3. निम्नलिखित शब्दों में से उपसर्ग और मूल शब्द अलग-अलग करके लिखिए—

शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द
अत्यधिक	.....	.....
परोपकार	.....	.....
अन्तर्देशीय	.....	.....
अनावरण	.....	.....

4. निम्नलिखित शब्दों में से मूल शब्द और प्रत्यय छाँटिए—

शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय
घुमक्कड़	.....	.....
बिछौना	.....	.....
ओढ़नी	.....	.....
घबराहट	.....	.....
रसोइया	.....	.....

5. निम्नलिखित शब्दों में उपयुक्त प्रत्यय जोड़कर नए शब्द बनाइए—

झगड़ा	.....	बेल	.....
पढ़	.....	चिल्ला	.....
चुन	.....	उड़	.....
जादू	.....	साहित्य	.....
लुधियाना	.....	श्रद्धा	.....

6. कोष्ठक में दिए गए शब्दों में सही प्रत्यय लगाकर रिक्त स्थान भरिए—

(क) उसकी आवाज़ इतनी ..... थी कि सबने उसके गायन की सराहना की। *(मीठा)*

(ख) सिर्फ़ ..... से कुछ नहीं होता, जीवन में खेलकूद का भी महत्त्व होता है। *(पढ़)*

(ग) हमें अपनी ..... पर भी ध्यान देना चाहिए। *(लिख)*

(घ) सुनील मेरा ..... भाई है। *(चाचा)*

(ङ) मन्दिर के ..... जी आज क्यों नहीं आए? *(पूजा)*

7. निम्नलिखित कथनों के उपयुक्त समास का नाम लिखिए—

(क) जहाँ दोनों पदों में विशेषण-विशेष्य या उपमेय-उपमान का सम्बन्ध हो। .....

(ख) जिस समास में दोनों ही पद प्रधान हों। .....

(ग) जहाँ कोई पद प्रधान न हो तथा समस्त पद किसी तीसरे अर्थ का बोध कराए। .....

(घ) जिस समास में दूसरा पद प्रधान हो। .....

(ङ) जहाँ पहला पद अव्यय हो तथा समस्त पद अव्यय बन जाए। .....

8. निम्नलिखित समस्त पदो का विग्रह कीजिए तथा समास का नाम भी बताइए—

समस्त पद	विग्रह	समास का नाम
कंठगत		
हिमालय		
देवी-देवता		
दयानिधान		
आमरण		

9. निम्नलिखित समस्त पदो का दो-दो प्रकार से इस प्रकार विग्रह कीजिए कि ये दो अलग-अलग समासो के उदाह जाएँ—

समस्त पद	विग्रह	समास
नीलकंठ		
दशानन		
चौमासा		
घनश्याम		
त्रिलोचन		

10. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

(क) उपसर्ग किसे कहते हैं? उदाहरण सहित लिखिए।

(ख) हिन्दी में कितने प्रकार के उपसर्ग प्रचलित हैं? उदाहरण देकर समझाइए।

(ग) प्रत्यय किसे कहते हैं ? इसके कितने प्रकार हैं ? उदाहरण सहित लिखिए।

(घ) उपसर्ग और प्रत्यय में क्या अन्तर है ?

(ङ) समास किसे कहते हैं?

(च) समास के कितने भेद होते हैं? प्रत्येक के दो-दो उदाहरण भी लिखिए।

(छ) निम्नलिखित में अन्तर बताइए तथा उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए—

(i) कर्मधारय और बहुव्रीहि समास।

(ii) द्विगु और बहुव्रीहि समास।

12

वाक्य-विचार
Syntax

भावों एवं विचारों को पूर्णरूपेण प्रकट करने वाले सार्थक शब्द-समूह के व्यवस्थित मेल को वाक्य कहते हैं। वाक्य में प्रयोग किए जाने वाले शब्द व्याकरण में पद कहलाते हैं।

वाक्य की रचना एक से अधिक सार्थक शब्दों से होती है। वाक्य के सभी पद मिलकर पूरा अर्थ प्रकट करते हैं। वाक्य अपने आप में भाषा की पूर्णस्वतन्त्र एवं सार्थक इकाई है। उदाहरणार्थ—

- गौरव टी०वी० देख रहा है।

इन शब्द-समूहों से पूरी बात स्पष्ट हो रही है, अत: यह वाक्य है।

वाक्य के अंग

वाक्य के दो मुख्य अंग होते हैं—उद्देश्य और विधेय।

उद्देश्य—वाक्य में जिसके बारे में कुछ कहा जाए उसे उद्देश्य कहते हैं। दूसरे शब्दों में, कर्ता और उसके विस्तार को उद्देश्य कहते हैं।

विधेय—उद्देश्य के बारे में जो कुछ कहा जाए उसे विधेय कहते हैं। क्रिया और उसके विस्तार को विधेय कहते हैं। नीचे दिया गया वाक्य पढ़िए—

- खरगोश के छोटे-छोटे बच्चे गिलहरी के साथ लुका-छिपी का खेल खेलने लगे।

इस वाक्य को उद्देश्य और विधेय में इस प्रकार बाँटा जा सकता है—

उद्देश्य	विधेय
खरगोश के छोटे-छोटे बच्चे	गिलहरी के साथ लुका-छिपी का खेल खेलने लगे।

ऊपर दिए गए उदाहरण में—'बच्चे' कर्ता है और 'खरगोश के छोटे-छोटे' कर्ता का विस्तार।

इसी प्रकार, 'खेलने लगे' क्रिया-पद है और 'गिलहरी के साथ लुका-छिपी का खेल' क्रिया का विस्तार है।

वाक्य के भेद

वाक्य के भेद दो आधार पर किए जाते हैं—1. अर्थ के आधार पर तथा 2. रचना के आधार पर।

1. अर्थ के आधार पर वाक्यों का वर्गीकरण

अर्थ के आधार पर वाक्य निम्नलिखित आठ प्रकार के होते हैं—

(क) विधानवाचक वाक्य—जिस वाक्य से किसी बात के होने का सामान्य बोध हो, उसे विधानवाचक वाक्य कहते हैं; जैसे—मैंने तुम्हें बाज़ार जाते देखा था।

(ख) निषेधवाचक वाक्य—जिस वाक्य से क्रिया के नहीं होने का बोध हो, उसे निषेधवाचक वाक्य कहते हैं; जैसे—तुम कभी समय पर नहीं उठते हो।

(ग) **प्रश्नवाचक वाक्य**—जिस वाक्य में प्रश्न पूछे जाने का बोध हो, उसे प्रश्नवाचक वाक्य कहते हैं,
- तुमने नया मोबाइल फोन कब खरीदा?

(घ) **आज्ञावाचक वाक्य**—जिस वाक्य में आज्ञा या अनुरोध का बोध हो, उसे आज्ञावाचक वाक्य कहते हैं,
- कमरे से बाहर निकलो।
- कृपया [illegible] दीजिए।

(ङ) **इच्छावाचक वाक्य**—जिस वाक्य में इच्छा, शुभकामना, आशीर्वाद आदि का बोध हो, उसे इच्छावाचक वाक्य कहते हैं, जैसे—
- काश! मेरे पास भी बहुत पैसे होते।
- भगवान सबका भला करे।

(च) **विस्मयवाचक वाक्य**—जिस वाक्य में आश्चर्य, हर्ष, शोक, घृणा आदि मनोभावों का बोध हो, उसे विस्मयवाचक वाक्य कहते हैं, जैसे—
- अरे! वह इतनी जल्दी आ गया।
- शाबाश! [illegible]

(छ) **सन्देहवाचक वाक्य**—जिस वाक्य में किसी बात के होने का सन्देह हो, उसे सन्देहवाचक वाक्य कहते हैं, जैसे—शायद अब तक घंटी बज चुकी होगी।

(ज) **संकेतवाचक वाक्य**—जिस वाक्य में एक उपवाक्य पर दूसरे उपवाक्य की सम्भावना निर्भर हो, उसे संकेतवाचक वाक्य कहते हैं, जैसे—
- अगर पढ़ते तो अच्छे नम्बर ज़रूर आते।
- यदि वर्षा हुई तो जल भर जाएगा।

2. रचना के आधार पर वाक्यों का वर्गीकरण

रचना के आधार पर वाक्य तीन प्रकार के होते हैं—

(क) सरल वाक्य—सरल वाक्य में एक ही मुख्य क्रिया होती है। इसे साधारण वाक्य भी कहते हैं, जैसे—मैं नई साइकिल खरीदूँगा।

(ख) संयुक्त वाक्य—संयुक्त वाक्य दो या दो से अधिक सरल वाक्यों को समुच्चयबोधक (योजक) द्वारा जोड़कर बनाए जाते हैं, जैसे—

गुरुचरण दौड़कर आया और शगुन को धक्का देकर चला गया।

संयुक्त वाक्य में से यदि समुच्चयबोधक को हटा दिया जाए तो प्रत्येक वाक्य अपने आप में स्वतन्त्र हो जाएगा।

(ग) मिश्र वाक्य—जिस वाक्य में एक स्वतन्त्र उपवाक्य होता है और शेष उस पर आश्रित होते हैं, मिश्र वाक्य कहलाता है। स्वतन्त्र उपवाक्य को प्रधान उपवाक्य कहते हैं। उस पर आश्रित शेष उपवाक्य आश्रित उपवाक्य कहलाते हैं। प्रधान उपवाक्य और आश्रित उपवाक्य व्यधिकरण समुच्चयबोधकों द्वारा जुड़े होते हैं, जैसे—

वहाँ एक नलकूप है जो बिजली से चलता है।

व्यधिकरण समुच्चयबोधक हैं—क्योंकि, कि, इसलिए, चूँकि, यद्यपि, मानो, अर्थात्, जो, जहाँ, जब, ताकि आदि।

वाक्य-परिवर्तन

सरल वाक्य को संयुक्त वाक्य बनाना

सरल वाक्य	संयुक्त वाक्य
1. प्रज्ञा ने घर आकर सफ़ाई की।	1. प्रज्ञा घर आई और उसने सफ़ाई की।
2. लोग वायदा करके भूल जाते हैं।	2. लोग वायदा करते हैं लेकिन भूल जाते हैं।
3. वह धन के अभिमान में अकड़कर चलता है।	3. उसे धन का अभिमान है इसलिए अकड़कर चलता है।
4. अविनाश का पढ़ाई में मन नहीं लगा।	4. अविनाश ने पढ़ाई की किन्तु उसका मन नहीं लगा।

सरल वाक्य को मिश्र वाक्य बनाना

सरल वाक्य	मिश्र वाक्य
1. गरमी की छुट्टियों में हमें ढेर सारा काम मिलता है।	1. जब गरमी की छुट्टियाँ होती हैं तब हमें ढेर सारा काम मिलता है।
2. खाना जल्दी-जल्दी खाने के कारण गले में अटक गया।	2. खाना गले में अटक गया क्योंकि जल्दी-जल्दी खाया जा रहा था।
3. हमारी हिन्दी की अध्यापिका, श्रीमती अनुराधा, अच्छी हैं।	3. श्रीमती अनुराधा जो हमारी हिन्दी की अध्यापिका हैं, बहुत अच्छी हैं।
4. पढ़ाई पूरी होते ही हमारे घर मेहमान आ गए।	4. जैसे ही पढ़ाई पूरी हुई वैसे ही हमारे घर मेहमान आ गए।

संयुक्त वाक्य को मिश्र वाक्य बनाना

संयुक्त वाक्य	मिश्र वाक्य
1. सुबह हुई और पक्षी चहचहाने लगे।	1. जैसे ही सुबह हुई वैसे ही पक्षी चहचहाने लगे।
2. सूरदास अन्धे थे लेकिन उच्चकोटि के कवि थे।	2. यद्यपि सूरदास अन्धे थे तथापि उच्चकोटि के कवि थे।
3. कर्मवीर निश्चय करता है और पूरा कर दिखाता है।	3. कर्मवीर जो कुछ निश्चय करता है, वह कर दिखाता है।
4. सूर्योदय हुआ और तारे अदृश्य होने लगे।	4. ज्यों ही सूर्योदय हुआ त्यों ही तारे अदृश्य होने लगे।

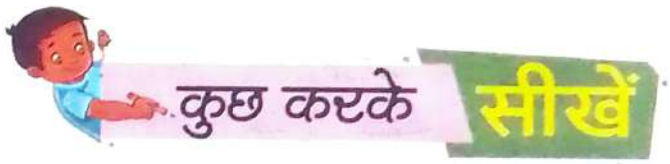

1. नीचे दिए गए उत्तरों के सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) किस वाक्य में दो या दो से अधिक वाक्य स्वतन्त्र होते हैं?

(i) मिश्र ◯ (ii) सरल ◯ (iii) संयुक्त ◯

(ख) जिस वाक्य में एक प्रधान वाक्य और एक या एक से अधिक उपवाक्य हों, वह क्या कहलाता है?

(i) सरल वाक्य ◯ (ii) संयुक्त वाक्य ◯ (iii) मिश्र वाक्य ◯

(ग) 'आप दीर्घायु हो।'—इस वाक्य का प्रकार है—

(i) इच्छावाचक (ii) विधानवाचक (iii) आज्ञावाचक

(घ) 'सम्भवत: दरवाज़े के पीछे कोई है।'—इस वाक्य का प्रकार है—

(i) संकेतवाचक (ii) सन्देहवाचक (iii) साधारण

(ङ) 'कृपया अन्दर आइए।'—इस वाक्य का प्रकार है—

(i) संकेतवाचक (ii) विधानवाचक (iii) आज्ञावाचक

2. निम्नलिखित वाक्यों में से उद्देश्य और विधेय अलग-अलग कीजिए—

	उद्देश्य	विधेय
(क) हमारी कक्षा के सभी छात्र मैदान में खेल रहे थे।	....	....
(ख) छत्रपति शिवाजी ने कई बार मुगलों के दाँत खट्टे किए।	....	....
(ग) भारत अब उपग्रहों का निर्माण और प्रक्षेपण कर रहा है।	....	....
(घ) मेरी छोटी बहन ने पुस्तक-केन्द्र से पुस्तकें खरीदीं।	....	....

3. निम्नलिखित वाक्यों के सामने अर्थ के आधार पर उनके भेदों के नाम लिखिए—

(क) काश! पापा जी यहाँ होते। ....

(ख) शायद महावीर सिंह मान जाए। ....

(ग) यदि समय होता तो तुमसे मिलने अवश्य आता। ....

(घ) न जाने बस मसूरी कब पहुँचेगी? ....

(ङ) तुम इसी समय काम पर पहुँचो। ....

4. कोष्ठक में दिए निर्देशानुसार वाक्य-परिवर्तन कीजिए—

(क) निकिता ने नाश्ता किया और स्कूल के लिए चल पड़ी। (सरल वा

(ख) अध्यापिका के डाँटते ही मंजू रोने लगी। (संयुक्त वा

(ग) चालाक व्यक्ति धोखा देता है। (मिश्र वा

(घ) वर्षा थम गई और इन्द्रधनुष निकल आया। (सरल वा

(ङ) आरती समाप्त होगी और हमें प्रसाद मिलेगा। (मिश्र वा

5. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

(क) वाक्य किसे कहते हैं? अर्थ के आधार पर वाक्य के भेदों के नाम लिखिए।

(ख) उद्देश्य और विधेय को उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

(ग) संयुक्त और मिश्र वाक्यों में क्या अन्तर है? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

(घ) इच्छावाचक और संकेतवाचक वाक्यों को उदाहरण देकर समझाइए।

रचनात्मक गतिविधियाँ

1. आप जान चुके हैं कि आप एक ही वाक्य को अर्थ के आधार पर थोड़े से हेर-फेर से आठ रूपों में लिख सकते हैं। अब के छात्रों को टोलीबद्ध करके प्रत्येक टोली अपने शिक्षक के सहयोग से एक साधारण वाक्य को लेकर अर्थ के आ अलग-अलग भेद के वाक्य बनाएँ। उनके अर्थ के अन्तर को भी समझिए।

2. अपने मित्र के साथ वार्तालाप करें, जिसमें रचना के आधार पर वाक्य-भेद का उचित प्रयोग हो।

13

विराम-चिह्न
Punctuation-Marks

बोलते समय साँस लेने अथवा अपनी बात को स्पष्ट और प्रभावी तरीके से कहने के लिए मनुष्य को कुछ देर रुकना पड़ता है। रुकने की यही प्रक्रिया विराम कहलाती है। लिखते समय इन्हीं विराम-स्थलों के लिए कुछ चिह्न प्रयोग में लाए जाते हैं। इन्हें विराम-चिह्न कहते हैं। संक्षेप में, भाषा के लिखित रूप में विराम के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें विराम-चिह्न कहते हैं। उदाहरणार्थ—

- आगे बढ़िए मत, रुकिए।
- क्या निकिता तैयार हो गई?

इन वाक्यों में (,) (।) और (?) चिह्नों का प्रयोग हुआ है। ये विराम-चिह्न हैं।

विराम-चिह्नों का बहुत महत्त्व होता है। इनके गलत प्रयोग से अर्थ का अनर्थ हो जाता है; जैसे—

- आगे बढ़िए मत, रुकिए। (रुकने का निर्देश में)
- आगे बढ़िए, मत रुकिए। (न रुकने का निर्देश में)

इन वाक्यों में विराम-चिह्न (,) के स्थान-परिवर्तन से वाक्यों के अर्थ भिन्न हो गए हैं।

प्रमुख विराम-चिह्न

विराम-चिह्न का नाम	विराम-चिह्न	विराम-चिह्न का नाम	विराम-चिह्न
1. पूर्ण विराम	।	7. योजक चिह्न	-
2. अर्ध विराम	;	8. निर्देशक चिह्न	—
3. अल्पविराम	,	9. अवतरण या उद्धरण चिह्न	' ... ' " ... "
4. उपविराम या कोलन	:	10. विवरण चिह्न	:—
5. प्रश्नसूचक	?	11. संक्षेपसूचक या लाघव चिह्न	०
6. विस्मयसूचक या सम्बोधन	!		

1. पूर्ण विराम (।)—प्रश्नवाचक तथा विस्मयवाचक वाक्यों को छोड़कर अन्य प्रकार के वाक्यों के अन्त में (वाक्य पूर्ण हो जाने पर) पूर्ण विराम का प्रयोग किया जाता है; जैसे—

- रविवार को चावड़ी बाज़ार बन्द रहता है।
- दहेज प्रथा सामाजिक बुराई है।

2. अर्ध विराम (;)—जहाँ अल्पविराम से कुछ अधिक और पूर्ण विराम से कुछ कम रुकने की आवश्यकता हो, वहाँ अर्ध विराम चिह्न का प्रयोग किया जाता है; जैसे—

- अतिथि आ गए; वे शीघ्र लौट जाएँगे।
- पैसा बहुत बड़ी चीज़ है; लेकिन क्या यह ही सब कुछ है?

3. अल्पविराम (,)—पूर्ण विराम का प्रयोग वाक्य की पूर्णता पर वाक्य के अन्त में होता है; जबकि अल्पविराम का प्रयोग वाक्य के बीच में किया जाता है। वाक्य के बीच में जब बहुत कम समय के लिए रुकना हो, तो अल्प विराम का प्रयोग किया जाता है; जैसे—

- दायें घूमो, सामने डाकघर है।
- रोहित, मयंक और जड़ेजा ने मैच जिताया।

4. **उपविराम या कोलन (:)** — इस चिह्न का प्रयोग निर्देशक चिह्न की भाँति होता है। प्रायः शीर्षकों में इ... आवश्यक होता है; जैसे—

- भ्रष्टाचार : समाज का कोढ़
- विज्ञान : वरदान या अभिशाप

5. **प्रश्नसूचक चिह्न (?)** — जब वाक्य के द्वारा कोई प्रश्न पूछा जाए, तो वहाँ वाक्य के अन्त में प्रश्नसूचक ... प्रयोग किया जाता है; जैसे—

- खिड़की का शीशा किसने तोड़ा?
- पंखा कब से खराब है?

6. **विस्मयसूचक या सम्बोधन चिह्न (!)**—हर्ष (उल्लास, प्रसन्नता), शोक (दुःख), विस्मय (आश्चर्य) भय, तिरस्कार आदि मनोभावों को प्रकट करने तथा किसी को सम्बोधित करने, बुलाने आदि के लिए विस्मयसू... सम्बोधन चिह्न का प्रयोग किया जाता है; जैसे—

- बेटा! जो मालिक लेता है, वही देता है। (सम्बोधन के...
- अरे! गाड़ी के टिकट तो घर में ही छूट गए। (विस्मय...

7. **योजक या विभाजक (-)**—इस चिह्न का प्रयोग सामासिक शब्दों, शब्द-युग्मों तथा पुनरुक्त शब्दों ... किया जाता है; जैसे—

- सुबह से बार-बार बिजली जा रही है। (पुनरुक्त...
- सास-माँ की भाषण-मेल चली जा रही थी। (सामासिक...

8. **निर्देशक चिह्न (—)**—निर्देशक चिह्न का प्रयोग आगे आने वाले विवरण को संकेतित करने के लिए किया ... है; जैसे—

- संज्ञा के तीन भेद हैं—जातिवाचक, व्यक्तिवाचक और भाववाचक।
- गांधी जी ने कहा—सदैव सत्य का मार्ग अपनाना चाहिए।

9. **अवतरण या उद्धरण चिह्न (' ... ' / " ... ")**—अवतरण या उद्धरण चिह्न दो प्रकार के होते हैं—

(i) इकहरा उद्धरण चिह्न (' ... ')—किसी के उपनाम, कविता, पुस्तक आदि के शीर्षक आदि के साथ इ... उद्धरण चिह्न का प्रयोग किया जाता है; जैसे—

- सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' एक अच्छे रचनाकार हैं।
- 'कामायनी' हिन्दी की प्रसिद्ध रचना है।

(ii) दुहरा उद्धरण चिह्न (" ... ")—किसी व्यक्ति के कथन को मूल रूप में उद्धृत करने के लिए दुहरे उ... चिह्न का प्रयोग किया जाता है; जैसे—

- नेताजी ने कहा था, "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा।"
- घर पहुँचने पर सब कहने लगे, "शक्कर की चाशनी है, शहद बताकर ठग लिया है।"

10. **विवरण चिह्न (:—)**—इस चिह्न का प्रयोग भी निर्देशक चिह्न की भाँति आगे दिए जाने वाले विवरण के ... होता है; जैसे—

- नीचे लिखे सभी शब्द संज्ञा-शब्द हैं:—राहुल, शिल्पा, मुम्बई, पुस्तकालय, लालकिला, बचपन आदि।

आजकल विवरण चिह्न का प्रयोग प्रायः कम ही किया जाता है तथा इसके स्थान पर निर्देशक चिह्न (—) का प्र... किया जाने लगा है; जैसे—सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए पटेल ने कहा था—यह भारत की स्वाधीनता का शुभारम्भ...

11. संक्षेपसूचक या लाघव चिह्न (०)—शब्दों को संक्षिप्त रूप में लिखने के लिए इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है; जैसे—

- डॉ० — ('डॉक्टर' का संक्षिप्त रूप)।
- एम०ए० — ('मास्टर ऑफ आर्ट्स' का संक्षिप्त रूप)।

कुछ करके सीखें

1. नीचे दिए गए उत्तरों के सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) विराम-चिह्नों का प्रयोग क्यों किया जाता है ?

(i) वाक्य की सजावट के लिए ◯ (ii) लेख को पढ़ने के लिए ◯

(iii) भाव-अभिव्यक्ति में स्पष्टता लाने के लिए ◯ (iv) सुन्दर लेखन के लिए ◯

(ख) योजक चिह्न का प्रयोग होता है—

(i) उदाहरण देने में ◯ (ii) शब्द-युग्मों के मध्य में ◯

(iii) सूचना देने में ◯ (iv) हर्ष व भय व्यक्त करने में ◯

(ग) किसी व्यक्ति के कथन को ज्यों-का-त्यों लिखने के लिए चिह्न लगाया जाता है—

(i) निर्देशक ◯ (ii) उद्धरण ◯

(iii) विवरण ◯ (iv) पूर्ण विराम ◯

2. निम्नलिखित वाक्यों में उचित विराम-चिह्नों का प्रयोग करके वाक्य फिर से लिखिए—

(क) भाषा, खान-पान, वेशभूषा भले भिन्न-भिन्न हों पर सबका सोचना एक ही प्रकार का है

(ख) यह कोई समय है घूमने जाने का रोशन गुस्से से बोला

(ग) आह मैंने खिलौना देने की जिद क्यों की

(घ) अरे बड़ा मधुर भजन है कौन सुना रहा था

3. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर उचित स्थान पर विराम-चिह्न लगाइए—

पेड़ पर बैठे हुए तोते ने मुसकराकर मैना से पूछा भेड़िए से भिड़कर भला बकरी को क्या मिला मैना ने सगर्व उत्तर दिया वही जो अत्याचारी का सामना करने पर पीड़ितों को मिलता है बकरी मर ज़रूर गई परन्तु भेड़िया दूसरों पर अत्याचार करने के लिए जीवित नहीं रह सकेगा

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

(क) विराम-चिह्नों से आप क्या समझते हैं? इनका प्रयोग करने से क्या लाभ हैं?

(ख) प्रमुख विराम-चिह्नों के नाम बताइए। प्रत्येक का एक-एक उदाहरण दीजिए।

14 मुहावरे और लोकोक्ति…
Idioms and P…

मुहावरे

कभी-कभी हम अपनी भाषा में ऐसे शब्दों का प्रयोग करते हैं जो मूल अर्थ से भिन्न विशेष अर्थ को प्रकट… ये शब्द प्रयोग मुहावरे कहलाते हैं; जैसे—उल्लू बनाना। इन शब्दों… भाषा रोचक और प्रभावशाली बन जाती है।

देखिए—पढ़ने के नाम पर पुस्तक खोलकर बैठे रहना किसी और को नहीं अपने आपको उल्लू बनाना है। इन शब्दों का उल्लू से कोई सम्बन्ध नहीं है। यहाँ इसका अर्थ है—मूर्ख बनाना/धोखे में रखना।

इस प्रकार, विशेष अर्थ प्रकट करने वाले मुहावरे सीधी सादी भाषा को अनोखे ढंग से प्रकट करते हैं… स्वतन्त्र वाक्य नहीं होते। ये किसी वाक्य के अंश होते हैं।

निम्नलिखित मुहावरे, उनके अर्थ और वाक्य प्रयोग को समझिए।

1. **अँगूठा दिखाना**—इनकार करना।
   प्रयोग—जब नौकर ने रुपये माँगे तो सेठ जी ने अँगूठा दिखा दिया।
2. **ईंट का जवाब पत्थर से देना**—बलपूर्वक उत्तर देना।
   प्रयोग—भारतीय सेना ने शत्रु का सामना करते समय ईंट का जवाब पत्थर से दिया।
3. **उल्लू बोलना**—वीरान हो जाना।
   प्रयोग—पुराने किले में जहाँ पहले चहल-पहल थी, वहाँ अब उल्लू बोलते हैं।
4. **एक और एक ग्यारह होना**—संगठन में शक्ति होना।
   प्रयोग—सभी कबूतर एक और एक ग्यारह होकर जाल उड़ाकर ले गए।
5. **कमर कसना**—तैयार होना।
   प्रयोग—बन्धक मज़दूरों ने अन्याय का विरोध करने के लिए कमर कस ली।

6. **कान पकड़ना**—अपनी भूल स्वीकार करना और फिर से गलती न करने की प्रतिज्ञा करना।
   प्रयोग—विमल ने अपने कान पकड़कर रोहित से माफ़ी माँगी।
7. **कोल्हू का बैल**—सदा काम में लगा रहने वाला।
   प्रयोग—नितिन बच्चों को पढ़ाने के लिए कोल्हू के बैल की भाँति काम करता रहता है।
8. **खाली हाथ जाना**—बिना कुछ लिए हुए जाना।
   प्रयोग—जुए में सब कुछ हारकर मंगलसिंह खाली हाथ घर चला गया।
9. **गाँठ बाँधना**—मन में अच्छी तरह बिठा लेना।
   प्रयोग—लड़के ने अपनी माँ की सीख की गाँठ बाँध ली, जिससे वह आज भी सफल है।

10. **घर का उजाला**—इज़्ज़त बढ़ाने वाला।
प्रयोग—मेजर मनोज तलवार जैसे पुत्र घर का उजाला होते हैं।

11. **घी-दूध की नदियाँ बहना**—घी-दूध की अधिकता होना।
प्रयोग—एक समय था जब भारत में घी-दूध की नदियां बहती थीं।

12. **चौपट होना**—नष्ट होना।
प्रयोग—इस बार वर्षा न होने से फसल चौपट हो गई।

13. **जान में जान आना**—आश्वस्त होना, भय दूर होना।
प्रयोग—बिल्ली चली गई तो चूहों की जान में जान आई।

14. **टस-से-मस न होना**—प्रभावित न होना, अविचलित रहना।
प्रयोग—हम सबने बहुत समझाया, पर अजहर टस-से-मस न हुआ।

15. **ठेस लगना**—दुःख पहुँचना।
प्रयोग—भाइयों के बुरे व्यवहार से विशाल के मन को ठेस लगी।

16. **डींग हाँकना**—बड़ी-बड़ी बातें करना।
प्रयोग—मदन करता तो कुछ भी नहीं, केवल डींग हाँकता रहता है।

17. **तितर-बितर होना**—इधर-उधर बिखर जाना।
प्रयोग—पुलिस के आते ही भीड़ तितर-बितर हो गई।

18. **दाँतों तले उँगली दबाना**—हैरान होना।
प्रयोग—छोटी-सी निकिता के मुख से गायत्री मन्त्र सुनकर सबने दाँतों तले उँगली दबा ली।

19. **दाल न गलना**—कुछ करते न बनना, प्रयत्न सफल न होना।
प्रयोग—प्रधानाचार्य के सामने किसी छात्र की दाल नहीं गलती।

20. **धाक जमाना**—प्रभाव डालना।
प्रयोग—पण्डित जी ने अपने उपदेशों से थोड़े समय में ही लोगों पर अपनी धाक जमा ली।

21. **निछावर करना**—बलिदान करना।
प्रयोग—वीर सैनिकों ने देश के लिए सीमा पर अपने प्राण निछावर कर दिए।

22. **पेट पालना**—निर्वाह करना।
प्रयोग—वृद्धा कासिम छोटे-मोटे काम करके अपना पेट पालता था।

23. **पेट में दाढ़ी होना**—बचपन से चालाक होना।
प्रयोग—ईशान को बच्चा मत समझना, उसके पेट में दाढ़ी है।

24. **पैरों में मेहँदी लगी होना**—चलने में असमर्थ होना।
प्रयोग—तुम्हारे पैरों में क्या मेहँदी लगी है कि उठकर पानी भी खुद नहीं पी सकते ?

25. **अपनी बात पर अड़े रहना**—अपनी बात पर अटल रहना।
प्रयोग—बहुत समझाने पर भी दादी अपनी बात पर अड़ी रहीं।

26. **बौखला जाना**—क्रुद्ध हो जाना।
प्रयोग—रेल कर्मचारी हड़ताल करने पर अड़ गए तो सरकार बौखला गई।

27. **मिट्टी में मिल जाना**—नष्ट हो जाना।

प्रयोग—भूकम्प इतना जोरदार था कि सैकड़ों मकान मिट्टी में मिल गए।

28. **मुँहतोड़ जवाब देना**—अच्छी तरह सामना करना।

प्रयोग—हमारे जवानों ने दुश्मन की सेना को मुँहतोड़ जवाब दिया।

29. **हाथ धोकर पीछे पड़ना**—किसी काम को करने की धुन सवार होना।

प्रयोग—भारत में आतंकवाद के सहारे अस्थिरता लाने के लिए पाकिस्तान हाथ धोकर पीछे पड़ ...

30. **हाथ मलना**—पछताना।

प्रयोग—समय निकल जाने पर तुम केवल हाथ मलते रह जाओगे।

लोकोक्तियाँ

लोकोक्ति (लोक + उक्ति) का अर्थ है—लोक में प्रचलित उक्ति या प्रसिद्ध कथन। अत: इसमें लौकिक सत्य एवं अनुभवों के अंश विद्यमान रहते हैं। लोकोक्तियों का प्रयोग किसी विचार के समर्थन में होता है, प्रभावशाली हो जाता है। ये प्राय: स्वतन्त्र वाक्यों की भाँति प्रयुक्त होती हैं। लोकोक्ति को 'कहावत' भी कहते हैं सामान्य अर्थ से भिन्न अर्थ होता है। उदाहरणार्थ—'चोर की दाढ़ी में तिनका'।

इस कहावत का सामान्य अर्थ न होकर विशेष अर्थ है—'दोषी व्यक्ति सदा आशंकित रहता है।'

अब कुछ महत्त्वपूर्ण लोकोक्तियों के अर्थ तथा प्रयोग समझिए—

1. **अधजल गगरी छलकत जाय**—थोड़ा ज्ञान रखने वाले अधिक घमंड करते हैं।

   प्रयोग—हमारे गाँव में रमाकान्त ही अकेला ऐसा व्यक्ति है जो अंग्रेज़ी का थोड़ा-बहुत ज्ञान रखता कारण वह टूटी-फूटी अंग्रेज़ी बोलकर गाँववालों पर रौब जमाता रहता है। किसी ने सच है—अधजल गगरी छलकत जाय।

2. **अब पछताये होत क्या जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत**—अवसर चूकने के बाद पछताना बेकार है।

   प्रयोग—पहले तो मदन ने मन लगाकर पढ़ाई नहीं की, अब अनुत्तीर्ण होने पर रोना-धोना मचा रहा है ने ठीक ही कहा है—अब पछताये होत क्या जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत।

3. **ऊँची दुकान फीका पकवान**—दिखावा अधिक, वास्तविकता कम।

   प्रयोग—हमने तो नवयुग क्लॉथ एम्पोरियम का बहुत नाम सुना था। इस बार वहाँ से कपड़े खरीदे तो ही हाथ लगी। उस पर तो वही उक्ति चरितार्थ हुई—ऊँची दुकान फीका पकवान।

4. **एक अनार सौ बीमार**—एक वस्तु के अनेक चाहने वाले।

   प्रयोग—नगर निगम कार्यालय में लिपिक के दो स्थान रिक्त हैं, जिनके लिए सैकड़ों आवेदन-पत्र आ इसे कहते हैं—एक अनार सौ बीमार।

5. **एक पंथ दो काज**—एक काम से दोहरा लाभ।

   प्रयोग—मैं एक शादी में काठमाण्डू गयी थी, वहाँ भगवान पशुपतिनाथ के दर्शन भी कर आई। इसे हैं—एक पंथ दो काज।

6. **काला अक्षर भैंस बराबर**—अनपढ़ होना।

   प्रयोग—तुम इस पत्र को पढ़ने के लिए दीनू से कह रहे हो? जानते नहीं उसके लिए तो काला अक्षर भैंस बराबर

7. **खरबूज़े को देखकर खरबूज़ा रंग बदलता है**—संगति का प्रभाव अवश्य पड़ता है।
प्रयोग—शहर में आकर भोला-भाला शोभित भी फ़ैशन करने लगा है। किसी ने ठीक ही कहा है—खरबूज़े को देखकर खरबूज़ा रंग बदलता है।

8. **खोदा पहाड़ निकली चुहिया**—परिश्रम अधिक, फल कम।
प्रयोग—बेचारे शोभित ने लाखों रुपये लगाकर नया व्यापार तो कड़ी मेहनत से शुरू कर दिया, मगर वर्ष के अन्त में केवल बीस हज़ार रुपये का लाभ हुआ। इसे कहते हैं—खोदा पहाड़ निकली चुहिया।

9. **जल में रहकर मगर से बैर**—सम्पन्न और शक्तिशाली लोगों से शत्रुता ठीक नहीं होती।
प्रयोग—अरे मित्र! तुम अपने कार्यालय के मैनेजर का विरोध करके ठीक नहीं कर रहे। जानते नहीं जल में रहकर मगर से बैर अच्छा नहीं होता।

10. **जैसी करनी वैसी भरनी**—अपनी करनी का फल भोगना ही पड़ता है।
प्रयोग—सारी ज़िन्दगी काले धन्धे से धन इकट्ठा किया, अब उसके बेटे ही उसकी नाक में दम किए रहते हैं। किसी ने ठीक ही कहा है—जैसी करनी वैसी भरनी।

11. **जो गरजते हैं, वे बरसते नहीं**—अधिक बोलने वाले व्यक्ति कम काम करते हैं।
प्रयोग—आजकल के नेता चुनाव के समय लम्बे-चौड़े वायदे करते हैं, पर बाद में करते कुछ नहीं। इसे कहते हैं—जो गरजते हैं, वे बरसते नहीं।

12. **धोबी का कुत्ता घर का न घाट का**—स्थिरता के अभाव में कहीं का न रहना।
प्रयोग—निहालचन्द चुनाव से पूर्व कुर्सी पाने के लालच में नई पार्टी में शामिल हो गया, पर वहाँ भी उसे कोई पद न मिला। इसे कहते हैं—धोबी का कुत्ता घर का न घाट का।

13. **बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद**—मूर्ख व्यक्ति गुणों का आदर करना नहीं जानते।
प्रयोग—तुम उस अनपढ़ व्यक्ति के सामने कविवर जायसी के पद्मावत ग्रन्थ का गुणगान कर रहे हो और वह ऊँघ रहा है। तुमने सुना तो होगा—बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद।

14. **मुँह में राम बगल में छुरी**—ऊपर से दोस्ती, अन्दर से दुश्मनी।
प्रयोग—धीरेन्द्र बहुत कपटी है, उसकी चिकनी-चुपड़ी बातों का विश्वास मत करना। उस पर तो वही कहावत चरितार्थ होती है—मुँह में राम बगल में छुरी।

15. **सिर मुँड़ाते ही ओले पड़ना**—काम शुरू करते ही रुकावटें आना।
प्रयोग—बेचारे मनीष ने अपनी सारी पूँजी लगाकर कपड़े की दुकान खोली, पर दुर्भाग्यवश अगले ही दिन दुकान में शॉर्ट सर्किट से आग लग गई। इसे कहते हैं—सिर मुँड़ाते ही ओले पड़ना।

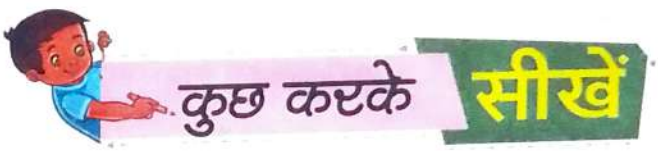

1. नीचे दिए गए उत्तरों के सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) ऐसे वाक्यांश जो अपने साधारण अर्थ में प्रयुक्त न होकर विशेष अर्थ में प्रयुक्त होते हैं, वे क्या कहलाते हैं ?

(i) लोकोक्ति ◯ (ii) मुहावरे ◯ (iii) पदबन्ध ◯ (iv) जनश्रुति ◯

(ख) 'आम के आम गुठलियों के दाम' लोकोक्ति का अर्थ है—

(i) गुठलियों के दाम होना (ii) दिखावा करना

(iii) दोहरा लाभ (iv) भाग जाना

(ग) 'ऊँची दुकान फीका पकवान' लोकोक्ति का अर्थ है—

(i) दिखावा अधिक वास्तविकता कम (ii) दोहरा लाभ

(iii) दोष लगाना (iv) व्यर्थ पछताना

2. कोष्ठकों में दिए हुए मुहावरों के उचित रूप से वाक्य पूर्ण कीजिए—

(क) युवकों ने गाँव को साक्षर बनाने के लिए ..... । (कमर कस

(ख) भक्तों ने महात्मा जी की सीख ..... । (गाँठ बाँध

(ग) बन्दरों के चले जाने पर यात्री की ..... । (जान में जान आ

(घ) रावण के बुरे व्यवहार से विभीषण के मन को ..... । (ठेस लग

(ङ) प्रधानाचार्य के सामने किसी छात्र की ..... । (दाल न गल

3. निम्नलिखित मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

(क) उल्लू बोलना .....

(ख) अँगूठा दिखाना .....

(ग) मुँहतोड़ जवाब देना .....

(घ) तितर-बितर होना .....

(ङ) पैरों में मेहँदी लगी होना .....

4. निम्नलिखित वाक्यों को उपयुक्त लोकोक्तियों द्वारा पूरा कीजिए—

(क) कार्यालय के काम से हैदराबाद जा रहा हूँ। वहाँ चारमीनार भी देख आऊँगा। इसे कहते हैं .....

(ख) दिनेश ने नई नौकरी के लालच में पुरानी से त्यागपत्र दे दिया और उसे नई नौकरी भी नहीं मिली। यह तो वही बात हु

..... ।

(ग) जब समय था तब तो पढ़े नहीं अब फेल होने पर क्यों रोते हो ? यह तो वही बात हुई कि .....

(घ) नितिन की लम्बी-चौड़ी बातें सुनकर मैं समझ गया कि यह कुछ करने वाला नहीं है, क्योंकि .....

5. निम्नलिखित लोकोक्तियों के अर्थ लिखिए और अपने वाक्यों में प्रयोग भी कीजिए—

(क) अधजल गगरी छलकत जाय।

(ख) खरबूज़े को देखकर खरबूज़ा रंग बदलता है।

(ग) जल में रहकर मगर से बैर।

(घ) मुँह में राम बगल में छुरी।

(ङ) सिर मुँड़ाते ही ओले पड़ना।

15 अनुच्छेद-लेखन
Paragarph-Writing

अनुच्छेद एक छोटी रचना है। इसे निबन्ध का लघुरूप कहा जा सकता है। यह आकार में संक्षिप्त है परन्तु अपने-आप में पूर्ण होता है। जब किसी घटना, दृश्य या विषय को सारगर्भित तथा संक्षिप्त ढंग से एक ही अनुच्छेद (पैरा) में प्रस्तुत किया जाता है, तो उसे अनुच्छेद-लेखन कहते हैं।

अनुच्छेद-लेखन में निम्नलिखित बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए—

- अनुच्छेद प्रभावशाली होना चाहिए।
- अनुच्छेद में विषय का अनावश्यक विस्तार नहीं किया जाता, केवल मूल बिन्दुओं पर ही चर्चा की जाती है।
- विषय की भूमिका न बाँधकर सीधे विषय पर आ जाना चाहिए।
- अनुच्छेद की भाषा शुद्ध और सरल होनी चाहिए।
- वाक्य छोटे-छोटे होने चाहिए।
- शब्दों की सीमा का ध्यान रखना चाहिए। इस कक्षा में 100-125 शब्दों में लिखा गया अनुच्छेद उपयुक्त माना जाता है।

नीचे उदाहरण के रूप में कुछ अनुच्छेद दिए गए हैं। इन्हें पढ़िए, समझिए तथा अन्य अनुच्छेद लिखने का अभ्यास कीजिए—

1. सच्चा मित्र

सच्चा मित्र खज़ाने की तरह होता है जिसे जीवन में सच्चा मित्र मिल गया, समझो उसे बहुत बड़ा खज़ाना मिल गया। सच्चा मित्र शिक्षक की तरह मार्गदर्शन करता है। जिस प्रकार शिक्षक अपने छात्र को अच्छाई की ओर, सन्मार्ग की ओर ले जाता है, उसी प्रकार सच्चा मित्र भी अपने मित्र को पाप के गड्ढे में गिरने से तथा बुराई की ओर जाने से रोकता है। कभी-कभी मानव-जीवन में ऐसे अवसर भी आते हैं जब मनुष्य निराश हो जाता है, जीवन के प्रति उसका मोह समाप्त हो जाता है। जीवन बोझ लगने लगता है। ऐसी स्थिति में सच्चा मित्र आशा की किरण बनकर, जीवन के प्रति रुझान पैदा करता है। किसी व्यक्ति के मन पर जितना प्रभाव मित्र की सलाह का पड़ता है, उतना अन्य किसी का नहीं। जीवन में जिसे सच्चा मित्र मिल जाए, वह सौभाग्यशाली होता है।

2. वर्षा ऋतु

वर्षा जीवन का आधार है। वर्षा के अभाव में जीवन सम्भव नहीं है। वर्षा का आगमन होते ही चारों ओर हरियाली ही हरियाली दिखाई देती है। मयूर अपनी मधुर ध्वनि से वर्षा का स्वागत करते हैं। मेंढकों की टर्र-टर्र, झींगुरों की झंकार तथा जुगनुओं की चमक दृष्टिगोचर होती है। एक कवि ने कहा है—"है वसंत ऋतुओं का राजा, वर्षा ऋतुओं की रानी।" ग्रीष्म के थपेड़ों से जब समस्त पृथ्वी झुलसने लगती है, तो आगमन होता है—वर्षा ऋतु का। ऋतुओं की रानी—वर्षा

ऋतु धरती के जड़-चेतन सभी का दुःख हरने आती है। वर्षा ऋतु में तीज का त्योहार आता है। महिलाएँ
सावन मास का स्वागत करती है। इस काल में आमों की बहार आ जाती है। वर्षा के अभाव में यदि सूखे
अधिक वर्षा होने पर बाढ़ आ जाती है तथा वर्षा का रौद्र रूप विनाशकारी बन जाता है। फिर भी वर्षा
आवश्यक है।

3. बाल-दिवस

14 नवम्बर को हमारे देश के प्रथम प्रधानमन्त्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू जी का जन्मदिन होता है। नेहरू
महान और सर्वप्रिय नेता थे। नेहरू जी कश्मीरी ब्राह्मण थे। गौरवर्ण, सुन्दर तथा आकर्षक व्यक्तित्व के धनी थे
शेरवानी और पायज़ामा तथा शेरवानी पर सजा लाल गुलाब उनकी पहचान बन गया था। उनका जीवन एक
देश के प्रति, विशेषकर बच्चों के प्रति समर्पित थे विश्वबन्धुत्व का स्वप्न सजाने वाले नेहरू जी एक अद्वितीय
स्वामी थे। ऐसे ही तो थे बच्चों के प्यारे चाचा नेहरू। नेहरू जी को बच्चों से बहुत प्यार था। इसलिए सन्
जन्मदिन पूरे भारत में 'बाल-दिवस' के रूप में बड़े उत्साह से मनाया जाता है। इस दिन विद्यालयों में बच्चों के
सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं। स्थान-स्थान पर बाल-मेला लगता है। इसमें बच्चे बड़े उत्साह से भाग लेते
स्कूलों में फल तथा मिठाइयाँ बाँटी जाती हैं। नन्हे-मुन्ने बच्चों के फ़ैन्सी ड्रेस शो तो मन को आकर्षित कर लेते
भारत के इन भावी नागरिकों का उत्साह देखते ही बनता है।

4. साँच बराबर तप नहीं

सत्य का स्वरूप अत्यन्त विस्तृत होता है। जब हम मन, वचन और कर्म से सच्चाई पर आधारित आचरण
यही सत्य का सच्चा स्वरूप होता है। सत्य का आचरण करने वाला व्यक्ति सच्चरित्रवान और महान होता है
आचरण से वन्दनीय और पूजनीय बन जाता है। सत्यवादी वीर और निडर होता है। वह कठिन-से-कठिन आपदा
विचलित नहीं होता क्योंकि वह जानता है कि अन्त में सत्य की ही जीत होती है। इसीलिए कहा गया है—'सत्यमेव
यद्यपि आज चारों ओर असत्य का बोलबाला है। लोग अपने स्वार्थ, लोभ तथा लाभ के लिए झूठ बोलने में ज़रा भी
नहीं करते। तथापि सभी जानते हैं कि असत्य से क्षणिक आनन्द की प्राप्ति हो सकती है, किन्तु उसके प्रकट हो
मनुष्य की बहुत दुर्दशा हो जाती है। सत्यवादिता एक घोर तपस्या है, इस पर आचरण करना तलवार की धार पर
समान है। भारतीय संस्कृति के आदर्श 'सत्यं, शिवं, सुंदरं' में भी 'सत्य' को ही पहला स्थान दिया गया है। अतः
करना चाहिए कि सत्य बोलने की आदत डालें और असत्य से बचें। कबीरदास जी ने सच ही कहा है—"साँच बराबर
नहीं, झूठ बराबर पाप।"

- निम्नलिखित विषयों पर अनुच्छेद लिखिए—

1. यदि मैं प्रधानाचार्य होता।
2. जब मुझे पुरस्कार मिला।
3. खेलकूद के लाभ।
4. विद्यालय में मेरा पहला दिन
5. छुट्टी का दिन।
6. मित्रों के साथ एक पिकनिक
7. मुझे दूरदर्शन अच्छा लगता है; क्योंकि .....।
8. मेरा जन्मदिन समारोह

16

सार-लेखन
Summary-Writing

सार अर्थात् संक्षिप्तीकरण। किसी अनुच्छेद, लेख, घटना आदि के मूल तत्त्वों की रक्षा करते हुए उसे संक्षिप्त रूप देना या उसका संक्षेपण करना सार-लेखन कहलाता है।

सार-लेखन के समय हमें निम्नलिखित बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए—

- अनुच्छेद अथवा लेख को दो-तीन बार ध्यानपूर्वक पढ़ना चाहिए।
- अनुच्छेद अथवा लेख के मुख्य बिन्दुओं को रेखांकित करना चाहिए।
- लेखन सरल व स्पष्ट शब्दों में लिखना चाहिए।
- सार के अन्तर्गत केवल मुख्य विचार ही लिखने चाहिए।
- सार एक-तिहाई शब्दों से अधिक न हो।
- सार के अन्तर्गत उदाहरणों एवं दृष्टान्तों को नहीं लिखना चाहिए।
- सार का शीर्षक संक्षिप्त एवं उपयुक्त होना चाहिए।
- अनुच्छेद अथवा लेख से सम्बन्धित प्रश्नों के उत्तर प्रसंग के अनुसार संक्षेप में ही लिखने चाहिए।

सार-लेखन के कुछ उदाहरण

1. चरित्र-निर्माण ही सफलता की कुंजी है। जो मनुष्य अपने चरित्र की ओर ध्यान देता है, वही जीवन-क्षेत्र में विजयी होता है। चरित्र-निर्माण से मनुष्य के भीतर ऐसी शक्ति का विकास होता है, जो उसे जीवन-संघर्ष में विजयी बनाती है। ऐसा व्यक्ति जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है। वह जहाँ भी जाता है अपने चरित्र की शक्ति से प्रभाव स्थापित कर लेता है। उसे देखते ही लोग उसके व्यक्तित्व के सम्मुख नतमस्तक हो जाते हैं। उसके व्यक्तित्व में सूर्य का तेज, आँधी की गति और गंगा के प्रवाह की अबाधता है।

सार—चरित्र-निर्माण से मनुष्य में संघर्ष-शक्ति आती है, जिससे वह सफलताएँ और विजय प्राप्त करके अपना प्रभाव जमाता है। इससे सभी उसके सूर्य-से व्यक्तित्व के समक्ष झुक जाते हैं।

शीर्षक—चरित्र-निर्माण का महत्त्व।

2. आज की शिक्षा-प्रणाली में अनेक प्रकार के जो दोष पाए जाते हैं उनमें अव्यावहारिकता प्रमुख है। शिक्षा अनेक विषयों का सामान्य ज्ञान तो करा देती है, परन्तु उसका व्यावहारिक प्रयोग और महत्त्व क्या है, इसका ज्ञान नहीं हो पाता, इसलिए प्रत्येक पढ़ा-लिखा व्यक्ति किसी भी नौकरी की ओर भागने का प्रयास करता है।

सार—अव्यावहारिकता के कारण आधुनिक शिक्षा-प्रणाली विषयों का केवल सामान्य ज्ञान कराती है, जिसके कारण प्रत्येक शिक्षित व्यक्ति कोई भी नौकरी पा लेना चाहता है।

शीर्षक—शिक्षा-प्रणाली की अव्यावहारिकता।

3. लेखक का काम काफी हद तक मधुमक्खियों से मिलता-जुलता है। मधुमक्खियाँ मधु-संग्रह के लिए कोसों दूर तक चक्कर लगाती हैं। वे सुन्दर फूलों का रसपान करती हैं। तभी तो उसके मधु में संसार की श्रेष्ठ मधुरता रहती है। यदि आप अच्छा लेखक बनना चाहते हैं, तो आपको भी यही प्रवृत्ति अपनानी पड़ेगी। अच्छी-अच्छी पुस्तकों का अध्ययन करना होगा। फिर आपकी रचनाओं में मधु की-सी मधुरता आने लगेगी। कोई अच्छी उक्ति या कोई अच्छा विचार भले ही दूसरे से ग्रहण किया गया हो, लेकिन उस पर चिन्तन करके आप उसे अपनी रचनाओं में स्थान देंगे, तो वह आपका ही हो जाएगा। मनन करके लिखे हुए लेख के सम्बन्ध में किसी को यह कहने का साहस नहीं होगा कि यह किसी से लिया गया है। जिसे आप अच्छी तरह मनन करके अपना लेंगे, वह आपका हो जाएगा।

सार—अच्छे लेखक मधुमक्खियों की तरह संग्राहक होते है, इसलिए उनके ग्रन्थों में संसार के श्रेष्ठ ग्रन्थों का विचार-मधु मिलता है। अच्छा लेखक बनने के लिए अच्छे ग्रन्थों के अध्ययन द्वारा श्रेष्ठ विचारों का संग्रह कीजिए। इसके पश्चात् उन्हें भली प्रकार से अपने लेखन में अपना लीजिए। ऐसा करने पर वे दूसरों के नहीं, अपितु आपके ही हो जाएँगे।

शीर्षक—अच्छा लेखक बनने का मन्त्र।

कुछ करके सीखें

- निम्नलिखित गद्यांशों का सार लगभग एक-तिहाई शब्दों में लिखिए और उपयुक्त शीर्षक भी दीजिए।

1. सही समय पर सही चुनाव करने वाला व्यक्ति जीवन का सफल कलाकार होता है। चुनाव में असावधानी बरतने वाला आदमी कभी सफलता की सीढ़ियों पर नहीं चढ़ पाता। जो व्यक्ति खाने-पीने, खेलने-कूदने और मनोरंजन के कार्यक्रम में अलग से कुछ चुनाव नहीं करता, उसकी दशा पेटू जैसी हो जाती है और अपना स्वास्थ्य चौपट कर बैठता है। होना यह चाहिए कि हम सोच-समझकर निर्णय लें कि हमें किस समय सोना है और किस समय उठना है? हमें कब और कितना भोजन करना है तथा कब, क्या और कैसा पहनना है? हमें किन लोगों को अपना मित्र बनाना है और किनसे दूर ही रहना है? ऐसे लोगों में न ही कोई सुरुचि विकसित हो पाती है और न ही वे अपने समय का मूल्य समझ पाते हैं।

2. लोकतान्त्रिक व्यवस्था केवल केन्द्र तथा राज्य-स्तर पर क्रमशः लोकसभा तथा विधान सभाओं के निर्माण का नाम नहीं है। उसका वास्तविक स्वरूप है—एक विशिष्ट जीवन पद्धति। जब सामान्य जन को प्रशासन के निरन्तर स्तर पर यह अनुभव होता है कि शासन-तन्त्र उसके हित एवं कल्याण के लिए सक्रिय है तथा न्याय-व्यवस्था निष्पक्ष और स्वतन्त्र है तभी लोकतन्त्र में उसकी आस्था में निरन्तर अभिवृद्धि होती है। ग्राम पंचायतों का विकास भारतीय जनता में इन मूल्यों का विकास-विस्तार नहीं कर पाया, क्योंकि राज्य सरकारों ने इनकी व्यवस्था और आयोजन को अधिकारियों के संरक्षण में रखा है जो अपने को जनता के प्रति उत्तरदायी न मानकर सरकार के मुखापेक्षी बने रहने में अपना कल्याण समझते हैं। व्यवस्था के इस दोष को दूर करके ही लोकतन्त्र को सफल बनाया जा सकता है।

17

संवाद-लेखन
Dialogue-Writing

हम दैनिक जीवन में अनेक लोगों से बातचीत करते हैं। भिन्न-भिन्न व्यक्तियों के साथ पात्र और विषय के अनुरूप बातचीत एकसमान नहीं होती; जैसे—सहपाठियों के बीच जो बातचीत होती है, वह अध्यापक और विद्यार्थी के बीच की बातचीत से सर्वथा भिन्न होती है। वक्ताओं की बातचीत का विषय कोई भी हो सकता है। उनका परस्पर बातचीत करना ही संवाद कहलाता है। प्रत्येक संवाद के लिए दो या दो से अधिक व्यक्तियों का होना आवश्यक होता है। पात्रों के अनुरूप संवाद व्यक्ति को व्यावहारिक और कुशल वक्ता बना देते हैं; जैसे—पुलिस अधिकारी की भाषा रोबदार तथा बुज़ुर्गों की भाषा नन्हे-मुन्नों के प्रति स्नेहभरी होनी चाहिए।

संवाद-लेखन के लिए निम्नलिखित बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए—

- संवाद छोटे तथा सरल भाषा में होने चाहिए।
- संवाद विषय के अनुकूल तथा एक-दूसरे से जुड़े हों।
- संवाद पात्रों के अनुकूल हों।
- संवाद में बनावटीपन नहीं होना चाहिए।

संवाद-लेखन के कुछ उदाहरण

1. दो मित्रों के बीच अपने जीवन-लक्ष्य के सम्बन्ध में संवाद

राहुल — विकास, तुमने अपने भविष्य के बारे में कुछ सोचा है ?

विकास — हाँ, सोचा है। मैं बड़ा होकर एक व्यापारी बनना चाहता हूँ।

राहुल — तो क्या तुमने भी आजकल के कुछ धृष्ट तथा बेईमान व्यापारियों जैसा बनकर केवल धन कमाना ही अपने जीवन का उद्देश्य बना लिया है ?

विकास — नहीं, नहीं; मैं बेईमानी से धन नहीं कमाऊँगा, पर जीवन में व्यापार अवश्य करूँगा और वह भी ईमानदारी से! पर तुमने क्या सोचा है ?

राहुल — मैंने तो सोचा है कि बड़ा होकर मैं एक डॉक्टर बनूँ।

विकास — अरे! डॉक्टरी में तो व्यापार से भी अधिक कमाई है। आए-दिन बीमारियाँ बढ़ती जा रही हैं और डॉक्टर लोग मनमानी फ़ीस वसूल करके अपनी जेबें भर रहे हैं। गरीब लोग तो बेचारे सरकारी अस्पतालों की लम्बी लाइन में लगे रहते हैं और वहाँ भी दवाई के नाम पर उन्हें मिलती हैं तो दो-चार गोलियाँ। क्या तुम भी ऐसे ही डॉक्टर बनना चाहते हो ?

राहुल — मित्र! तुम गलत अनुमान लगा रहे हो। मैं बड़ा होकर ऐसा डॉक्टर बनना चाहता हूँ, जो कमाई तो ज़रूर करेगा, पर अपनी कमाई का कुछ प्रतिशत गरीबों की चिकित्सा पर खर्च करेगा।

विकास — मित्र, यदि बुरा न मानो तो मुझे तो इसमें ज़्यादा सच्चाई नज़र नहीं आती।

राहुल — यदि मैं डॉक्टर बन गया, तो तुम स्वयं देख लेना मेरे जीवन का लक्ष्य यही होगा।

2. सब्ज़ीवाले और गृहिणी में संवाद

गृहिणी — भाई, टमाटर क्या भाव है?

सब्ज़ीवाला — बहन जी, चालीस रुपये किलो।

गृहिणी — आज तक टमाटर कभी चालीस रुपये किलो हुआ था? तुम लोगों ने तो लूट मचा रखी है।

सब्ज़ीवाला — हमने क्या लूट मचा रखी है! जब मण्डी से ही पैंतीस-छत्तीस रुपये में मिलेगा तो हम कितना
बेचेंगे!

गृहिणी — पता नहीं टमाटर में क्यों आग लग गई है! इसके बिना सब्ज़ी/सलाद भी तो नहीं बनती।

सब्ज़ीवाला — मेरी पत्नी ने तो सब्ज़ी/सलाद में टमाटर डालना ही बन्द कर दिया है।

गृहिणी — अब क्या-क्या खाना बन्द कर देंगे! सरकार तो आँख मूँदे बैठी है। सब चीज़ों के दाम बढ़ गए
गुज़ारा ही नहीं होता।

सब्ज़ीवाला — आपकी तो नौकरी है। बाबूजी हर महीने बँधी-बँधाई तनख्वाह लाते हैं। यहाँ तो कमाई हो गई
गई; न हुई तो पेट पर पट्टी बाँध लो। हमारा क्या हाल है, हम ही जानते हैं।

3. शहर में बढ़ते अपराधों पर दो महिलाओं के बीच संवाद

गरिमा — शिवानी, तुमने आज का समाचार-पत्र पढ़ा? अपहरण के तीन-तीन समाचार प्रकाशित हुए हैं।

शिवानी — तुम अपहरण की बात कर रही हो, शहर में तीन वृद्धों की हत्या कर दी गई है।

गरिमा — पुलिस क्या कर रही है ?

शिवानी — अपराधियों को भय ही नहीं रहा।

गरिमा — बाज़ार जाते समय सावधान रहा करो।

शिवानी — यहाँ दिन-दहाड़े घर में घुसकर लूटपाट की घटनाएँ घट रही हैं और तुम बाज़ार जाने की बात
रही हो।

गरिमा — बहन, सतर्क तो रहना ही चाहिए।

कुछ करके सीखें

- निम्नलिखित को संवाद के रूप में लिखिए—

1. परीक्षा की तैयारी के विषय में दो विद्यार्थियों के बीच संवाद।
2. लालकिला देखकर लौटी बालिका का अपने भाई से संवाद।
3. अपने जन्मदिन के कार्यक्रम के विषय में सहेली से हुआ संवाद।
4. दूरदर्शन के किसी सीरियल को लेकर दो महिलाओं के बीच संवाद।
5. बिजली की समस्या को लेकर विभाग के अधिकारी से एक उपभोक्ता का संवाद।
6. ऑटो चालक और एक यात्री के बीच संवाद।
7. आधुनिक वेशभूषा पर दो सहेलियों के बीच संवाद।
8. पिता तथा पुत्र के बीच मेले में कुछ खरीदने के लिए हुआ संवाद।

18

कहानी-लेखन
Story-Writing

साहित्य की विभिन्न विधाओं में कहानी सबसे रोचक विधा है। बच्चों को कहानियाँ सुनने-सुनाने में बहुत आनन्द आता है। इनसे जहाँ मनोरंजन होता है वहीं ज्ञान भी बढ़ता है। कहानियाँ कुछ-न-कुछ शिक्षा, सन्देश या प्रेरणा प्रदान करती हैं। इसलिए कहानी-लेखन भी विषय का एक भाग बन गया है। निस्सन्देह यह एक कला है। किसी भी घटना से प्रेरणा लेकर कहानी लिखी जा सकती है।

कहानी-लेखन में निम्नलिखित बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए—

- दिए गए चित्रों, संकेतों या अधूरी कहानी को ध्यानपूर्वक देखकर/पढ़कर कहानी की रचना करनी चाहिए।
- लिखी गई कहानी में घटनाओं की क्रमबद्धता हो।
- कहानी सदैव भूतकाल में लिखी जाती है।
- कहानी की भाषा सरस, सरल और सहज हो।
- कहानी में प्रयुक्त वाक्य छोटे तथा प्रभावशाली हों।
- कहानी संक्षिप्त तथा रोचक होनी चाहिए।

चित्रों की सहायता से कहानी-रचना

नीचे चित्रों के माध्यम से एक कहानी दी जा रही है। चित्रों को ध्यानपूर्वक देखकर कहानी को समझिए। इन चित्रों पर आधारित कहानी भी अलग से दी गई है। इसी प्रकार, स्वयं भी चित्रों के आधार पर कहानी-रचना का अभ्यास कीजिए—

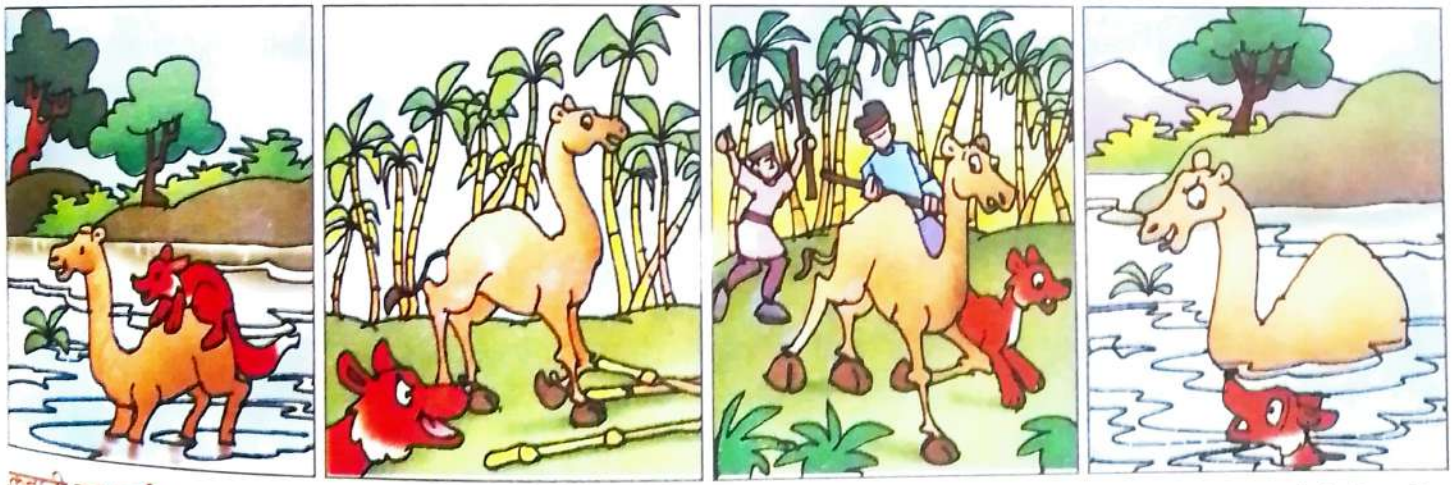

कहानी का वर्णन—किसी जंगल में एक सियार और एक ऊँट रहते थे। दोनों में गहरी मित्रता थी। एक दिन दोनों ने नदी-पार गन्ने के खेत में जाने का निश्चय किया। ऊँट ने सियार को अपनी पीठ पर बैठाकर नदी पार की। दोनों गन्ने के खेत में गए और गन्ने तोड़-तोड़कर मज़े से खाने लगे। सियार का पेट जल्दी भर गया। गन्ने खाकर सियार हुआँ-हुआँ करने लगा। ऊँट ने समझाया—"मित्र, शोर न करो, रखवाले जाग जाएँगे।" परन्तु सियार न माना। वह कहने लगा, "भोजन के बाद

गाना मेरी आदत है।'' इतने में रखवाले जाग गए। उन्हें देखकर सियार तो झाड़ियों में छिप गया, परन्तु रखवालों ने ऊँट की खूब पिटाई की। ऊँट पिटते-पिटते अधमरा हो गया। लौटते समय सियार ऊँट की पीठ पर बैठकर नदी पार करने था। जब दोनों बीच धारा में पहुँचे, तो ऊँट ने नदी में डुबकी लगाई। सियार के मना करने पर उसने कहा, ''भोजन करने बाद डुबकी लगाने की मेरी आदत है।'' सियार घबरा गया। ऊँट ने फिर डुबकी लगाई और सियार नदी में डूब गया।

शिक्षा—जैसे को तैसा।

संकेतों के आधार पर कहानी-रचना

नीचे दी हुई कहानी में संकेत दिए गए हैं। साथ ही उनसे बनने वाली कहानी भी दी जा रही है। इन उदाहरण में दी हुई कहानी को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा संकेतों के आधार पर स्वयं कहानी-रचना का प्रयास कीजिए—

एक ज़मींदार—बहुत-से नौकर—खेती की आमदनी का दिन-पर-दिन घटते जाना— मित्र की सलाह—''खेत की सैर करो''—कुछ नौकर गायब, कुछ चीज़ें गायब—रोज़ देखभाल—आँखें खुलना—खुद काम में जाना—सभी में उत्साह—आमदनी बढ़ना—सीख।

कहानी-रचना : अपना काम खुद करो

एक बड़ा ज़मींदार था। उसके पास बहुत-सी ज़मीन थी। अनेक नौकर-चाकर खेती के काम में लगे हुए थे। फिर ज़मींदार की आमदनी दिन-पर-दिन घटती जा रही थी। इसलिए ज़मींदार बहुत चिन्तित रहता था।

एक दिन ज़मींदार की भेंट अपने एक मित्र से हो गई। ज़मींदार के उदास चेहरे को देखकर उसने पूछा, ''मित्र, इतने दु:खी और चिंतित क्यों लग रहे हो?'' ज़मींदार ने सारा हाल कह सुनाया।

मित्र ने ज़मींदार को सलाह दी, ''रोज़ सुबह तुम खेत की सैर करो। तुम्हारी आमदनी अवश्य बढ़ जाएगी।''

मित्र की सलाह मानकर ज़मींदार दूसरे ही दिन सुबह खेत पर जा पहुँचा। उसने देखा कि कुछ नौकर गायब हैं, कुछ सो रहे हैं और कुछ गपशप कर रहे हैं। खेती के कुछ औज़ार भी गायब थे। यह देखकर ज़मींदार की समझ में सारी बात आ गई। उस दिन से वह रोज़ सुबह अपने खेत पर जाने लगा और काम की देखरेख करने लगा। खेती-बाड़ी के नए औज़ार भी खरीद लिए। अब सभी नौकर ठीक से काम करने लगे। मालिक के रोज़ आने से किसी को कोई चीज़ चुराने की हिम्मत नहीं होती। ज़मींदार की आमदनी धीरे-धीरे बढ़ने लगी।

शिक्षा—स्वयं पसीना बहाए बिना सम्पत्ति प्राप्त नहीं होती। अपना कारोबार दूसरों के भरोसे नहीं छोड़ना चाहिए।

अधूरी कहानी को पूरा करना

अधूरी कहानी को पूरा करते समय ध्यान रखना चाहिए कि उसका आगे का अंश दिए गए अंश से मेल खाता हो। नीचे एक अधूरी कहानी दी जा रही है। इसकी पूर्ति भी दी जा रही है। पढ़िए और समझिए—

अधूरी कहानी

किसी जंगल में एक सिंह रहता था। वह जंगल में प्रतिदिन कई पशुओं का शिकार करता था। एक दिन जंगल के पशुओं ने मिलकर उससे प्रार्थना की, ''महाराज, आप जंगल में शिकार के लिए न निकला करें। हम प्रतिदिन निश्चित समय पर आपके भोजन के लिए एक पशु आपके पास भेज दिया करेंगे। सिंह ने पशुओं की प्रार्थना स्वीकार कर ली।

वादे के अनुसार प्रतिदिन निश्चित समय पर एक पशु सिंह के पास आने लगा। एक दिन एक खरगोश की बारी आई। वह अपनी चतुराई के लिए प्रसिद्ध था। वह सिंह के पास जान बूझकर देरी से पहुँचा। सिंह को बहुत क्रोध आया। उसने खरगोश से देर से आने का कारण पूछा। खरगोश ने उत्तर दिया, "महाराज, रास्ते में मुझे एक अन्य सिंह मिल गया था। वह मुझे मारकर खाना चाहता था। मैं उससे जल्दी लौटने का वादा करके आपके पास आया हूँ।"

कहानी का शेषांश

खरगोश की बात सुनकर सिंह आपे से बाहर हो गया। वह गरजकर बोला, "चल, मुझे दिखा कहाँ है वह दूसरा सिंह ? मैं अभी उसका काम तमाम करता हूँ।" खरगोश सिंह को एक गहरे कुएँ के पास ले गया और बोला, "महाराज, इसी में छिपा है वह दुष्ट!" सिंह ने कुएँ में झाँका। कुएँ के पानी में उसे अपनी ही परछाई दिखाई दी। उसी को दूसरा सिंह समझकर वह कुएँ में कूद पड़ा और डूबकर मर गया। खरगोश की जान बच गई। जंगल के सभी पशुओं ने राहत की साँस ली और खरगोश को धन्यवाद दिया।

शिक्षा— बुद्धि शक्ति से बड़ी होती है। जो काम बल से न हो सके, उसे बुद्धि से करना चाहिए।

कुछ करके सीखें

1. निम्नांकित चित्रों के आधार पर संक्षिप्त कहानी लिखिए। साथ ही उससे मिलने वाली शिक्षा का भी उल्लेख कीजिए—

(क)

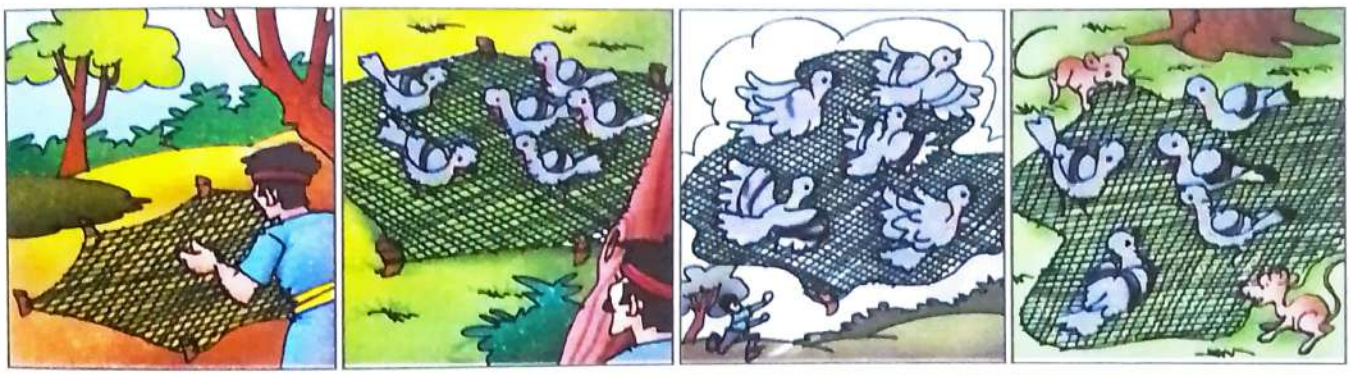

(ख)

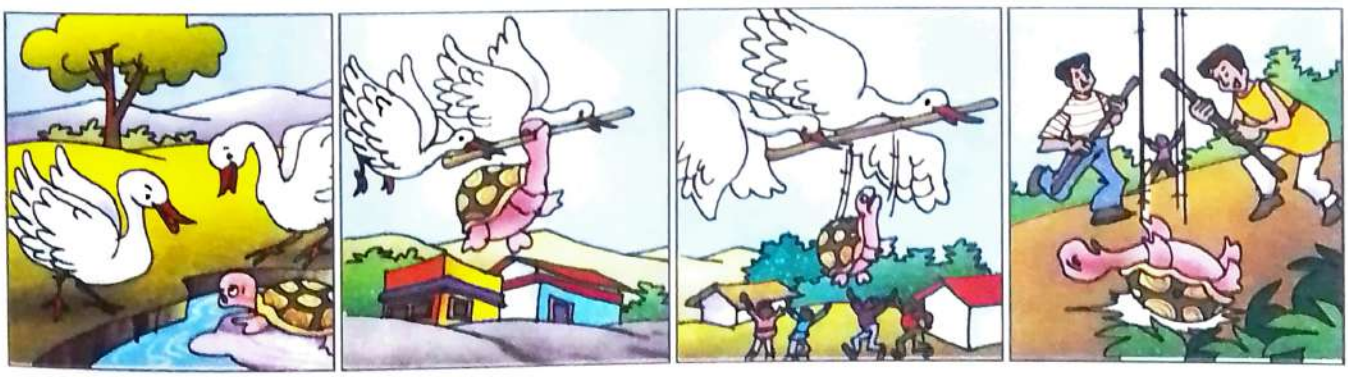

2. दिए गए संकेतों के आधार पर संक्षिप्त कहानियाँ लिखिए—

(क) पढ़ाई में कमज़ोर लड़का—एक ही कक्षा में दो बार अनुत्तीर्ण होना—जंगल में आत्महत्या करने जाना—एक बन्दर का बच्चा—पेड़ पर चढ़ने की कोशिश—बार-बार गिरना—अन्त में सफलता—बन्दर के बच्चे से सीख—लड़के का उत्साह—घर लौटना—पढ़ाई में जुट जाना—उत्तीर्ण होना—सीख।

(ख) एक भिखारी लड़का—चिल्ला-चिल्लाकर भीख माँगना—एक सज्जन का उसके पास आना—भीख माँगने का कारण पूछना—लड़के का उत्तर, "भूख और गरीबी।"—सज्जन का कहना, "तुम्हारे पास बहुत धन है।"—लड़के को आश्चर्य—सज्जन का कहना, "तुम एक हज़ार रुपये ले लो और अपने हाथ और पैर मुझे दे दो।"—लड़के का इंकार—"इन्हें गँवाकर तो मैं बेकार हो जाऊँगा"—"बेकार तो तुम अब भी हो।"—मेहनत करने की सीख।

3. नीचे दी गई अधूरी कहानियों को पूरा कीजिए—

(क) यमुना नदी के किनारे बरगद का एक पेड़ था। उस पर कौवे का एक जोड़ा रहता था। पेड़ के पास बिल में एक विषैला साँप रहता था। कौवा-कौवी जब आहार की तलाश में बाहर जाते, तब वह उनके बच्चों को खा जाता था। इससे कौवा-कौवी दोनों बहुत दु:खी थे। लेकिन वे उस साँप के सामने लाचार थे।

एक बार इन्द्रप्रस्थ राज्य की राजकुमारी अपनी सखियों और सेवकों के साथ उस नदी पर स्नान करने आई। उसने अपनी अन्य वस्तुओं के साथ अपना सोने का हार भी किनारे पर रख दिया। वह सखियों के साथ स्नान करने के लिए नदी में उतर गई। राजकुमारी के सोने के हार पर कौवे की नज़र पड़ी। उसे एक युक्ति सूझी। उसने हार उठाकर साँप के बिल के पास रख दिया।

राजकुमारी स्नान करके नदी से बाहर आई। अपना हार वहाँ न पाकर वह चीख पड़ी। उसने अपने सेवकों को बुलाया और हार ढूँढ़ लाने का आदेश दिया। .....

(ख) एक रात चार चोरों ने मिलकर एक सेठ के घर में चोरी की। चोरी में उन्हें बहुत-सा धन मिला। उस धन का बँटवारा करने के लिए वे जंगल में गए।

जंगल में पहुँचने पर चोरों को बहुत ज़ोर की भूख लगी। सुबह होने ही वाली थी। उनमें से दो चोर मिठाई खरीदने के लिए शहर की ओर रवाना हुए। रास्ते में उन दोनों की नीयत बिगड़ गई। उन्होंने सोचा कि जंगल में बैठे हुए दोनों चोरों को मारकर सारा माल हम हजम कर लें। इस इरादे से उन्होंने मिठाई खरीदकर उसमें से कुछ खाई और बाकी बची हुई मिठाई में ज़हर मिला दिया।

19

पत्र-लेखन
Letter-Writing

पत्र-लेखन एक कला है, इससे लिखने वाले के व्यक्तित्व, ज्ञान और विचारों का पता चलता है। पत्र-लेखन की कला को अभ्यास द्वारा सीखा और विकसित किया जा सकता है।

अच्छे पत्र में निम्नलिखित विशेषताएँ होनी चाहिए—

- पत्र भावपूर्ण सुन्दर शैली में लिखना चाहिए।
- पत्र में विचारों की स्पष्टता होनी चाहिए।
- पत्र ऐसे लिखना चाहिए मानो जिसे हम पत्र लिख रहे हैं, वह हमारे सामने बैठा है और हमसे बातें कर रहा है।
- प्रत्येक वाक्य और प्रत्येक बात एक-दूसरे से सम्बन्धित हो।
- पत्र लिखने में यह ध्यान रहे कि पत्र में किसी अनुचित और अभद्र बात का वर्णन न हो।

पत्रों के रूप

पत्रों के अनेक रूप होते हैं। पत्र प्रमुख रूप से दो प्रकार के होते हैं—

1. औपचारिक-पत्र तथा 2. अनौपचारिक-पत्र।

1. औपचारिक-पत्र—ऐसे पत्र जो सरकारी कार्यालय के अधिकारी, विद्यालय के प्रधानाचार्य, सम्पादक, व्यापारिक संस्थान के अधिकारियों या दुकानदारों को लिखे जाते हैं, उन्हें औपचारिक-पत्र कहते हैं।

निमन्त्रण-पत्र, प्रार्थना-पत्र, आवेदन-पत्र, शिकायती-पत्र, व्यावसायिक-पत्र और शासकीय कार्यालय-पत्र इसी श्रेणी में आते हैं।

2. अनौपचारिक-पत्र—इन्हें व्यक्तिगत पत्र भी कहते हैं। सगे-सम्बन्धियों, मित्रों, परिचितों आदि को लिखे जाने वाले पत्र अनौपचारिक-पत्र कहलाते हैं।

औपचारिक-पत्र

1. चरित्र एवं स्थानान्तरण प्रमाण-पत्र लेने के लिए प्रधानाचार्य को प्रार्थना-पत्र

सेवा में,

माननीय प्रधानाचार्य,

आर०जे०पी० इंटर कॉलेज,

बिजनौर।

दिनांक : .....

विषय—स्थानान्तरण प्रमाण-पत्र, (टी०सी०) लेने के लिए प्रार्थना-पत्र।

आदरणीय महोदय,

सविनय निवेदन है कि मैंने इस वर्ष कक्षा 7 उत्तीर्ण की है। मेरे पिता जी का स्थानान्तरण यहाँ से कानपुर के लिए हो

गया है। इस कारण मुझे भी वहीं पर प्रवेश लेना पड़ेगा। इसके लिए मुझे चरित्र और स्थानान्तरण प्रमाण-पत्र की आवश्यकता है। अत: मुझे उक्त प्रमाण-पत्र दिलाने की कृपा करें।

आपका विनीत छात्र
जोगिन्दर सिंह
कक्षा : सात 'बी'

2. बार-बार बिजली जाने पर बिजली विभाग के नाम शिकायती पत्र

सेवा में,
कार्यकारी अधिकारी,
दिल्ली विद्युत् बोर्ड,
निजामुद्दीन (पश्चिम), नई दिल्ली—110013

विषय—बार-बार बिजली जाने की शिकायत

मान्यवर,

अपने क्षेत्र के छात्रों की ओर से मैं आपका ध्यान हमारे क्षेत्र में चल रही बिजली की आँख-मिचौनी की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। आजकल हमारी परीक्षाएँ चल रही हैं। ऐसे में बिजली का यह खेल कितनी परेशानी करता होगा आप स्वयं अनुभव कर सकते हैं। दिन हो या रात, बिजली थोड़ी देर के लिए आती है और फिर घण्टों गायब हो जाती है। कभी-कभी तो पूरे दिन तथा पूरी रात नहीं आती।

सभी की ओर से आपसे अनुरोध है कि हमारी परीक्षाओं तक तो बिजली आपूर्ति को ठीक-ठाक रखें।

सधन्यवाद।

भवदीय
मोहित शाह
ए-27, निजामुद्दीन (पश्चिम),
नई दिल्ली—110013
दिनांक : .....

अनौपचारिक-पत्र

1. सहेली को जन्मदिन पर बधाई देते हुए पत्र

386-सेक्टर 12,
चंडीगढ़।
दिनांक : .....

प्रिय नमिता,

आज तुम्हारे जन्म-दिवस के शुभ अवसर पर मैं तुम्हारी मृदु मुस्कान को स्मरण कर प्रसन्नता से फूली नहीं समा रही हूँ। मैं तुम्हें हार्दिक बधाई देती हूँ और तुम्हारे सुखद एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हूँ। मैं तुम्हारे लिए एक छोटा-सा उपहार भेज रही हूँ, कृपया उसे स्वीकार करना।

आदरणीय अंकल जी व आण्टी जी को मेरा नमस्कार कहना और छोटे भाई सुलभ को प्यार देना।

पत्र की प्रतीक्षा में,

तुम्हारी सखी

सैयद सीमा।

2. बीमार मित्र को सान्त्वना-पत्र

अवन्तिका

रोहिणी, दिल्ली—110085

दिनांक : .....

प्रिय मित्र रोहित

सप्रेम नमस्ते।

आज ही तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारी अस्वस्थता का समाचार पाकर बहुत चिन्तित हूँ।

तुम अपैंडिक्स के ऑपरेशन के लिए कस्तूरबा गांधी अस्पताल में दाखिल हुए हो। मित्र ऑपरेशन का नाम सुनकर तुम्हें परेशान होने की आवश्यकता नहीं है। मैंने अपने डॉ० चाचा जी से इसके बारे में बातचीत की है। उन्होंने बताया कि यह मामूली-सा ऑपरेशन है, घबराने की कोई बात नहीं है।

मुझे विश्वास है कि तुम्हारा यह ऑपरेशन पूर्ण सफल रहेगा। चिकित्सकों के अनुदेशों का पूरी तरह पालन करना। मैं जल्दी ही तुमसे मिलने आऊँगा।

तुम्हारे स्वास्थ्य के लिए शुभकामना।

तुम्हारा अभिन्न मित्र

कमल कान्त।

- निम्नलिखित विषयों पर पत्र लिखिए—

1. दादा जी को पत्र लिखकर पारिवारिक कुशलता का समाचार दीजिए।
2. कुछ आवश्यक पुस्तकें खरीदने के लिए अतिरिक्त रुपये भेजने के लिए पिता जी को पत्र लिखिए।
3. अपने मित्र को पत्र लिखकर विद्यालय की क्रिकेट टीम का कप्तान चुने जाने की सूचना दीजिए।
4. छात्रावास से माता जी को पत्र लिखकर अपनी पढ़ाई के विषय में बताइए।
5. बड़े भाई के विवाह में शामिल होने के लिए पाँच दिन के अवकाश हेतु प्रधानाचार्य को प्रार्थना-पत्र लिखिए।
6. नगर स्वास्थ्य अधिकारी को अपने क्षेत्र में फैले मलेरिया/डेंगू की रोकथाम के लिए पत्र लिखिए।
7. प्रकाशक/पुस्तक-विक्रेता से आवश्यक पुस्तकें वी०पी०पी० द्वारा मँगवाने के लिए पत्र लिखिए।

20 निबन्ध लेखन

निबन्ध लेखन एक कला है जिसमें लेखक अपने भावों एवं विचारों को अपनी भाषा शैली में व्यक्त करता है। निबन्ध शब्द दो शब्दों के मेल से बना है— नि + बन्ध। इसका शाब्दिक अर्थ है— अच्छी तरह बंधा हुआ। किसी विषय पर व्यवस्थित रूप में विचारों को व्यक्त किया जाता है, तो उसे निबन्ध कहा जाता है। निबन्ध लेखन में कुशलता पाने के लिए अभ्यास की आवश्यकता होती है। निबन्ध की भाषा सरल एवं सजीव होनी चाहिए। उदाहरणों, मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग भाषा को सजीवता प्रदान करता है।

निबन्ध लिखते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए—

1. जिस विषय पर निबन्ध लिखना हो, उससे सम्बन्धित सामग्री या जानकारी एकत्र कर लेनी चाहिए।
2. निबन्ध की रूपरेखा बनाकर क्रमबद्ध कर लेना चाहिए। इससे निबन्ध की विषय-वस्तु सुव्यवस्थित एवं सन्तुलित हो जाती है।
3. निबन्ध की विषय-वस्तु के अनुरूप किसी समुचित उद्धरण या काव्य-पंक्ति का चयन करना चाहिए।
4. इस सामग्री को तीन भागों में विभक्त कर देना चाहिए— प्रस्तावना, विस्तार और उपसंहार।

- प्रस्तावना में निबन्ध की भूमिका लिखी जाती है। इसमें लेखक यह बताता है कि वह किस विषय पर क्या और कैसे लिखना चाहता है।
- निबन्ध का आरम्भ किसी काव्य-पंक्ति, उद्धरण, सूक्ति या घटना से करना चाहिए या सीधे विषय पर आकर भी किया जा सकता है।
- विस्तार में लेखक उस विषय पर अपने विचार सविस्तार और मनोरंजक शैली में प्रस्तुत करता है।
- मध्य भाग में निबन्ध से सम्बन्धित सभी बातों का उल्लेख करना चाहिए।
- उपसंहार में लेखक को आरम्भ से अन्त तक लिखी गई बातों का सार लिखने के उपरान्त अन्त में उसके पक्ष और विपक्ष में विचार व्यक्त करने चाहिए।

1. राष्ट्रीय एकता

प्रस्तावना—जिस प्रकार एक बगीचे में भिन्न-भिन्न रंगों के फूल होते हैं और उसे हम उपवन की संज्ञा देते हैं, उसी प्रकार भारत में भिन्न-भिन्न प्रकार के धर्म, रंग, रूप, वेश और भाषा के होते हुए भी हम सब एक सूत्र में बंधकर रहते हैं। भिन्न-भिन्न धर्मों को मानने वाले हम एक ही हैं।

अनेकता में एकता का प्रतिबिम्ब—भारत का अतीत बड़ा ही गौरवशाली रहा है। आर्य और द्रविड़ संस्कृतियाँ साथ-साथ रही हैं। संस्कृत और तमिल विश्व की प्राचीनतम भाषाएं आज भी जीवित हैं। वैदिक धर्म यहाँ का प्राचीनतम धर्म है। हमारे लिए भिन्न-भिन्न धर्म एक ही ईश्वर की ओर ले जाने वाले अलग-अलग रास्ते हैं। भारत हमारी जन्मभूमि, कर्मभूमि है, हमारी सामूहिक पहचान है।

उत्तर में कश्मीर से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी तक और पश्चिम में गुजरात से लेकर पूर्व मे अरुणाचल तक भारत एक है। इसके चारों कोनों पर बसे तीर्थ इस एकता की कड़ियाँ हैं। जगह-जगह बने गुरुद्वारे, देवी मन्दिर, जैन मन्दिर, बौद्ध मठ, मस्जिदें और दरगाहें तथा गिरजाघर मिली-जुली भारतीय संस्कृति के प्रतीक है। भारत की नदियाँ और उनके आसपास बसे तीर्थस्थल सांस्कृतिक एकता का प्रतीक हैं। इतनी विविधता के होने के बाद भी भारत प्राचीनकाल से एकता के सूत्र में बँधा रहा है। यहाँ सबको अपने भावों और विचारों को अभिव्यक्त करने की स्वतंत्रता है। भिन्न-भिन्न प्रान्तों में रह रहा प्रत्येक भारतवासी गर्व से कहता है कि हम सब भारतवासी हैं। विदेशों में हमारी पहचान धर्म और जाति के नाम से नहीं, वरन् भारतवासी के नाते से होती है।

राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता—राष्ट्र की आन्तरिक शक्ति तथा सुव्यवस्था और बाह्य सुरक्षा की दृष्टि से राष्ट्र की एकता परम आवश्यक है। जब भी देश में आपसी भेदभाव और फूट पड़ी है विदेशियों ने उसका पूरा-पूरा लाभ उठाया है। अत: देश की स्वतन्त्रता को बनाए रखने के लिए राष्ट्रीय एकता आवश्यक है।

राष्ट्रीय एकता को खण्डित करने वाले कारण—राष्ट्रीयता के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा साम्प्रदायिकता की भावना है। साम्प्रदायिकता एक विषैला सर्प है, जो अपना विष आम भोले-भाले लोगों पर उड़ेलता जा रहा है। साम्प्रदायिक सद्भाव की दृष्टि से सभी धर्मों में सेवा, परोपकार, सत्य, प्रेम, समता, नैतिकता, अहिंसा, पवित्रता आदि गुण मिलते हैं। जहाँ भी द्वेष, घृणा और विरोध है, वहाँ धर्म नहीं है। देशप्रेम की भावना के द्वारा ही साम्प्रदायिक सद्भाव और सौहार्द को बढ़ाया जा सकता है।

दूसरा कारण भाषागत विवाद है। बहुभाषी राष्ट्र होने के कारण विभिन्न प्रान्तों की अलग बोलियाँ और भाषाएं हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपनी भाषा को श्रेष्ठ और उसके साहित्य को महान मानता है। यदि कोई व्यक्ति अपनी मातृभाषा के मोह के कारण दूसरी भाषा का अपमान करता है तो वह राष्ट्रीय एकता पर प्रहार करता है।

तीसरा कारण प्रान्तीयता की भावना है। कभी-कभी किसी अंचल विशेष के निवासी अपने पृथक् अस्तित्व की माँग करते हैं। ऐसी माँग करने के कारण राष्ट्रीय एकता तथा अखंडता का विचार ही समाप्त हो जाता है। हममें यह भावना हमेशा विद्यमान रहनी चाहिए कि हम इस सम्पूर्ण राष्ट्र के नागरिक हैं।

राष्ट्रीय एकता के समक्ष एक संकट जातिवाद भी है। प्रत्येक जाति अपने को दूसरी जाति से उच्च समझती है। अपना प्रभुत्व बनाए रखने की होड़ से जातिवाद ने राष्ट्रीय एकता को बुरी तरह प्रभावित किया है।

राष्ट्रीय एकता बनाए रखने के उपाय—राष्ट्रीय एकता को बनाए रखने के लिए निम्न बातों का ध्यान रखना आवश्यक है—

1. **सर्वधर्म समभाव**—सभी धर्मों का सम्मान करना चाहिए। धार्मिकता अथवा साम्प्रदायिकता के आधार पर किसी धर्म को ऊँचा, नीचा या छोटा-बड़ा नहीं समझना चाहिए। ईश्वर-प्राप्ति के लिए सबकी मंज़िल एक है, रास्ते अलग हैं।
2. अलगाववादी भावना के स्थान पर राष्ट्रीय भावना का विकास होना चाहिए। 'हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई आपस में हैं भाई-भाई' की भावना राष्ट्रीय एकता का मूलमंत्र होना चाहिए।
3. शिक्षा का प्रसार मन को उदार तथा हमारे दृष्टिकोण को व्यापक बनाता है। बच्चों के मन में प्रारम्भिक शिक्षा से ही सर्वधर्म समभाव की भावना तथा राष्ट्रीय एकता की भावना भरनी चाहिए।

उपसंहार—अपने देश के प्रति प्रेम और भक्ति मनुष्य का स्वाभाविक गुण है। इसी गुण का विकास करके हम राष्ट्रीय एकता के सूत्र में बँधे हैं। धार्मिक सहिष्णुता और सौहार्द का जैसा संगम व समन्वय जहाँ देखने को मिलता है, वैसा

अन्यत्र मिलना दुर्लभ है। इसीलिए अभी तक शायद भारत को सभ्यता मुखर है। कवि इकबाल के शब्दो मे—

यूनान मिस्र रोमां सब मिट गए जहाँ से।
अब तक मगर है बाकी, नामो-निशाँ हमारा ।।

2. दूरदर्शन की उपयोगिता

प्रस्तावना—दूरदर्शन विज्ञान द्वारा प्रदत्त आश्चर्यजनक उपहार है। आज के युग मे व्यक्ति का जीवन बहुत व्यस्त है वह सारा दिन श्रम करके थकान व चिन्ता से मुक्ति के लिए कुछ मनोरंजन चाहता है। दूरदर्शन के आविष्कार से उनकी इस आवश्यकता की कुछ सीमा तक पूर्ति हुई है। एक नृत्य करती हुई तारिका, हास्य-विनोद करता हुआ विदूषक आदि को देखकर हम तन्मय हो जाते हैं। दूरदर्शन न केवल मनोरंजन का साधन है, अपितु जन-शिक्षा का भी उत्तम माध्यम है। इसने जीवन के विविध क्षेत्रों में व्यक्ति का ज्ञान बढ़ाया है, फलस्वरूप यह बहुत उपयोगी और प्रभावी सिद्ध हुआ है।

दूरदर्शन का आविष्कार तथा तकनीक—दूरदर्शन का आविष्कार 25 जनवरी, सन् 1926 को इंग्लैंड के एक इंजीनियर जॉन बेयर्ड ने किया था। दूरदर्शन यन्त्र प्रकाश को विद्युत-तरंगो में बदलकर प्रसारित करता है और दूरदर्शन द्वारा प्रसारित किए जा रहे दृश्य को हम देख सकते हैं। दूरदर्शन के प्रसारण यन्त्र के लिए एक विशेष प्रकार का कैमरा होता है। इस कैमरे के सामने का दृश्य जिस परदे पर प्रतिबिम्बित होता है, उसे 'मैजोक' कहते हैं। मैजोक पर लगा रासायनिक लेप इस पर पड़ने वाले प्रकाश से प्रभावित होता है।

दूरदर्शन से लाभ—दूरदर्शन से कई लाभ होते हैं। यह केवल मनोरंजन के लिए ही नहीं, अपितु वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए भी आवश्यक है। चन्द्रमा, शुक्र व मंगल ग्रहों पर भेजे गए अन्तरिक्ष यानों में दूरदर्शन के यन्त्रों का प्रयोग किया गया जिन्होंने वहाँ के बड़े स्पष्ट और सुन्दर चित्र भेजे। उन्हें देखकर ऐसा अनुभव होता है कि हम साक्षात् रूप से उन ग्रहो पर घूम-फिर रहे हों। एक अनुभवी सर्जन द्वारा किए जाने वाले ऑपरेशन को अधिक-से-अधिक पाँच-छः विद्यार्थी देख सकते हैं, किन्तु टेलीविज़न की सहायता से उसे असंख्य विद्यार्थी सुगमता से देख सकते हैं।

दूरदर्शन से शिक्षा के क्षेत्र में भी अनेक लाभ हुए हैं। इसके माध्यम से विद्यार्थी प्रभावशाली ढंग से पाठ का अध्ययन कर सकता है और यह विविध विषयों में विद्यार्थियों की अभिरुचि विकसित कर सकता है। इतिहास के आदर्श चरित्र दूरदर्शन पर देखकर चारित्रिक विकास होता है। देश-विदेश के भौगोलिक स्थानों को देखकर हमारे ज्ञान का विकास होता है। हम विभिन्न देशों के रहन-सहन, उनकी अत्यन्त विशाल व उपयोगी योजनाओं को दूरदर्शन के माध्यम से देखकर उनकी प्रगति से अवगत हो सकते हैं तथा प्रेरणा ले सकते हैं।

भारत एक कृषिप्रधान देश है। दूरदर्शन के माध्यम से हम कृषि की आधुनिक तकनीक, बीज और उत्तम खाद के प्रयोग तथा उनके परिणामों को प्रत्यक्ष रूप से देखते हैं। इससे किसानों में खेती करने की वैज्ञानिक विधि का ज्ञान विकसित होता है।

सामाजिक चेतना के क्षेत्र में दूरदर्शन की महत्त्वपूर्ण भूमिका को भुलाया नहीं जा सकता। इसकी सहायता से बाल-विवाह, दहेज-प्रथा, छुआछूत तथा साम्प्रदायिकता के विरुद्ध अच्छा जनमत तैयार हुआ है। दूरदर्शन द्वारा प्रस्तुत बाल समाज, नारी कल्याण और परिवार नियोजन का ज्ञान सामाजिक चेतना की दृष्टि से बड़ा उपयोगी सिद्ध हुआ है। दूरदर्शन उत्पादित वस्तुओं के प्रचार और प्रसार का भी प्रमुख माध्यम है। टेलीविज़न पर जीवनोपयोगी वस्तुओं के विज्ञापन देखकर लोग बहुत बड़ी संख्या में उनकी ओर आकृष्ट होते हैं। दूरदर्शन के माध्यम से जनसाधारण को अल्पबचत, जीवन बीमा आदि कई कल्याणकारी योजनाओं का भी ज्ञान कराया जाता है।

दूरदर्शन खेलों के सम्बन्ध में भी जनसाधारण की जानकारी बढ़ाता है। यह खेलों के प्रति रुचि जाग्रत करके खेल और खिलाड़ी की सच्ची भावना पैदा करता है। इसके माध्यम से दर्शक कुश्ती, तैराकी, बैडमिण्टन, फुटबॉल, क्रिकेट, हॉकी आदि के मैच देखकर उनके बारे में कई नवीन जानकारियों का अर्जन करते हैं।

दूरदर्शन की कमियाँ—दूरदर्शन से जहाँ अनेक लाभ हैं, वहीं उसकी कुछ कमियाँ भी हैं। सभी लोग, विशेषकर पढ़ने वाले बच्चे, इसके आदी हो जाते हैं और अपना बहुमूल्य समय इसे देखने में ही बिता देते हैं। इनके कार्यक्रमों को करीब बैठकर देखने से आँखों पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है। दूरदर्शन से सबसे बड़ी हानि यह हुई है कि व्यक्ति सामाजिक दृष्टि से एकाकी होता जा रहा है। दूरदर्शन के कार्यक्रम के समय किसी के पास मिलने जाने पर उससे कार्यक्रम के प्रति लगाव के कारण आत्मीयता का अभाव-सा लगता है। वैसे दूरदर्शन का प्रयोग यदि दूरदर्शिता से करें तो ये कमियाँ दूर हो सकती हैं और दूरदर्शन का पूरा लाभ उठाया जा सकता है।

उपसंहार—इस प्रकार, दूरदर्शन हमारे मनोरंजन व शिक्षा आदि का सशक्त साधन है। कई बार हम दूरस्थ स्थानों पर आयोजित जिन समारोहों, प्रतियोगिताओं आदि को देखने नहीं पहुँच पाते, दूरदर्शन के माध्यम से वहाँ पर उपस्थित रहने जैसा आनन्द पा सकते हैं।

3. विद्यार्थी जीवन

विद्यार्थी समाज व राष्ट्र के आशा-सुमन होते हैं। वे राष्ट्र के भावी कर्णधार और शक्ति के स्रोत होते हैं। जिस देश का विद्यार्थीवर्ग सजग, सचेत, परिश्रमी व पुरुषार्थी है, वह देश निश्चय ही गौरवशाली, सशक्त और महान है।

विद्यार्थी शब्द दो शब्दों के मेल से बना है—विद्या + अर्थी। इस प्रकार, जो विद्या को चाहता है, वह विद्यार्थी है। विद्या को चाहने वाला परिश्रम करता है, अपना भाग्य बनाता है और अपनी उन्नति करता है। प्राचीनकाल में विद्यार्थी गाँव-नगर से दूर वन में आश्रम में रहता था और वहाँ विद्याभ्यास के साथ-साथ गुरु की सेवा भी करता था। उसे व्यावहारिक ज्ञान के सम्यक् समन्वय की शिक्षा साथ-साथ मिलती थी। जीवन के पच्चीस वर्ष वह विद्याध्ययन में व्यतीत करता था। वह गुरु के आश्रम में रहकर स्वावलम्बन, सदाचार, पुरुषार्थ का पाठ पढ़ता था। आलस्य और प्रमाद उसके निकट भी नहीं आता था। आचार्य चाणक्य ने आदर्श विद्यार्थी के गुण बताते हुए कहा है—

काक चेष्टा, बकोध्यानं, श्वान निद्रा तदैव च ।
अल्पाहारी गृहत्यागी, विद्यार्थिनः पंचलक्षणम् ।।

अर्थात् विद्यार्थी कौए के समान चेष्टाशील होता है। जैसे कौआ सदा सावधान और सजग रहता है, उसी प्रकार विद्यार्थी को भी ज्ञान-प्राप्ति के लिए चेष्टा रखनी चाहिए। वह बगुले के समान ध्यानरत रहकर अपना चित्त सदैव लक्ष्य की ओर रखता है। आदर्श विद्यार्थी आलसी नहीं होता। जैसे तनिक-सी आहट होने पर कुत्ता जाग जाता है, उसी प्रकार अच्छा विद्यार्थी घोड़े बेचकर नहीं सोता। वह अल्प भोजन करता है, अधिक भोजन करने वाला तो पेटू होता है। साथ ही वह गृहत्यागी होता है अर्थात् वह माता-पिता और घर के मोह से दूर सतत विद्या-साधना करता है।

विद्यार्थी का कर्तव्य है कि वह माता-पिता की प्रतिष्ठा बढ़ाए। उसका कर्तव्य है कि अध्ययन में मन रमाए। गुरु का अर्थ है—अज्ञान का अन्धकार मिटाने वाला। अतः विद्यार्थी को ज्ञानरूपी लक्ष्मी प्राप्त करनी हो तो उसे गुरु के प्रति अटूट श्रद्धा रखनी ही होगी। उसे आरुणि की भाँति आज्ञापालक व एकलव्य की तरह गुरुभक्त होना चाहिए।

आज समाज में फूट और वैमनस्य का बोलबाला हो गया है। यदि विद्यार्थी को सही नेतृत्व नहीं मिला तो उसका जीवन अन्धकारमय हो जाएगा। विद्यार्थी जीवन स्वस्थ, सबल व अनुशासित बनेगा तभी तो शक्तिशाली व सबल राष्ट्र का निर्माण हो सकेगा।

आज हमारे सामने कई समस्याएँ सुरसा की तरह मुँह बाये खड़ी हैं। अन्धविश्वास, अशिक्षा का बोलबाला है, जनसंख्या भयंकर रूप से बढ़ रही है। ऐसी स्थिति में विद्यार्थी ही अपने ज्ञान को बढ़ाकर इन समस्याओं को सुलझा सकते हैं, इनसे छुटकारा दिला सकते हैं।

आजकल सभी राजनैतिक दल अपने लाभ के लिए छात्रों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। उन्हें पढ़ने-लिखने के वातावरण से दूर कर अपने राजनैतिक स्वार्थों की पूर्ति के लिए प्रयोग करते हैं। आधुनिक विद्यार्थी फ़ैशन का दीवाना, पश्चिमी सभ्यता का दास, अनुशासित भारतीय संस्कृति से दूर होता जा रहा है। ऐसी स्थिति में विद्यार्थी को संकल्पपूर्वक देश की उन्नति को लक्ष्य बनाना चाहिए।

4. हमारा नया साथी—कम्प्यूटर

मनुष्य आवश्यकताओं के अनुसार नए-नए आविष्कार करता है। समय निरन्तर परिवर्तित होता रहता है। इसके साथ-साथ मनुष्य की आवश्यकताएँ परिवर्तित होती हैं। इन्हीं आवश्यकताओं के कारण आविष्कार होते हैं। इसीलिए आवश्यकता को आविष्कार की जननी कहा गया है। कम्प्यूटर विज्ञान का नवीनतम और अद्‌भुत आविष्कार है। यह बटन दबाते ही मनुष्य के आदेशों का पालन करता है।

कम्प्यूटर छोटी-सी दुकान के काम भी करता है और भयंकर परमाणु-बम बनाने के काम भी आता है। इसके विकास की शुरुआत लगभग तीन हज़ार वर्ष पूर्व चीन में 'अबेकस' यन्त्र के रूप में हुई थी जो गिनती के काम आता था। इसे प्राचीनतम कम्प्यूटर माना जाता है। इसके पश्चात् 'पास्कल' द्वारा बनाई गई मशीनों ने नए कम्प्यूटर बनाने का मार्ग तैयार किया। अठारहवीं शताब्दी में चार्ल्स बैबेज ने 'एनालिटिकल इंजन' नामक मशीन बनायी। इस मशीन की कार्य-प्रणाली ने आधुनिक कम्प्यूटर के आविष्कार का मार्ग प्रशस्त किया। इसीलिए बैबेज को आधुनिक कम्प्यूटर का 'जनक' माना जाता है।

कम्प्यूटर में मुख्य रूप से चार भाग होते हैं। ये हैं— इनपुट इकाई (इनपुट-यूनिट), स्मृति (मेमोरी), प्रोसेसर और आउटपुट इकाई (आउटपुट यूनिट)।

कम्प्यूटर द्वारा कार्य तेज गति से और त्रुटिहीन होता है। इसलिए यह घर-घर पहुँच गया है। गृहिणी खर्च किए गए एक-एक पैसे का हिसाब-किताब कम्प्यूटर से कर लेती हैं। बच्चे इस पर भाँति-भाँति के खेल खेलते हैं। कम्प्यूटर पर मुक्केबाज़ी करने से लेकर चित्र बनाने तक का काम किया जा सकता है। इसमें विभिन्न विषयों से सम्बन्धित सारी सूचनाएँ भर दी जाती हैं। आवश्यकता पड़ने पर मनचाही जानकारी प्राप्त कर ली जाती है। कर्मचारियों के वेतन का हिसाब-किताब भी कम्प्यूटर कर देता है। कम्प्यूटर चिकित्सा के क्षेत्र में जटिल-से-जटिल बीमारियों को पहचानकर उनके इलाज का सुझाव भी दे सकता है।

कम्प्यूटर ने शिक्षा के क्षेत्र में क्रान्ति ला दी है। कम्प्यूटर एक दिन में हज़ारों पुस्तकें छापने की क्षमता रखते हैं। पहले छापेखाने में सारा काम हाथ से होता था। अब कम्प्यूटर से पुस्तक की कम्पोजिंग हो जाती है। कम्प्यूटर के साथ लगा प्रिण्टर छपाई का काम करता चला जाता है।

रेल विभाग में आरक्षण का सारा कार्य कम्प्यूटर करने लगे हैं। ई-मेल द्वारा एक कम्प्यूटर से दूसरे कम्प्यूटर तक सन्देश पहुँचाया जा सकता है। 'इन्टरनेट' के माध्यम से सारा संसार एक-दूसरे से जुड़ गया है। जन्मकुण्डली बनाने से लेकर भविष्यवाणी करने तक का कार्य कम्प्यूटर करने लगे हैं।

ज्ञान का ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है, जिसकी जानकारी कम्प्यूटर न दे सकता हो। कभी-कभी लगता है कम्प्यूटर के रूप में हमारे हाथ में अलादीन का चिराग लग गया है। बटन दबाते ही चिराग का जिन्न हमारे आदेश प्राप्त करने के लिए तैयार रहता है। वास्तव में कम्प्यूटर हमारा सहयोगी और मित्र है, ऐसा मित्र जो निस्वार्थ भाव से हमारे कहे सभी कार्य कर देता है। है न कम्प्यूटर चमत्कार!

कुछ करके सीखें

नीचे दिए गए संकेत-बिन्दुओं के आधार पर निबन्ध लिखिए—

(क) विद्यार्थी और अनुशासन

- प्रस्तावना
- विद्यार्थियों में बढ़ता आक्रोश
- अनुशासन का महत्त्व
- बेरोज़गारी एक कारण
- विद्यार्थी का शाब्दिक अर्थ
- दूरदर्शन तथा पाश्चात्य सभ्यता का असर
- वर्तमान शिक्षा पद्धति का असर

(ख) समाचार-पत्रों की उपयोगिता

- प्रस्तावना
- समाचार-पत्रों के प्रकार
- समाचार-पत्रों के लाभ
- उपसंहार
- समाचार-पत्रों का इतिहास
- देश के प्रमुख समाचार-पत्र
- समाचार-पत्रों के अनुचित प्रयोग से हानियाँ

(ग) गाँवों का देश—भारत

- प्रस्तावना—सभ्यता के जनक और प्रतीक
- मुगल काल में गाँव
- गाँवों का प्रमुख व्यवसाय
- गाँवों में शिक्षा की स्थिति
- उपसंहार
- प्राचीन काल में गाँव
- ब्रिटिश काल में तथा आज़ादी के बाद गाँव
- गाँवों में स्वास्थ्य की स्थिति
- गाँवों की स्थिति सुधारने के उपाय

2. निम्नलिखित विषयों पर लगभग 200 शब्दों में निबन्ध लिखिए—

(क) उपयोगी पशु : गाय
(ख) आपका प्रिय खेल
(ग) गणतन्त्र-दिवस
(घ) किसी मेले का वर्णन
(ङ) विज्ञान के चमत्कार
(च) रंगों का पर्व—होली
(छ) वर्षा ऋतु
(ज) वृक्ष ही जीवन है
(झ) मेरे जीवन का लक्ष्य
(ञ) विद्यालय का वार्षिकोत्सव।

21

अपठित-बोध
Unseen Passages

'अपठित' शब्द दो शब्दों के मेल से बना है 'अ + पठित', जिसका सीधा-सादा अर्थ है—जो पढ़ा हुआ न हो अर्थात् जो निर्धारित पाठ्य-पुस्तकों में न आया हो। भाषा के अध्ययन में अपठित गद्यांश और पद्यांश के आकलन का बहुत महत्त्व है। इनके माध्यम से विद्यार्थी की अर्थग्रहण और अभिव्यक्ति की क्षमता का मूल्यांकन किया जाता है।

अपठित गद्यांश

परीक्षा में अपठित गद्यांश दिए जाते हैं जिनके नीचे कुछ प्रश्न छपे होते हैं। प्रश्न बहुविकल्पीय रूप में भी हो सकते हैं। विद्यार्थियों को इन प्रश्नों के उत्तर गद्यांश को पढ़कर देने होते हैं। कई बार अपठित गद्यांश का शीर्षक भी पूछा जाता है।

अपठित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर देते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए—

- दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर ढूँढ़ने का प्रयास करना चाहिए।
- उत्तर सरल भाषा में तथा संक्षिप्त होने चाहिए। मुहावरों, लोकोक्तियों आदि का प्रयोग नहीं करना चाहिए।
- उत्तर गद्यांश की विषय-वस्तु पर आधारित होने चाहिए। अपनी ओर से कोई बात नहीं जोड़नी चाहिए।
- बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर देने से पहले सभी विकल्पों को ध्यान से पढ़ना चाहिए।
- यदि 'शीर्षक' भी पूछा गया हो, तो वह संक्षिप्त तथा गद्यांश के मूलभाव के अनुरूप होना चाहिए।

नीचे एक अपठित गद्यांश प्रश्नोत्तर सहित दिया गया है, उसे ध्यान से पढ़िए—

हमें स्वराज्य तो मिल गया, परन्तु सुराज्य अभी हमारे लिए सुखद स्वप्न ही है। इसका प्रधान कारण यह है कि देश को समृद्ध बनाने के उद्देश्य से कठोर परिश्रम करना हमने अब तक नहीं सीखा। श्रम का महत्त्व और मूल्य हम जानते ही नहीं। हम अब भी आरामतलब हैं। हाथों से हमें यथेष्ट काम करने में रुचि नहीं है। हाथों से काम करने को हम हीन लक्षण समझते हैं। हम कम-से-कम काम द्वारा जीविका चाहते हैं। हम यही सोचते हैं कि किस तरह काम से बचा जाए। यह दूषित मनोवृत्ति राष्ट्र की आत्मा में जा बैठी है और वहाँ से हटती नहीं। यदि हम इससे मुक्त नहीं होते और आज समाज से हम जितना पा रहे हैं या लेना चाहते हैं, उससे कई गुना अधिक उसे अपने कठोर श्रम से नहीं देते, तो देश आगे नहीं जा सकता और स्वराज्य सुराज्य में परिणत नहीं हो सकता।

प्रश्न— (क) देश को समृद्ध बनाने के लिए हमें क्या करना चाहिए?

(ख) कौन-सी दूषित मनोवृत्तियाँ राष्ट्र की आत्मा में जा बैठी हैं?

(ग) स्वराज्य सुराज्य में कब परिणत होगा?

(घ) हमें किस बात में रुचि नहीं है?

(ङ) उपर्युक्त गद्यांश के लिए उचित शीर्षक सुझाइए।

उत्तर— (क) देश को समृद्ध बनाने के लिए हमें श्रम का मूल्य पहचानकर कठोर श्रम करना चाहिए।

(ख) हाथों से काम करने में हमें हीनता का अनुभव होता है। हम कम-से-कम काम करने और अधिक आराम पाने के आदी हो गए हैं। आरामतलबी और कामचोरी की ये दूषित मनोवृत्तियाँ राष्ट्र की आत्मा में जा बैठी हैं।

(ग) देश में सुराज्य लाने के लिए लोगों में श्रम के प्रति आदरभाव जगाना ज़रूरी है। हमें श्रम का मूल्य पहचानना होगा और हाथों से काम करने की आदत डालनी होगी। कठोर परिश्रम करने पर ही स्वराज्य सुराज्य में परिणत होगा।

(घ) हमें अपने हाथों से काम करने में रुचि नहीं है।

(ङ) उचित शीर्षक—स्वराज्य सुराज्य कैसे होगा?

अपठित पद्यांश

अपठित गद्यांश की तरह अपठित पद्यांश भी परीक्षा में पूछे जाते हैं। कोई पद्यांश देकर परीक्षार्थियों से उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखने को कहा जाता है।

पद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए—

- दिए गए पद्यांश को एक-दो बार ध्यानपूर्वक पढ़ना चाहिए।
- कविता की पंक्तियों के अर्थ को जानना चाहिए तथा उनके भाव को ग्रहण करना चाहिए।
- पूछे गए प्रश्नों के उत्तर पद्यांश में ढूँढ़ने का प्रयास करना चाहिए।
- प्रश्नों के उत्तर पद्यांश में प्रयुक्त शब्दावली की जगह अपनी भाषा में देने चाहिए।
- प्रश्नों के उत्तर केवल पद्यांश पर आधारित हों। उनमें अपनी ओर से कोई नई बात नहीं जोड़नी चाहिए।
- उत्तर संक्षिप्त तथा सरल भाषा में दिए जाने चाहिए।

नीचे अपठित पद्यांश का एक उदाहरण प्रश्नोत्तर सहित दिया गया है, उसे ध्यानपूर्वक पढ़िए—

जिसको न अपने बन्धुओं के दु:ख-सुख का ध्यान है,
जिसको न अपने पूर्वजों की कीर्ति का कुछ ज्ञान है,
जिसको न अपनी हीनता पर शोक, खेद महान है,
जिसको नहीं खलता कभी संसार में अपमान है,
जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है,
वह नर नहीं, नर-पशु निरा है, और मृतक समान है।

प्रश्न— (क) कवि के अनुसार, हमें अपने पूर्वजों की किस बात का ज्ञान होना चाहिए?

(ख) जिसे अपने अपमान का भी बोध नहीं है, वह कैसा मनुष्य है?

(ग) कौन-सा मनुष्य पशु और मृतक-समान है?

(घ) 'अपमान' और 'अभिमान' शब्दों में से उपसर्ग और मूल शब्द अलग कीजिए।

(ङ) पद्यांश के लिए कोई उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

उत्तर— (क) कवि के अनुसार, हमें अपने पूर्वजों के यश का ज्ञान होना चाहिए।

(ख) जिसे अपने अपमान का भी बोध नहीं है, वह पशु और मृतक के समान है।

(ग) जिसे अपने गौरव का मान नहीं है और अपने देश के प्रति जिसके हृदय में अभिमान नहीं है, वह मनुष्य निरा पशु और मृतक समान है।

(घ) अपमान = अप + मान अभिमान = अभि + मान

(ङ) शीर्षक — आत्म-गौरव।

कुछ करके सीखें

1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए तथा उसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

स्त्रियों की शिक्षा का स्वरूप पुरुषों की शिक्षा के स्वरूप से अलग रहना चाहिए। कताई, बुनाई, सिलाई, कढ़ाई आदि की शिक्षा तो उन्हें दी ही जाए, किन्तु इसी के साथ उन्हें कुटीर उद्योगों में भी निपुण बनाया जाना चाहिए, जिससे कि बुरा समय आने पर वे किसी की मोहताज न रहें। स्त्रियों को शिक्षित करने से हमारा घर स्वर्ग बन सकता है। नासमझ और फूहड़ स्त्रियों से परिवार-के-परिवार तबाह हो जाते हैं। जिन घरों की स्त्रियाँ सुशिक्षित और सुसंस्कृत होती हैं, वे घर जिन्दा विश्वविद्यालय होते हैं। शिक्षा का अर्थ किताबी ज्ञान ही नहीं है और न ही अक्षरज्ञान है। वह तो जीने की कला है।

प्रश्न—(क) स्त्रियों को किस प्रकार की शिक्षा देनी चाहिए?

(ख) हमारा घर स्वर्ग कब बन सकता है?

(ग) शिक्षा का क्या अर्थ है?

(घ) जिन्दा विश्वविद्यालय किसे कहा गया है?

(ङ) उपर्युक्त गद्यखंड के लिए उचित शीर्षक सुझाइए।

2. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर उसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

धन खो जाता, श्रम करने से फिर मनुष्य है पाता,
स्वास्थ्य बिगड़ जाने पर, उपचारों से है बन जाता।
विद्या खो जाती, फिर भी पढ़ने से आ जाती,
लेकिन खो जाने से मिलती नहीं समय की थाती।

प्रश्न—(क) धन को दुबारा कैसे प्राप्त किया जा सकता है?

(i) बल से (ii) श्रम से (iii) धन से (iv) भक्ति से

(ख) बिगड़े हुए स्वास्थ्य को कैसे ठीक किया जा सकता है?

(i) उपचार से (ii) अपचार से (iii) आचार से (iv) उपकार से

(ग) 'विद्या खो जाती' का क्या अर्थ है?

(i) विद्या मनुष्य के पास से चली जाती है (ii) विद्या कहीं लुप्त हो जाती है

(iii) मनुष्य विद्या भूल जाता है (iv) मनुष्य अनपढ़ होता है

(घ) इस पद्यांश में किसके महत्त्व की बात कही गई है?

(i) धन की (ii) समय की (iii) स्वास्थ्य की (iv) विद्या की

(ङ) कौन-सी चीज़ हमें दुबारा नहीं मिल सकती?

(i) स्वास्थ्य (ii) समय (iii) धन (iv) विद्या

PERIODIC TEST Term 1

(अध्याय 1 से 5 पर आधारित)

नोट–सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

समय : .....

पूर्णांक : .....

(क) सही उत्तर पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

1. भावों तथा विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम क्या कहलाता है?
   (i) वाक्य ☐ (ii) स्वर ☐ (iii) भाषा ☐ (iv) व्यंजन ☐
2. अन्त:स्थ व्यंजन हैं—
   (i) च, छ, ज, झ ☐ (ii) क, ख, ग, घ ☐ (iii) श, ष, स, ह ☐ (iv) य, र, ल, व ☐
3. जिन शब्दों के रूप में परिवर्तन होता है, वे शब्द कहलाते हैं—
   (i) विकारी ☐ (ii) अविकारी ☐ (iii) यौगिक ☐ (iv) निरर्थक ☐
4. 'आँख' शब्द का पर्यायवाची शब्द है—
   (i) चक्षु ☐ (ii) पलक ☐ (iii) अख ☐ (iv) भौंह ☐

(ख) निम्नलिखित वाक्यों में से क्रियाविशेषण शब्द छाँटकर लिखिए—

1. तुम मेरे साथ कब चलोगी? .....
2. मीना ने कॉफी धीरे-धीरे पी। .....
3. राहुल दिल्ली अभी जाएगा। .....
4. कल्पना उधर गई है। .....

(ग) निम्नलिखित तत्सम शब्दों के तद्भव रूप लिखिए—

1. सूर्य ..... 2. नासिका .....
3. अश्रु ..... 4. दधि .....
5. जिह्वा ..... 6. गृह .....

(घ) निम्नलिखित शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखिए—

1. आकाश ....
2. कमल ....
3. नदी ....
4. सूर्य ....

(ङ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

1. क्रियाविशेषण किसे कहते हैं?
2. वचन किसे कहते हैं? इसके कितने भेद हैं?
3. अर्थ के आधार पर शब्द कितने प्रकार के होते हैं? उनके नाम लिखिए।

HALF-YEARLY Test Paper

(अध्याय 1 से 12 पर आधारित)

समय :

नोट—सभी प्रश्न अनिवार्य हैं

पूर्णांक :

(क) सही उत्तर पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

1. वचन की पहचान किसके द्वारा सरलता से की जाती है?

   (i) संज्ञा ☐ (ii) क्रिया ☐ (iii) सर्वनाम ☐ (iv) विशेषण ☐

2. माँ ने <u>भूखे को</u> खाना खिलाया—रेखांकित अंश में कारक है—

   (i) कर्ता ☐ (ii) सम्प्रदान ☐ (iii) कर्म ☐ (iv) करण ☐

3. जो सर्वनाम स्वयं के लिए प्रयुक्त होते हैं, उन्हें क्या कहते हैं?

   (i) निश्चयवाचक ☐ (ii) निजवाचक ☐ (iii) प्रश्नवाचक ☐ (iv) सम्बन्धवाचक ☐

4. 'विद्यालय' शब्द का सही सन्धि-विच्छेद है—

   (i) विद्य + आलय ☐ (ii) विद्या + आलय ☐

   (iii) विद्या + अलय ☐ (iv) विद्या + लय ☐

5. आश्चर्य विस्मय व्यक्त करने वाला अव्यय शब्द है—

   (i) सावधान! ☐ (ii) अरे! ☐ (iii) जीते रहो! ☐ (iv) ठीक है! ☐

(ख) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

1. भाषा को लिखने का ढंग .... कहलाता है।
2. दो व्यंजनों के मिलने पर जहाँ द्वित्व नहीं होता, वहाँ .... होता है।
3. जिन शब्दों के अर्थ में समानता हो, उन्हें .... कहते हैं।
4. जो संज्ञा शब्द भाव या अवस्था का बोध कराते हैं, वे .... कहलाते हैं।
5. क्रिया का मूल रूप .... कहलाता है।

(ग) निम्नलिखित शब्दों का विलोम शब्द से मिलान कीजिए—

1. उपकार	(i) लघु
2. कृतज्ञ	(ii) पुरातन
3. उत्थान	(iii) अपकार
4. गुरु	(iv) कृतघ्न
5. नूतन	(v) पतन

(ङ) निम्नलिखित अनेकार्थी शब्दों के विभिन्न अर्थ लिखिए—

1. अंक	.....	.....	.....
2. अपेक्षा	.....	.....	.....
3. कुल	.....	.....	.....
4 पद	.....	.....	.....

(च) निम्नलिखित सन्धि-विच्छेदों में सन्धि कीजिए और सन्धि का नाम भी लिखिए—

सन्धि-विच्छेद	सन्धि	सन्धि का नाम
परम + ईश्वर	.....	.....
महा + औषध	.....	.....
प्रति + एक	.....	.....
सम् + सार	.....	.....

(छ) निम्नलिखित शब्दों के लिंग बदलिए—

भवदीय	.....	पहाड़ी	.....
गुणवान	.....	सत्यवान	.....
गायक	.....	लेखिका	.....
देवी	.....	रस्सी	.....

(ज) दिए गए संज्ञा-शब्दों से विशेषण शब्द बनाइए—

परिवार	.....	राष्ट्र	.....
वर्ष	.....	सम्मान	.....
साहित्य	.....	इतिहास	.....
अन्त	.....	स्वर्ण	.....

(झ) निम्नलिखित वाक्यों को संकेतों के अनुसार क्रिया का काल बदलकर पुनः लिखिए—

1. वह रविवार को मन्दिर जाता है। (*सन्दिग्ध वर्तमानकाल*)
2. लड़के मैदान में खेल रहे थे। (*सम्भाव्य भविष्यत्काल*)
3. हम तुम्हारे घर चलेंगे। (*सामान्य वर्तमानकाल*)
4. वह दरवाजे पर खड़ा हुआ है। (*अपूर्ण भूतकाल*)

(ञ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

1. भाषा किसे कहते हैं? इसके कितने रूप होते हैं?
2. व्यक्तिवाचक संज्ञा कब जातिवाचक संज्ञा बन जाती है?
3. परसर्ग के क्या तात्पर्य है? कारक का इनसे क्या सम्बन्ध है?
4. सर्वनाम किसे कहते हैं? उदाहरण देकर समझाइए।
5. विशेषणों की रचना किन शब्दों से की जाती है?

PERIODIC TEST Term 2

(अध्याय 1 से 15 पर आधारित)

नोट–सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

समय :

पूर्णांक :

(क) सही उत्तर पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

1. 'सहचर' शब्द में उपसर्ग है—
   (i) सह ☐ (ii) स ☐ (iii) चर ☐ (iv) र ☐
2. जहाँ एक ही क्रिया का प्रयोग किया जाता है, उसे ..... क्रिया कहते हैं। ☐
   (i) संयुक्त ☐ (ii) सामान्य ☐ (iii) प्रेरणार्थक ☐ (iv) नामधातु ☐
3. 'आप आ जाते तो मैं भी चल पड़ता।'—इस वाक्य में प्रयुक्त क्रिया है— ☐
   (i) हेतुहेतुमद् भूतकाल ☐ (ii) पूर्ण भूतकाल
   (iii) सन्दिग्ध भूतकाल ☐ (iv) अपूर्ण भूतकाल ☐
4. कर्मवाच्य में क्रिया का लिंग, वचन किसके अनुसार होता है? ☐
   (i) कर्ता के ☐ (ii) कर्म के ☐ (iii) भाव के ☐ (iv) करण के ☐

(ख) कोष्ठक में दिए निर्देशानुसार वाक्य-परिवर्तन कीजिए—

1. निकिता ने नाश्ता किया और स्कूल के लिए चल पड़ी। (सरल वाक्य में)
2. अध्यापिका के डाँटते ही मंजू रोने लगी। (संयुक्त वाक्य में)
3. चालाक व्यक्ति धोखा देता है। (मिश्र वाक्य में)
4. वर्षा थम गई और इन्द्रधनुष निकल आया। (सरल वाक्य में)
5. आरती समाप्त होगी और हमें प्रसाद मिलेगा। (मिश्र वाक्य में)

(ग) निम्नलिखित शब्दों को बहुवचन रूप में बदलिए—

सन्तरा	.....	पुस्तक	.....
भाषा	.....	टोपी	.....
पंखा	.....	ऋतु	.....
कौआ	.....	मूँछ	.....

(घ) निम्नलिखित शब्दों में से उपसर्ग और मूल शब्द अलग-अलग करके लिखिए—

शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द
अत्यधिक	.....	.....
परोपकार	.....	.....
अन्तर्देशीय	.....	.....
अनावरण	.....	.....

(ङ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

1. उपसर्ग किसे कहते है? उदाहरण सहित लिखिए।
2. स्वर-सन्धि क्या है? इसके भेद बताइए।
3. विस्मयादिबोधक अव्यय किसे कहते हैं?

ANNUAL Test Paper

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं

समय

पूर्णांक

(क) सही उत्तर पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

1. भाषा का शुद्ध ज्ञान किसके द्वारा होता है?

   (i) लिपि ☐ (ii) भाषा ☐ (iii) व्याकरण ☐ (iv) वर्ण ☐

2. 'रेलगाड़ी' शब्द है—

   (i) तत्सम ☐ (ii) तद्भव ☐ (iii) देशज ☐ (iv) संकर ☐

3. सदैव बहुवचन में प्रयोग किया जाने वाला शब्द है—

   (i) घी ☐ (ii) जनता ☐ (iii) वर्षा ☐ (iv) हस्ताक्षर ☐

4. 'अपादान' कारक की विभक्ति है—

   (i) से ☐ (ii) में ☐ (iii) पर ☐ (iv) को ☐

5. 'मुझे भी थोड़ा-सा दूध दे दो।'—इस वाक्य में प्रयुक्त विशेषण का प्रकार है—

   (i) परिमाणवाचक ☐ (ii) गुणवाचक ☐ (iii) संख्यावाचक ☐ (iv) संकेतवाचक ☐

(ख) निम्नलिखित वाक्यों को कोष्ठक में दिए निर्देशानुसार बदलिए—

1. राम ने रावण को मारा। (कर्मवाच्य) ....
2. मैं बैठ नहीं सकता। (भाववाच्य) ....
3. रेनू से नाचा नहीं जाता। (कर्तृवाच्य) ....
4. मुझसे बोला नहीं जाएगा। (कर्तृवाच्य) ....
5. दादा जी व्यायाम नहीं कर सकते। (कर्तृवाच्य) ....

(ग) निम्नलिखित वाक्यों में उद्देश्य और विधेय अलग-अलग कीजिए—

1. हमारी कक्षा के सभी छात्र मैदान में खेल रहे थे। ....
2. छत्रपति शिवाजी ने कई बार मुगलों के दाँत खट्टे किए। ....
3. भारत अब उपग्रहों का निर्माण और प्रक्षेपण कर रहा है। ....
4. मेरी छोटी बहन ने पुस्तक-केन्द्र से पुस्तकें खरीदीं। ....
5. खरगोश के छोटे-छोटे बच्चे गिलहरी के साथ लुका-छिपी का खेल खेलने लगे। ....

(घ) निम्नलिखित वाक्यांशों का शब्द से मिलान कीजिए—

1. जिसका आदि न हो	(i) अमर
2. जिसे छोड़ा न जा सके	(ii) अप्रत्यक्ष
3. जो कभी न मरे	(iii) वाचाल
4. जो आँखों के सामने न हो	(iv) अनिवार्य
5. जो बहुत बोलता हो	(v) कृतज्ञ
6. उपकार को मानने वाला	(vi) अनादि

(ङ) निम्नलिखित 'मूलशब्द' और 'प्रत्यय' को मिलाकर नया 'शब्द रूप' बनाइए—

मूलशब्द		प्रत्यय	शब्द रूप
बूढ़ा	–	इया	.....
शर्म	–	इला	.....
ऊँचा	+	आई	.....
चिकना	+	आहट	.....

(च) निम्नलिखित समस्त पदों का विग्रह करके समास का नाम लिखिए—

समस्तपद	समास-विग्रह	समास का नाम
चतुर्भुज	.....	.....
माता-पिता	.....	.....
पंचतत्त्व	.....	.....
नि:सन्देह	.....	.....
राष्ट्रप्रेम	.....	.....

(छ) निम्नलिखित वाक्यों में उचित विराम-चिह्नों का प्रयोग करके वाक्य फिर से लिखिए—

1. नेताजी ने कहा था तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा
2. आह मैंने खिलौना देने की जिद क्यों की
3. अरे बड़ा मधुर भजन है कौन सुना रहा था
4. यह कोई समय है घूमने जाने का मोहित गुस्से से बोला

(ज) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

1. उद्देश्य और विधेय को उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।
2. कर्मधारय और बहुव्रीहि समास में अन्तर स्पष्ट कीजिए।
3. शब्द-निर्माण प्रक्रिया कितने प्रकार से होती है?
4. समुच्चयबोधक वाक्य में क्या काम करता है?
5. निश्चयवाचक सर्वनाम किसे कहते हैं?

An imprint of Vidya Prakashan Mandir